राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

क्रांति समय

कार्यालय ऑफिस

क्रांति समय
दैनिक समाचार में
प्रेसनोट, नोटिस, वेपार संबंधित संपर्क करें
संपर्क नं.-7490923915
ईमेल:-info.krantisamay@gmail.com

सुरत गुजरात से प्रकाशित, मुंबई, उत्तरप्रदेश, बिहार, राजस्थान, मध्यप्रदेश, उत्तरांचल, उत्तराखंड, दिल्ली, हरियाणा में प्रकाशित

सुरत-गुजरात, संस्करण शनिवार 07 नवंबर 2026 वर्ष-9,अंक-277 पृष्ठ-08 मूल्य-01 रूपये

Website : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

संक्षिप्त समाचार

ट्रम्प का साथ छोड़ सकते हैं विदेश मंत्री रूबियो वेंस भी बना रहे दूरी



वॉशिंगटन (एजेंसी)। अमेरिकी मिडटर्म चुनाव में हार के बाद राष्ट्रपति ट्रम्प की रिपब्लिकन पार्टी में मतभेद खुलकर सामने आने लगे हैं। विदेश मंत्री मार्को रूबियो ट्रम्प का साथ छोड़ने पर विचार कर रहे हैं। इकोनॉमिक टाइम्स के मुताबिक, रूबियो अपने भविष्य के विकल्पों पर चर्चा कर रहे हैं। हालांकि, उन्होंने इससे इनकार किया है। दूसरी ओर, उपराष्ट्रपति जेडी वेंस भी ट्रम्प से दूरी बना रहे हैं। वेंस 2028 के राष्ट्रपति चुनाव की तैयारी में ट्रम्प से नाराज वोटरों को अपने साथ लाने की कोशिश कर रहे हैं। हाउस में कुल 435 सीटें हैं। सभी सीटों पर चुनाव हुए। विपक्षी डेमोक्रेटिक पार्टी ने 253 और ट्रम्प की रिपब्लिकन पार्टी ने 157 सीटें जीती हैं। 25 सीटों पर अंतिम नतीजे आनी बाकी हैं। डेमोक्रेट्स को जरूरी बहुमत मिल चुका है।

मुंबई पर छाया आतंक का साया,हाईकोर्ट को बम से उड़ाने की धमकी



मुंबई (एजेंसी)। मुंबई में बम की धमकी मिलने से सुरक्षा एजेंसियों में अलर्ट हो गई हैं। बॉम्बे हाईकोर्ट को ईमेल भेजकर बम से उड़ाने की धमकी दी गई है। इस ईमेल में बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज (बीएसई), वर्ली रेसकोर्स और बॉलीवुड अभिनेता अमिताभ बच्चन के बंगले 'जलसा' को भी निशाना बनाने की बात कही गई है। दरअसल, मुंबई में ही अमिताभ बच्चन के दो बंगले हैं। एक प्रतीक्षा और दूसरा जलसा। धमकी सामने आने के बाद मुंबई पुलिस और अन्य सुरक्षा एजेंसियां सतर्क हो गई हैं। पुलिस ने ईमेल को गंभीरता से लेते हुए इसकी जांच शुरू कर दी है। फिलहाल धमकी भेजने वाले की पहचान नहीं हो पाई है।

धमकी भरे ईमेल में मुंबई की चार प्रमुख जगहों का जिक्र किया गया है। मुंबई पुलिस और दूसरी सुरक्षा एजेंसियां ईमेल भेजने वाले का पता लगाने में जुटी हैं। जांच का मुख्य मकसद यह पता करना है कि धमकी किसने भेजी और इसके पीछे क्या मंशा है। पुलिस ने फिलहाल मामले में विस्तृत जानकारी साझा नहीं की है। अधिकारियों के मुताबिक, जांच जारी है और आगे की जानकारी मिलने का इंतजार है। इससे पहले 23 अक्तूबर को भी मुंबई पुलिस को एक ईमेल मिला था। इसमें भी अभिनेता अमिताभ बच्चन के मुंबई स्थित बंगले को बम से उड़ाने की धमकी दी गई थी।

अमेरिका, जापान, कोरिया के बाजार 5 फीसदी से ज्यादा टूटे

8 महीने बाद सेंसेक्स 80,000 पार, 1000 अंक का आया उछाल

मुंबई (एजेंसी)। दुनियाभर के बाजारों में गिरावट के बीच आज सेंसेक्स 1000 अंक या 1.35 फीसदी चढ़कर 80,400 के करीब पहुंच गया है। 8 महीने बाद ये 80 हजार के पार पहुंचा है। वहीं निफ्टी में 250 अंक या 1.10 फीसदी से ज्यादा की तेजी है, ये 24,800 के स्तर पर है। कल बाजार में साल की दूसरी बड़ी बढ़त रही थी। सेंसेक्स 2009 अंक चढ़कर 79310 पर बंद हुआ था। इससे पहले 8 अप्रैल को सेंसेक्स 2,946 अंक चढ़ा था।

बाजार में तेजी की 2 वजह

विदेशी निवेशकों ने पिछले 7 दिनों में 32,210 करोड़ का बड़ा निवेश किया है, जिससे घरेलू शेयर बाजार को जबरदस्त सपोर्ट मिला है। वहीं सितंबर तिमाही के मजबूत नतीजों से सेंटिमेंट सुधरा है। रिलायंस, इंफोसिस और टीसीएस जैसी बड़ी कंपनियों के शेयरों में तेजी आई है। सेंसेक्स के टॉप 30 में शामिल कंपनियों के शेयरों में बढ़त से ही सेंसेक्स बढ़ता है। गुरुवार को इनमें से ज्यादातर कंपनियों के शेयरों में उछाल आया है। भारत के बाजार में ट्रंप की हार का भी काफी असर देखा जा रहा है।

7 दिन में 8 फीसदी से ज्यादा की तेजी आई



शेयर बाजार 7 दिन में 8 फीसदी से ज्यादा चढ़ा

शेयर बाजार में तेजी का आज लगातार सातवां दिन है। 28 अक्टूबर से लेकर 6 नवंबर के दौरान सेंसेक्स 73,246 से उछलकर 80,000 के पार पहुंच गया है। यानी ये 8 फीसदी से ज्यादा चढ़ा है।

लार्जकैप शेयरों में तेजी आगे भी रह सकती है

विदेशी निवेशकों की शुरुआती खरीदारी से बड़े शेयरों में उछाल है। विजय कुमार को उम्मीद है कि अभी बैंकिंग और फाइनेंशियल सेक्टर के दिग्गज शेयरों में और तेजी दिख सकती है। उन्होंने कहा कि लार्जकैप शेयरों में अभी और शॉर्ट कवरिंग होनी बाकी है, इसलिए बैंकिंग और फाइनेंशियल शेयरों की अगुवाई में बड़े शेयरों में आगे और रिकवरी की उम्मीद है। हालांकि विजय कुमार ने चेतावनी भी दी है कि जैसे ही बाजार ऊपर जाएगा, घरेलू निवेशक मुनाफावसूली के लिए शेयर बेच सकते हैं। इससे ऊपरी स्तरों पर बिकवाली आ सकती है।

धनतेरस पर सोना-चांदी सस्ता



सोना 3 हजार घटकर 1.41 लाख पर आया

नई दिल्ली (एजेंसी)। धनतेरस पर सोना-चांदी दोनों की कीमतों में गिरावट है। इंडिया बुलियन एंड ज्वेलर्स एसोसिएशन के मुताबिक, 10 ग्राम 24 कैरेट सोने के दाम 3,106 रुपए घटकर करीब 1.41 लाख रुपए पर आ गए हैं। एक किलो चांदी 5,437 रुपए सस्ती होकर 1.81 लाख रुपए पर आ गई है। इससे एक दिन पहले सोना 1.44 लाख और चांदी 1.87 लाख रुपए पर थी। चांदी इस साल चांदी 49 हजार रुपए सस्ती हुई है।

सोना इस साल 8 हजार महंगा और चांदी 49 हजार सस्ती

इस साल सोने-चांदी की कीमत में लगातार उतार-चढ़ाव देखने को मिल रहा है। सोना 2026 में अब तक 8 हजार रुपए महंगा हुआ है। वहीं, चांदी 49 हजार रुपए सस्ती हुई है। 31 दिसंबर 2025 को 10 ग्राम सोना 1.33 लाख रुपए था, जो अब 1.41 लाख रुपए पहुंच गया है। वहीं, चांदी 31 दिसंबर 2025 को 2.30 लाख रुपए किलो थी, जो 1.81 लाख रुपए हो गई है। इस दौरान 29 जनवरी को सोने ने 1.76 लाख रुपए और चांदी 3.86 लाख रुपए का ऑलटाइम हाई है।

बेंगलुरु में पत्नी और सास समेत ससुराल के 7 सदस्यों की हत्या

मायके जाने से नाराज था पति,पार्टी के बहाने घर बुलाया,सिलबट्टे से जान ली

बेंगलुरु (एजेंसी)। कर्नाटक के बेंगलुरु में घरेलू विवाद के चलते एक कैब ड्राइवर ने अपनी पत्नी समेत उसके परिवार के 7 लोगों की हत्या कर दी। मृतकों में 7 साल का बच्चा भी शामिल है। आरोपी की पहचान शेखर के रूप में हुई है। पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया है।

पुलिस के मुताबिक, शेखर की शादी करीब 20 साल पहले सुनीता से हुई थी। दोनों के बीच सुनीता के मायके जाने को लेकर अक्सर विवाद होता था। सुनीता की मां और भाई भी उसका साथ देते थे। इसी बात से नाराज होकर शेखर ने पूरे परिवार को खत्म करने की साजिश रची।

आरोप है कि शेखर ने पहले अपनी पत्नी सुनीता की घर में सिलबट्टे से हत्या की और शव को कपड़े में लपेटकर नंदी हिल्स के पास फेंक दिया। इसके बाद उसने सुनीता का मोबाइल बंद कर दिया और पड़ोसियों को बताया कि वह घूमने गई है। अगले दिन उसने अपने दो सालों शिवकुमार और शंकर को पार्टी के बहाने घर बुलाया और उनकी हत्या कर दी।

फारुक अब्दुल्ला बोले-नेशनल कॉन्फ्रेंस कभी नहीं टूटेगी

नाराज 25 विधायकों से मिले, ये 8 दिन से डिप्टी सीएम को हटाने की मांग पर अड़े

श्रीनगर, एजेंसी। जम्मू-कश्मीर में मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला की सरकार गिरने की अटकलों के बीच शुक्रवार को नेशनल कॉन्फ्रेंस के नाराज विधायकों ने श्रीनगर में पार्टी अध्यक्ष फारुक अब्दुल्ला के घर मीटिंग की। इसमें सीएम उमर भी मौजूद थे।

मीटिंग के बाद फारुक अब्दुल्ला ने कहा, 'नेशनल कॉन्फ्रेंस कभी नहीं टूटेगी। मैंने विधायकों की शिकायतें सुनी हैं, हम उन पर काम करेंगे। कुछ का समाधान तुरंत होगा, तो कुछ का धीरे-धीरे होगा।'नाराज विधायकों के नेता नजीर गुरेजी ने कहा, 'हमने पार्टी लीडरशिप के सामने अपनी शिकायतें रखी हैं, उन पर जल्द ध्यान दिया जाएगा। 25 विधायकों की प्रमुख मांगों में सीएम के सलाहकार नासिर सोगमी को हटाना, डिप्टी सीएम सुरिंदर चौधरी से सड़क निर्माण विभाग वापस लेना या उन्हें पद से हटाना और सरकार के लोगों पर लगे भ्रष्टाचार के आरोपों की जांच कराना शामिल है।



श्रीनगर से सांसद मेहंदी ने भी नेशनल कॉन्फ्रेंस छोड़ी

नेशनल कॉन्फ्रेंस से श्रीनगर के सांसद आगा रुहुल्लाह मेहंदी ने मंगलवार को पार्टी से इस्तीफा दे दिया था। इस दौरान उन्होंने कहा- यह आजादी का फैसला है। मैं एक शहीद की विरासत और पाक खून की नस्ल का प्रतिनिधित्व करता हूं। मैं अपनी आजादी के दस्तावेज पर हस्ताक्षर कर रहा हूं। आज दोपहर 2:40 बजे से मैं नेशनल कॉन्फ्रेंस का हिस्सा नहीं हूं। इसके बाद गुरुवार को लोकसभा स्पीकर ने आगा का इस्तीफा मंजूर कर लिया। अब वो सांसद नहीं हैं।

दिल्ली में वायु प्रदूषण पर सुप्रीम कोर्ट का तंज

उम्मीद है कि आप मौसम का आनंद ले रहे होंगे

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली-एनसीआर में वायु प्रदूषण से जुड़े स्वतः संज्ञान मामले की सुनवाई की। इस दौरान सुप्रीम कोर्ट ने प्रदूषण को लेकर तंज भी कसा। सीजेआई सूर्यकांत जस्टिस जॉयमाल्य बागची और जस्टिस वी. मोहना की पीठ ने कहा कि उम्मीद है कि आप सभी दिल्ली-एनसीआर के मौसम का आनंद ले रहे होंगे।

वरिष्ठ वकील अमिकस क्यूरी अपराजिता सिंह ने कोर्ट को बताया कि प्रदूषण का स्तर गंभीर श्रेणी के आसपास बना हुआ है। हमारी आवाज भी बैठ रही है और यह रोज 30 सिगरेट पीने जैसा है। वहीं सीजेआई सूर्यकांत ने तंज कसते हुए कहा कि हमें उम्मीद है कि आप सभी दिल्ली के मौसम का आनंद ले रहे होंगे।

अपराजिता सिंह ने कहा कि 5 नवंबर को पराली जलाने का योगदान 14 प्रतिशत था। दिल्ली पहले से



ही प्रदूषित है। पराली जलाने से स्थिति और बिगड़ जाती है। ट्रांसपोर्ट सबसे बड़ी समस्या है। हमें स्थानीय प्रदूषण और पराली जलाने की समस्या पर वास्तव में काम करने की जरूरत है। एनसीआर में ट्रांसपोर्ट, ऊर्जा, कचरा जलाना आदि जैसी कई समस्याएं हैं।

पराली जलाना बंद होना चाहिए

मुख्य न्यायाधीश ने कहा कि यहां बारिश होने की वजह से स्तर थोड़ा कम हुआ है। यह वह समय है जब किसान बुआई करेंगे... पराली जलाना तो (बंद) हो जाना चाहिए। बता दें कि दिल्ली में प्रदूषण तेजी से बढ़ रहा है और कई इलाकों में एक्यूआई का लेवल 450 के पार चला गया है, जो बेहद गंभीर श्रेणी में आता है। सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि दिवाली मनाने के साथ-साथ प्रदूषण के प्रति जागरुकता बढ़ाना भी जरूरी है। कोर्ट ने कहा कि सिर्फ पाबंदियां लगाने से समस्या हल नहीं होगी, बल्कि इससे नियमों के उल्लंघन के मामले और बढ़ सकते हैं। बेंच ने कहा कि त्योहारों के दौरान हमें अपनी पुरानी परंपराओं और रीति-रिवाजों पर फिर से गौर करने की जरूरत है। हम अपनी पुरानी परंपराओं की ओर क्यों नहीं लौटते।

2013 तहलका दुष्कर्म केस

तेजपाल को नहीं मिली राहत, कोर्ट ने सजा पर रोक लगाने से किया इनकार

नई दिल्ली (एजेंसी)। 'तहलका' के पूर्व एडिटर-इन-चीफ तरुण तेजपाल की 10 साल की जेल की सजा पर सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को रोक लगाने से इनकार कर दिया। तरुण तेजपाल को नवंबर 2013 में गोवा के एक होटल की लिफ्ट में अपनी एक जूनियर सहकर्मी के साथ बलात्कार करने का दोषी ठहराया गया था। जज एम.एम. सुंदरेश और जज प्रसन्ना बी. वराले की बेंच ने तेजपाल के ईमेल और मैसेज सहित अन्य दूसरे सबूतों पर गौर करने के बाद उनकी अर्जी खारिज कर दी। सुनवाई के दौरान बेंच का मानना था कि उनकी सजा पर रोक लगाने के लिए कोई ठोस आधार नहीं बनता है। तेजपाल ने बॉम्बे हाई कोर्ट के छह अगस्त के फैसले को चुनौती देते हुए सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया था। हाई कोर्ट ने 2021 में ट्रायल कोर्ट द्वारा तेजपाल को बरी किए जाने के फैसले को पलटते हुए उन्हें इस मामले में दोषी ठहराया था।



धनतेरस पर कारोबार धुआंधार! 1 लाख करोड़ के पार हुआ लेनदेन



नई दिल्ली (एजेंसी)। धनतेरस के मौके पर देशभर के बाजारों में रौनक देखने को मिली। सोना-चांदी खरीदने से लेकर घर की सजावट और पारंपरिक सामान लेने तक, लोग त्योहार की तैयारियों में जुटे रहे। महंगाई और कीमती धातुओं के बढ़े दाम भी लोगों के खरीदारी के उत्साह को कम नहीं कर पाए हैं। लोग भारी और महंगे गहनों के बजाय हल्के आभूषण खरीदने पर ध्यान दे रहे हैं। ऑल इंडिया ज्वैलर्स एंड गोल्डस्मिथ फेडरेशन के अनुसार, बाजार में 14 और 18 कैरेट सोने के हल्के आभूषणों की मांग बढ़ी है। कम वजन वाले गहने उन ग्राहकों के लिए विकल्प बन रहे हैं, जो बजट के अंदर रहकर धनतेरस पर सोना खरीदा।

कन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स के मुताबिक, इस धनतेरस पर देशभर में 1 लाख करोड़ रुपये से अधिक का व्यापार होने का अनुमान है। इसमें सोने और चांदी की बिक्री का हिस्सा भी काफी बड़ी भूमिका रही। संगठन के अनुसार, दोनों कीमती धातुओं का कारोबार 60 हजार करोड़ रुपये से ज्यादा का रहा। इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि महंगे दामों के बावजूद लोग त्योहार पर खरीदारी को प्राथमिकता दे रहे हैं।

कीमतों के बावजूद बाजार में उत्साह

धनतेरस पर खरीदारी को लेकर इस बार बाजार में सकारात्मक माहौल रहा। ग्राहक अपनी जरूरत और बजट के हिसाब से सामान चुन रहे हैं। कोई हल्के सोने के गहने खरीद रहा है, तो कोई चांदी के सिक्कों और सजावटी वस्तुओं को प्राथमिकता दे रहा है।

चांदी के सिक्कों और शुभ आकृतियों की भी मांग

इस बार केवल सोने के गहने ही नहीं, बल्कि चांदी से बनी चीजें भी लोगों को लुभा रही हैं। चांदी के सिक्कों, सजावटी सामान और पारंपरिक उपहारों की खरीदारी बढ़ी है। इसके अलावा मछली, कछुए और हाथी जैसी शुभ आकृतियों वाली वस्तुएं भी ग्राहकों की पसंद में शामिल हैं। धनतेरस पर इन चीजों को खरीदना कई लोग शुभ मानते हैं।

कर्मभूमि एक्सप्रेस में राजपुरा के पास लगी आग,चार बोगियां जलीं

अमृतसर से बंगाल जा रही; बचाव कार्य शुरू

पटियाला। अमृतसर से पश्चिम बंगाल जा रही कर्मभूमि एक्सप्रेस में शुक्रवार को अचानक आग लगने की घटना से यात्रियों में हड़कंप मच गया।

ट्रेन के इंजन से पांचवें डिब्बे तक धुआं निकलता दिखाई देने के बाद रेलवे प्रशासन में भी अफरातफरी मच गई। एहतियात के तौर पर ट्रेन को राजपुरा रेलवे स्टेशन पर रोक दिया गया। घटना की सूचना मिलते ही रेलवे के अधिकारियों और संबंधित कर्मचारियों को सतर्क किया गया। ट्रेन में सवार यात्रियों के बीच धुआं फैलने से दहशत का माहौल बन गया। कई यात्रियों ने अपने सामान के साथ डिब्बों से बाहर निकलने की कोशिश की। बताया जा रहा है कि राजपुरा के



नजदीक सराय बंजारा क्षेत्र में ट्रेन के चार डिब्बे आग की चपेट में आए। रेलवे प्रशासन की ओर से स्थिति को नियंत्रित करने और यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए कार्रवाई की गई। इस घटना के कारण रेल यातायात भी प्रभावित होने की आशंका है।फिलहाल आग लगने के वास्तविक कारणों को लेकर स्थिति स्पष्ट नहीं है। प्रारंभिक जानकारी के आधार पर शार्ट सर्किट अथवा तकनीकी खराबी जैसी किसी वजह की पुष्टि नहीं की जा सकती।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

झिलमिलाती झालरों में गुम होती मिट्टी के दीयों की दिवाली

(लेखक -सुनील कुमार महला)

कभी दिवाली मिट्टी के दीयों की सौंधी महक, घर में बनते पकवानों की मिठास, आँगन में उकेरे जाते मांडणों, रिश्तों के अपनत्व और लोक परंपराओं की जीवंतता का पर्व हुआ करती थी। त्योहार आने से कई दिन पहले ही घरों में तैयारियाँ शुरू हो जाती थीं। बच्चों के चेहरों पर उत्साह होता था, महिलाओं के हाथों में काम की व्यस्तता और बुजुर्गों के पास परंपराओं से जुड़ी अनगिनत स्मृतियाँ होती थीं। समय बदला, जीवनशैली बदली और दिवाली मनाने के तौर-तरीके भी बदल गए। आज बिजली की रंग-बिरंगी लड़ियाँ, आकर्षक सजावट, महँगे उपहार, मिठाइयों के सुंदर डिब्बे, पटाखों का शोर और इंटरनेट पर शुभकामनाओं की भरमार इस पर्व का हिस्सा बन चुके हैं। आधुनिकता ने त्योहार को नया स्वरूप तो दिया है, लेकिन इस चमक-दमक के बीच एक सवाल भी उठता है कि क्या हमने दिवाली की मूल आत्मा को कहीं पीछे छोड़ दिया है? दिवाली केवल अमावस्या की रात को रोशन करने का पर्व नहीं, बल्कि अंधकार पर प्रकाश, निराशा पर आशा और दूरियों पर अपनत्व की विजय का प्रतीक है। धनतेरस, रूप चौदस, दीपावली, गोवर्धन पूजा और भाई दूज जैसे पाँच पर्वों से सजा यह उत्सव हमारी सांस्कृतिक विरासत और पारिवारिक एकजुटता का परिचायक है। दुर्भाग्य से आज अनेक परिवारों में इसकी रौनक एक दिन की औपचारिकता तक सिमटती जा रही है।

दिवाली की सबसे सुंदर और विशिष्ट पहचान मिट्टी के दीये हुआ करते थे। त्योहार से कई दिन पहले बाजारों में कुम्हारों की दुकानें सज जाती थीं। बच्चे अपने माता-पिता के साथ दीये खरीदने जाते और घर लौटकर उन्हें पानी में भिगोने, सुखाने तथा व्यवस्थित करने में हाथ बँटाते थे। फिर उनमें तेल और बाती डालकर घर के कोने-कोने में जलाया जाता था। मिट्टी के इन छोटे-छोटे दीयों की टिमटिमाती लौ में केवल रोशनी नहीं, बल्कि मिट्टी से जुड़ाव, श्रम का सम्मान और अपनी परंपराओं के प्रति आत्मीयता भी समाहित होती थी। गाँवों में कुम्हार अपने चाक पर मिट्टी से दीये, कुल्हड़, खिलौने और अन्य उपयोगी वस्तुएँ बनाते थे। कई स्थानों पर किसान अनाज के बदले कुम्हारों से दीये लेते थे। यह ग्रामीण अर्थव्यवस्था और पारस्परिक सहयोग की ऐसी व्यवस्था थी, जिसमें एक परिवार की खुशियाँ दूसरे परिवार की आजीविका से जुड़ी होती थीं। आज बिजली की झालरों और सजावटी रोशनियों ने मिट्टी के दीयों का स्थान काफी हद तक ले लिया है। हम घर की सजावट पर हजारों रुपये खर्च करने से नहीं हिचकिचाते, लेकिन मिट्टी का दीया खरीदते समय उसकी कीमत पर मोलभाव करते हैं। इसका सीधा असर उन कुम्हार परिवारों पर पड़ रहा है, जिनकी पीढ़ियाँ इसी पारंपरिक व्यवसाय से जुड़ी रही हैं। ऐसे में मिट्टी के दीये खरीदना महज परंपरा निभाना नहीं, बल्कि स्थानीय कारीगरों की आजीविका, आत्मसम्मान और पारंपरिक हुनर को बचाने का छोटा लेकिन सार्थक प्रयास है।

दिवाली की तैयारियों में कभी घर की रसोई भी उत्सव का प्रमुख केंद्र हुआ करती थी। महिलाएँ कई दिन पहले से लड्डू, मठरी, शक्करपारे, नमकपारे, चकली, गुझिया और तरह-तरह के नमकीन बनाने में जुट जाती थीं। घर की रसोई से उठती घी और मसालों की खुशबू पूरे वातावरण को त्योहारमय बना देती थी। परिवार के दूसरे सदस्य भी अपने-अपने ढंग से सहयोग करते थे। कोई सामग्री तैयार करता, कोई पकवान तलने में मदद करता तो कोई उन्हें डिब्बों में सजाता था। इन पकवानों में केवल आटा, घी और चीनी नहीं, बल्कि परिवार का सामूहिक श्रम, प्रेम और अपनापन भी घुला होता था। आज समय की कमी और बदलती जीवनशैली के कारण बाजार की मिठाइयों तथा पैकेटबंद खाद्य पदार्थों पर निर्भरता बढ़ गई है। बाजार से मिठाई खरीदना गलत नहीं है, लेकिन घर में कुछ पारंपरिक पकवान बनाकर परिवार के साथ बाँटने का आनंद किसी महँगे मिठाई के डिब्बे में नहीं मिल सकता। आखिर मिठास केवल मिठाई में नहीं, बल्कि उसे बनाने, परोसने और अपनों के साथ बाँटने के भाव में भी होती है। राजस्थान की लोक संस्कृति में दिवाली की तैयारियों का विशेष महत्व रहा है। घरों की सफाई और लिपाई-पुताई के बाद आँगन में मांडणे बनाए जाते थे। रंगोली, फूलों की सजावट और पारंपरिक आकृतियाँ घर की सुंदरता में चार चाँद लगा देती थीं। मुख्य द्वार पर आम और अशोक के पत्तों के वंदनवार बाँधे जाते थे। पूजा स्थल को विशेष रूप से सजाया जाता और घर की महिलाएँ पारंपरिक रीति-रिवाजों के अनुसार लक्ष्मी पूजन की तैयारियाँ करती थीं। ग्रामीण क्षेत्रों में पशुधन को नहलाने, सजाने और उनकी पूजा करने की परंपरा भी उत्सव का अभिन्न हिस्सा रही है। महिलाएँ और लड़कियाँ घर में मेहँदी भिगोकर एक-दूसरे के हाथों पर लगाती थीं। मेहँदी का रंग गहरा होने की प्रतीक्षा में रातभर हँसी-मजाक और बातचीत का दौर चलता था। ये गतिविधियाँ केवल त्योहार की तैयारियाँ नहीं थीं, बल्कि परिवार को जोड़ने और लोक संस्कृति को अगली पीढ़ी तक पहुँचाने के सहज माध्यम थीं। आज तैयार मेहँदी, बाजार की सजावटी वस्तुओं और ऑनलाइन खरीदारी ने इन सामूहिक गतिविधियों का स्थान ले लिया है। सुविधाएँ बढ़ी हैं, लेकिन परिवार के साथ बिताए जाने वाले आत्मीय पल धीरे-धीरे कम हुए हैं। दिवाली के बदलते स्वरूप का एक चिंताजनक पक्ष पटाखों का बढ़ता शोर और प्रदूषण भी है। कुछ घंटों की आतिशबाजी के लिए बड़ी मात्रा में धन खर्च किया जाता है, जबकि इससे निकलने वाला धुआँ वायु की गुणवत्ता को प्रभावित करता है। तेज आवाज बुजुर्गों, छोटे बच्चों और ध्वनि के प्रति संवेदनशील लोगों के लिए परेशानी का कारण बनती है। पशु-पक्षी भी इस शोर से भयभीत होते हैं। त्योहार की खुशी ऐसी नहीं होनी चाहिए, जो किसी दूसरे जीव या व्यक्ति के लिए कष्ट का कारण बन जाए। हमें यह समझना होगा कि उत्सव का अर्थ केवल शोर करना और धन खर्च करना नहीं है। कम पटाखे चलाना, पर्यावरण के अनुकूल सजावट करना, ऊर्जा की बचत करना और आसपास स्वच्छता बनाए रखना जिम्मेदार नागरिक होने के साथ-साथ हरित दिवाली की दिशा में भी आवश्यक कदम हैं।

तकनीक ने भी दिवाली के स्वरूप को काफी प्रभावित किया है। इंटरनेट, फेसबुक, इंस्टाग्राम और व्हाट्सऐप के माध्यम से कुछ ही क्षणों में शुभकामना संदेश हजारों लोगों तक पहुँच जाते हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता की मदद से आकर्षक चित्र, संदेश और शुभकामना पत्र भी तैयार किए जा रहे हैं। निस्संदेह तकनीक ने दूर बैठे परिजनों और मित्रों से संपर्क आसान बनाया है, लेकिन डिजिटल संदेश आत्मीय मुलाकात का विकल्प नहीं हो सकते। किसी बुजुर्ग के पास बैठकर उनका हाल पूछना, किसी रूठे रिश्तेदार को गले लगाना, पुराने मित्र से मिलना और किसी जरूरतमंद के चेहरे पर मुस्कान लाना ही त्योहार की वास्तविक सार्थकता है। एक क्लिक से भेजी गई शुभकामना और किसी के घर जाकर दी गई आत्मीय बधाई के भाव में अंतर होता है। तकनीक संपर्क का माध्यम बन सकती है, लेकिन रिश्तों की गर्माहट मनुष्य के व्यवहार से ही कायम रहती है।

दिवाली के उत्सव में बढ़ता दिखावा और महँगाई भी विचारणीय विषय हैं। महँगे कपड़े, उपहार, सजावट और सामाजिक प्रतिष्ठा के नाम पर होने वाला अनावश्यक खर्च कई परिवारों पर आर्थिक दबाव पैदा करता है। सोशल मीडिया पर दूसरों की सजावट और उत्सव देखकर अपनी खुशियों को उनसे बड़ा दिखाने की प्रतिस्पर्धा भी बढ़ रही है। परिणामस्वरूप त्योहार कभी-कभी आनंद के बजाय आर्थिक बोझ बन जाता है। जबकि भारतीय संस्कृति में त्योहारों का मूल भाव सादगी, संतोष, सद्भाव और सामूहिक प्रसन्नता रहा है। किसी जरूरतमंद परिवार को मिठाई देना, किसी गरीब बच्चे को नए कपड़े दिलाना या किसी अकेले बुजुर्ग के साथ कुछ समय बिताना महँगे उपहारों से कहीं अधिक मूल्यवान हो सकता है। खुशियाँ जितनी बाँटी जाती हैं, उतनी ही बढ़ती हैं।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हम आधुनिकता को अपनाते हुए अपनी सांस्कृतिक जड़ों और परंपराओं को भी सँभालकर रखें। इसके लिए किसी बड़े परिवर्तन या अतिरिक्त खर्च की आवश्यकता नहीं है। इस दिवाली कुछ मिट्टी के दीये खरीदें, स्थानीय कुम्हारों को प्रोत्साहित करें, घर में पारंपरिक पकवान बनाएँ, बच्चों को मांडणों और लोक परंपराओं से परिचित करवाएँ, बुजुर्गों के साथ समय बिताएँ और किसी जरूरतमंद की सहायता करें। अगली पीढ़ी को केवल बिजली की लड़ियों, कैमरों और सोशल मीडिया पर प्रदर्शित होने वाली दिवाली नहीं, बल्कि मिट्टी के दीयों, पारिवारिक आत्मीयता, लोक संस्कृति और मानवीय संवेदनाओं से सजी दिवाली भी विरासत में मिलनी चाहिए। पुरानी परंपराओं को ज्यों का त्यों दोहराना आवश्यक नहीं, लेकिन उनमें निहित प्रेम, सहयोग, सादगी और सम्मान के मूल्यों को बचाए रखना हमारा दायित्व है।

आखिरकार, बिजली की लड़ियाँ घर रोशन कर सकती हैं, लेकिन रिश्तों में उजाला नहीं भर सकतीं। महँगे उपहार चेहरे पर क्षणिक मुस्कान ला सकते हैं, लेकिन मन को सच्ची खुशी अपनत्व से ही मिलती है। पटाखों का शोर उत्सव का एहसास करा सकता है, लेकिन किसी के मन का सन्नाटा दूर नहीं कर सकता। इसलिए इस दिवाली केवल घर नहीं, दिल भी रोशन करें। मिट्टी के दीये जलाएँ, अपनी संस्कृति सँभालें, मेहनतकश कारीगरों का सम्मान करें और उन रिश्तों को समय दें, जिन्हें आधुनिक जीवन की भागदौड़ में पीछे छोड़ आए हैं। क्योंकि दिवाली की वास्तविक सार्थकता उसकी बाहरी चमक में नहीं, बल्कि उस उजाले में है जो हमारे व्यवहार, विचारों और संवेदनाओं में दिखाई देता है। झिलमिलाती झालरों के बीच मिट्टी के दीयों की लौ बुझने न पाए, यही हमारी परंपरा, संस्कृति और आने वाली पीढ़ियों के प्रति सच्चा संकल्प होना चाहिए।

(सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार।)

संपादकीय

गिरफ्तारी में पारदर्शिता

किसी भी व्यक्ति को हिरासत में लेने और उसकी गिरफ्तारी को दर्शाने के समय को लेकर पुलिसिया कार्रवाई के बारे में अक्सर सवाल उठते रहे हैं। दरअसल, यह व्यक्ति का संवैधानिक अधिकार होने के बावजूद, इसकी अनदेखी की जाती रही है। यही वजह है कि अब इस मामले मे देश की शीर्ष अदालत को हस्तक्षेप करना पड़ा है। शीर्ष अदालत का फैसला कहता है कि किसी भी हिरासत में लिए गए व्यक्ति को मजिस्ट्रेट के सामने पेश करने की 24 घंटे की समय-सीमा, गिरफ्तारी के औपचारिक रिकॉर्ड से नहीं, बल्कि हिरासत में लिए जाने वाले पल से ही शुरू हो जाती है। सही मायने में, यह निर्णय आम भारतीय की संवैधानिक स्वतंत्रता की समयोचित पुष्टि ही है। दूसरे शब्दों में कहें तो यह फैसला एक स्पष्ट संदेश देता है कि पुलिस मौलिक अधिकारों से बचने के लिये प्रक्रियाओं में हेरफेर नहीं कर सकती है। संविधान के अनुच्छेद 22(2) के उद्देश्य से हिरासत और गिरफ्तारी के बीच किए गए बनावटी अंतर को खारिज करते हुए, सुप्रीम कोर्ट की बेंच ने एक गंभीर खामी को दूर किया है। इस खामी का लाभ उठाकर ही जांच व प्रवर्तन एजेंसियां लोगों को बिना किसी त्वरित न्यायिक निगरानी के हिरासत में रख सकती थीं। दरअसल, नशीले पदार्थों से जुड़े एक मामले में हिरासत में लिए गए चार लोगों से जुड़े इस प्रकरण ने, हिरासत में लेने और औपचारिक गिरफ्तारी के बीच 18 घंटे के अंतराल की विसंगति को उजागर किया है। जिसका कोई स्पष्ट कारण भी नहीं बताया गया था। वास्तव में गिरफ्तारी दिखाने में की गई यह देरी पुलिस को मनमाने ढंग से ताकत के इस्तेमाल और हिरासत में दुर्व्यवहार का मौका देती है। इसमें दो राय नहीं कि अक्सर आरोप लगते हैं कि गिरफ्तार व्यक्ति से मारपीट की गई और लंबी पूछताछ की गई। निस्संदेह, यह स्थिति भारत की आपराधिक न्याय प्रणाली की छवि पर एक सवालिया निशान लगाती है। हमारा संविधान किसी भी व्यक्ति को न्यायिक जांच के बगैर हिरासत में रखे जाने के खिलाफ सुरक्षा की गारंटी तो देता है, लेकिन यह सुरक्षा जांच अधिकारियों के रहमो-करम के भरोसे नहीं रह सकती है। यही वजह है कि देश की शीर्ष अदालत को दो टूक शब्दों में कहना पड़ा कि किसी को हिरासत में लिये जाने की 24 घंटे की समय सीमा में केवल मजिस्ट्रेट की अदालत तक पहुंचने में लगने वाले उचित समय को ही घटाया जा सकता है। यहां उल्लेखनीय है कि मजिस्ट्रेटों को भी स्पष्ट निर्देश दिया गया है कि वे हिरासत में लिए जाने के वास्तविक समय को ही दर्ज करें। साथ ही यह भी कि वे स्वतंत्र रूप से इस बात की जांच करें कि क्या किसी व्यक्ति को हिरासत में लिए जाने की प्रक्रिया में संवैधानिक सुरक्षा उपायों का पालन वास्तविक रूप से किया गया है। इसके साथ ही जरूरी है कि बंदी प्रत्यक्षीकरण भी स्वतंत्रता के गैर-कानूनी हनन के खिलाफ एक कानूनी प्रभावी उपाय बना ही रहना चाहिए। सही मायने में सुप्रीम कोर्ट का यह फैसला, विशेष रूप से जम्मू-कश्मीर में भी न्याय व्यवस्था के लिये एक मार्गदर्शक का कार्य करेगा। जहां अगस्त 2019 में अनुच्छेद 370 हटाए जाने के बाद के लगभग चार वर्षों में प्रिवेंटिव डिटेंशन को चुनौती देने वाली दो हजार से अधिक बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिकाएं दायर की गई थीं। इस बात में दो राय नहीं हो सकती हैं कि जब कानूनी प्रावधान के क्रियान्वयन में देरी होती है, अथवा जवाबदेही पर्याप्त नहीं होती है, तो संवैधानिक स्वतंत्रता प्रभावहीन होकर रह जाती है। निस्संदेह, किसी भी तरह के अपराध के खिलाफ मजबूत लड़ाई लड़ी जानी चाहिए, ताकि समाज में कानून का राज्य स्थापित हो सके।

नरक से मुक्ति और अकाल मृत्यु से रक्षा का पर्व है नरक चतुर्दशी

(लेखक- योगेश कुमार गोयल)

(नरक चतुर्दशी (छोटी दीवाली) पर विशेष)

कार्तिक कृष्ण पक्ष में मनाए जाने वाले पांच दिवसीय दीपोत्सव का दूसरा पर्व नरक चतुर्दशी है, जिसे छोटी दीपावली, रूप चतुर्दशी और काली चौदस के नाम से भी जाना जाता है। धनतेरस के अगले दिन मनाया जाने वाला यह पर्व धार्मिक आस्था, पौराणिक मान्यताओं और आध्यात्मिक संदेशों का अनूठा संगम है। 'नरक चतुर्दशी' नाम से ही स्पष्ट होता है कि इसका संबंध मृत्यु के देवता यमराज और नरक से मुक्ति की मान्यता से जुड़ा है। धार्मिक विश्वास है कि इस दिन यमराज की पूजा, व्रत और दीपदान करने से अकाल मृत्यु का भय दूर होता है तथा मनुष्य को नरक की यातनाओं से मुक्ति मिलती है। यह पर्व बुराई पर अच्छाई, अत्याचार पर न्याय और अंधकार पर प्रकाश की विजय का प्रतीक है। इस पर्व पर अभ्यंग स्नान का विशेष महत्व है। मान्यता है कि सूर्योदय से पूर्व शरीर पर तिल का तेल लगाकर उबटन करने और स्नान करने से रूप, सौंदर्य तथा आरोग्य की प्राप्ति होती है। इसी कारण इसे रूप चतुर्दशी भी कहा जाता है। इस दिन घरों की साफ-सफाई, दीप प्रज्वलन, हनुमान जी की पूजा और यमराज के निमित्त दीपदान करने की परंपरा भी प्रचलित है। विशेष रूप से घर के बाहर दक्षिण दिशा में दीपक जलाकर यमराज से परिवार की सुख-समृद्धि और दीर्घायु की कामना की जाती है।

इस वर्ष चतुर्दशी तिथि दो दिन रहने के कारण पर्व की तिथि को लेकर असमंजस की स्थिति है। कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी 7 नवंबर को सुबह 10 बजकर 47 मिनट से प्रारंभ होकर 8 नवंबर को सुबह 11 बजकर 27 मिनट तक रहेगी। प्रदोष काल में चतुर्दशी तिथि होने के कारण यम दीपदान, हनुमान पूजा और काली चौदस की पूजा 7 नवंबर को की जाएगी जबकि उदयातिथि के अनुसार 8 नवंबर की सुबह अभ्यंग स्नान होगा। नरक चतुर्दशी केवल धार्मिक कर्मकांड का पर्व नहीं है बल्कि जीवन से नकारात्मकता, अहंकार और बुराइयों को दूर कर सद्गुणों का प्रकाश फैलाने की प्रेरणा भी देता है। इसका संदेश है कि जिस प्रकार दीपक अंधकार को मिटाता है, उसी प्रकार सदाचार, विवेक और सकारात्मकता मनुष्य के जीवन से अज्ञान तथा विकारों के अंधकार को दूर कर सकते हैं।

'नरक चतुर्दशी' पर्व को 'नरक चौदस', 'रूप चतुर्दशी', 'काल चतुर्दशी' तथा 'छोटी दीवाली' के नाम से भी जाना जाता है। इस दिन मृत्यु के देवता यमराज और धर्मराज चित्रगुप्त का पूजन किया जाता है और यमराज से प्रार्थना की जाती है कि उनकी कृपा से हमें नरक के भय से मुक्ति मिले। इसी दिन रामभक्त हनुमान का भी जन्म हुआ था और इसी दिन वामन अवतार में भगवान विष्णु ने राजा बलि से तीन पग भूमि दान में मांगते हुए तीनों लोकों सहित बलि के शरीर को भी अपने तीन पगों में नाप लिया था। हनुमान जयंती वैसे तो चैत्र मास की पूर्णिमा को मनाई जाती है, लेकिन उत्तर भारत के कई भागों में यह दीवाली से एक दिन पहले भी मनाई जाती है। यम को मृत्यु का देवता और संयम के अधिष्ठाता देव माना गया है। नरक चतुर्दशी के दिन सूर्योदय से पहले उठकर स्नान करना शुभ माना गया है और सायंकाल के समय यम के लिए दीपदान किया जाता है। आशय यही है कि संयम-नियम से रहने वालों को मृत्यु से जरा भी भयभीत नहीं होना चाहिए। इस दिन सूर्योदय से पहले स्नान करने का आशय ही आलस्य का त्याग करने से है और इसका सीधा संदेश यही है कि संयम और नियम से रहने से उनका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और उनकी अपनी साधना ही उनकी रक्षा करेगी।

नरक चतुर्दशी के साथ भगवान श्रीकृष्ण द्वारा नरकासुर के वध की पौराणिक कथा भी जुड़ी हुई है। नरक चतुर्दशी मनाए जाने के संबंध में मान्यता है कि भगवान श्रीकृष्ण ने इसी दिन प्रागज्योतिषपुर के राजा 'नरकासुर' नामक अधर्मी राक्षस का वध किया था और ऐसा करके उन्होंने न केवल पृथ्वीवासियों को बल्कि देवताओं को भी उसके अत्याचारों से मुक्ति दिलाई थी। उसके आतंक से पृथ्वी के समस्त शूरवीर और सम्राट भी थर-थर कांपते थे। अपनी शक्ति के घमंड में चूर नरकासुर शक्ति का दुरूपयोग करते हुए स्त्रियों पर भी अत्याचार करता था। उसने 16000 मानव, देव एवं गंधर्व कन्याओं को बंदी बना रखा था। देवों और ऋषि-मुनियों के अनुरोध पर भगवान श्रीकृष्ण ने सत्यभामा के सहयोग से नरकासुर का संहार किया था और उसके बंदीगृह से 16000 कन्याओं को मुक्ति दिलाई थी। नरकासुर से मुक्ति पाने की खुशी में देवगण व पृथ्वीवासी बहुत आनंदित हुए और उन्होंने यह पर्व मनाया गया। माना जाता है कि तभी से इस पर्व को मनाए जाने की परम्परा शुरू हुई।

धनतेरस, नरक चतुर्दशी तथा दीवाली के दिन दीपक जलाए जाने के संबंध में एक मान्यता यह भी है कि इन दिनों में वामन भगवान ने अपने तीन पगों में सम्पूर्ण पृथ्वी, पाताल लोक, ब्रह्माण्ड व महादानवीर दैत्यराज बलि के शरीर को नाप लिया था और इन तीन पगों की महत्ता के कारण ही लोग यम यातना से मुक्ति पाने के उद्देश्य से तीन दिनों तक दीपक जलाते हैं तथा सुख, समृद्धि एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति हेतु मां लक्ष्मी का पूजन करते हैं। यह भी कहा जाता है कि बलि की दानवीरता से प्रभावित होकर भगवान विष्णु ने बाद में पाताल लोक का शासन बलि को ही सौंपते हुए उसे आशीर्वाद दिया था कि उसकी याद में पृथ्वीवासी लगातार तीन दिन तक हर वर्ष उनके लिए दीपदान करेंगे। नरक चतुर्दशी का संबंध स्वच्छता से भी है। इस दिन लोग अपने घरों का कूड़ा-कचरा बाहर निकालते हैं। इसके अलावा यह भी मान्यता है कि इस दिन प्रातःकाल सूर्योदय से पूर्व तेल एवं उबटन लगाकर स्नान करने से पुण्य मिलता है।

(लेखक 36 वर्षों से पत्रकारिता में सक्रिय वरिष्ठ पत्रकार और हिन्दी अकादमी दिल्ली के सौजन्य से प्रकाशित 'सागर से अंतरिक्ष तक- भारत की रक्षा क्रांति' पुस्तक के लेखक हैं)

(यह लेखक के व्य क्तिगत विचार हैं इससे संपादक का सहमत होना अ निवार्य नहीं है)

सहन करना सीखें

चिंतन मनन

व्यक्ति स्वयं ही बेचैनी का जीवन जीता है और अकारण ही जीवन में अनेक कष्टों को आमंत्रित कर लेता है। एक आदमी था। वह सदा प्रसन्न रहता था। एक दिन उसको उदास देखकर मित्र ने पूछा, मित्र! तुम सदा प्रसन्न रहते थे। तुम्हारी सारी अनुकूलताएं थीं। पर आज तुम बहुत उदास दिख रहे हो, यह क्यों? उसने कहा, मेरी प्रसन्नता गायब हो गई। आज से नहीं, बारह महीनों से वह गायब है। इसका भी कारण है। पहले इस गांव में मेरा मकान सबसे ऊंचा था। न जाने एक व्यक्ति कहां से आ टपका कि उसने मेरे मकान से भी ऊंचा मकान बना डाला। उसी दिन से मेरी प्रसन्नता समाप्त हो गई।

इसकी कोई दवा नहीं है। आयुर्वेद विज्ञान में, मेडिकल साइन्स में, साइकोलॉजी में इसकी कोई दवा नहीं है। यह साइकोसोमेटिक बीमारी भी नहीं है। इसका कोई स्पष्ट कारण नहीं बना। दूसरे की विशेषता को, दूसरे की सम्पन्नता को सहन न करना ही इसका कारण है। ऐसी बीमारी का उपाय यह है कि व्यक्ति अपनी शक्ति को बढ़ाए, तीन मंजिले मकान के स्थान पर पांच मंजिला मकान बनाने पांच मंजिले के स्थान पर सात मंजिला मकान बनाने की क्षमता को विकसित करे और अधिक कमाए, और अधिक श्रम करे। यह उसका सकारात्मक पक्ष है।

मनुष्य का दृष्टिकोण सकारात्मक कम होता है, नकारात्मक अधिक। एप्रोच नेगेटिव होने के कारण वह दुखी होता है। इससे असहिष्णुता का भाव जागता है और असहिष्णुता राहू की भांति चांद को निरंतर ग्रसित करती रहती है।

दीपावली और धनतेरस पर महालक्ष्मी की कृपाः भारतीय परिवारों की समृद्धि का आधार, बचत और निवेश

(लेखक- सनत जैन)

भारत में दीपावली केवल रोशनी और खुशियों का त्योहार नहीं है, बल्कि यह सुख, समृद्धि, स्वावलंबन और आर्थिक सुरक्षा का भी प्रतीक है। इस पर्व पर विघ्नहर्ता भगवान गणेश और धन-वैभव की देवी महालक्ष्मी की पूजा की जाती है। गणेश जी की पूजा परिवार को विघ्न-बाधाओं से मुक्त रहने की कामना के साथ की जाती है, वहीं मां की पूजा और आराधना से घर में सुख, शांति और समृद्धि बनाए रखने का आशीर्वाद मांगा जाता है। इस पूजा के पीछे भारतीय परिवारों की एक बड़ी आस्था और श्रद्धा की भावना होती है। हर परिवार खुशहाल और आर्थिक रूप से मजबूत बने। धनतेरस और दीपावली का पर्व भारतीय परिवारों में बचत और निवेश की परंपरा को जीवित रखता है। घर की साफ-सफाई से लेकर नए बर्तन, सोना, चांदी और दूसरी धातुओं की खरीद की धार्मिक एवं सामाजिक परंपरा का अपना आर्थिक और सांस्कृतिक महत्व है। अमीर हो या गरीब, हर परिवार अपनी हैसियत के अनुसार इस परंपरा का निर्वाह करता है। कोई सोने का सिक्का खरीदता है तो कोई चांदी का बर्तन अथवा तांबे-पीतल के बर्तन खरीदकर अपनी बचत को संपत्ति एवं सुरक्षित निवेश में बदलता है।

इस परंपरा का सबसे महत्वपूर्ण पहलू यह है, भारतीय परिवार सोने और चांदी को केवल आभूषण नहीं, बल्कि कठिन समय के लिए आर्थिक पूंजी मानते हैं। पिछले दस वर्षों के निवेश पर नजर डालें तो दस साल पहले सोने में एक लाख रुपये का निवेश यदि किया गया है। आज उसका बाजार मूल्य लगभग 4.79 लाख रुपये हो गया है। इसी तरह चांदी में एक लाख रुपये का निवेश बढ़कर लगभग 4.39 लाख रुपये पर पहुंच गया है। वहीं, शेयर बाजार में अच्छी कंपनी में किया गया दीर्घकालीन निवेश का मूल्य लगभग 2.83 लाख रुपये हुआ है। ये आंकड़े बताते हैं कि इस अवधि में सोने और चांदी ने निवेशकों को बेहतर प्रतिफल दिया है। हालांकि बाजार भाव में उतार-चढ़ाव के बाद भी सोने और चांदी का निवेश सबसे बेहतर निवेश माना जाता है। भारतीय परिवारों की विशेषता है, वह सोना-चांदी को आसानी से खर्च नहीं करते हैं। उसे बेचने का निर्णय तभी लेते हैं, जब परिवार किसी बड़े आर्थिक संकट में हो, दूसरा कोई विकल्प न बचे। यही कारण है कि पीढ़ियों से संचित आभूषण और धातुएं परिवारों के लिए संकट के समय बड़ी सहारा बनती रही हैं।

इस वर्ष धनतेरस पर मां लक्ष्मी का आगमन गज यानी हाथी पर हो रहा है। धार्मिक मान्यता मे इसे शुभ संकेत के रूप में देखा जा रहा है। सोने-चांदी के भाव में हाल के महीनों में कम हुए हैं। उतार-चढ़ाव के बावजूद इन धातुओं का वैश्विक स्तर पर सुरक्षित संपत्ति के रूप में निवेश का महत्व बना हुआ है। दीपावली का संदेश केवल धन अर्जित करना नहीं, बल्कि धन का सदुपयोग, नियमित बचत और भविष्य की सुरक्षा करना भी है। आज महंगाई और बेरोजगारी से जूझ रहे परिवारों के लिए यह परंपरा और अधिक प्रासंगिक हो गई है। भगवान गणेश और मां लक्ष्मी से यही प्रार्थना है, हर भारतीय परिवार के जीवन से अभाव और संकट दूर हों, सुख, शांति और समृद्धि का प्रकाश फैले। दीपावली एवं धनतेरस का यह पावन पर्व सभी भारतीय परिवारों के लिए मंगलमय हो।



Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

नियो ग्रुप ने म्यूचुअल फंड कारोबार शुरू किया

नई दिल्ली ।

नियो वेल्थ एंड एसेट मैनेजमेंट (नियो ग्रुप) ने अपनी वित्तीय सेवा पेशकश का विस्तार करने की योजना के तहत नियो म्यूचुअल फंड की शुरुआत के साथ म्यूचुअल फंड कारोबार में प्रवेश की शुक्रवार को घोषणा की। कंपनी ने बयान में कहा कि नियो म्यूचुअल फंड ने करीब 10 अनुभवी फंड प्रबंधकों को अपने साथ जोड़ा है। इन सभी ने अपनी पिछली भूमिकाओं में सामूहिक रूप से दो लाख करोड़ रुपये से अधिक की परिसंपत्तियों का प्रबंधन किया है। फंड हाउस की योजना देश में 25 से अधिक स्थानों पर अपनी मौजूदगी बनाने और म्यूचुअल फंड वितरकों, स्वतंत्र वित्तीय सलाहकारों, बैंकों तथा 'वेल्थ मैनेजर' के जरिये देशव्यापी वितरण नेटवर्क विकसित करने की है।नियो ग्रुप के पास 30 सितंबर, 2026 तक कुल करीब 1.46 लाख करोड़ रुपये की ग्राहक परिसंपत्तियां थीं।

एक दिन में मस्क-हुआंग ने गंवाई यूपी के बजट जितनी रकम

मिडटर्म नतीजों के बाद निवेशकों में भगदड़, टेस्ला और एनवीडिया के शेयर धड़ाम

नई दिल्ली ।

अमेरिकी शेयर बाजार में गुरुवार को एक बड़ा भूचाल आया, जिसने दुनिया के दो सबसे अमीर व्यक्तियों एलन मस्क और जेन्सेन हुआंग को एक ही दिन में 8.44 लाख करोड़ रुपये का भारी नुकसान पहुंचाया। यह रकम उत्तर प्रदेश के वार्षिक बजट के लगभग बराबर है। टेस्ला के एलन मस्क ने एक ही दिन में करीब 7.10 लाख करोड़ रुपये (79.7 अरब डॉलर) और एनवीडिया के जेन्सेन हुआंग ने 1.34 लाख करोड़ रुपये (15.1 अरब डॉलर) गंवा दिए। कुल 8.44 लाख करोड़ रुपये का यह नुकसान उत्तर प्रदेश के सालाना मूल बजट (9.13 लाख करोड़) के लगभग बराबर है। इस दौरान टेस्ला का शेयर 11.5 फीसदी और एनवीडिया का 9.3 फीसदी लुढ़क गया। इस गिरावट की मुख्य वजह अमेरिकी मिडटर्म चुनावों के नतीजे रहे, जहां डेमोक्रेट्स ने संसद में मजबूत नियंत्रण हासिल किया। इससे बड़े एआई डेटा सेंटरों पर कड़े नियम लगने की आशंका बढ़ी, जिसने सेमीकंडक्टर चिप सप्लायर एनवीडिया जैसी कंपनियों में ताबड़तोड़ बिकवाली को बढ़ावा दिया। इस झटके से मस्क की संपत्ति 800 अरब डॉलर से नीचे आ गई और हुआंग ब्लूमबर्ग इंडेक्स में टॉप-10 से बाहर हो गए। ओरेकल के लैरी एलिसन को भी 10.1 अरब डॉलर की चपत लगी।

वॉल स्ट्रीट का भूचाल, दिवाली मुहूर्त पर भारतीय बाजार पर पड़ेगा असर?

नैस्डैक 5.5 फीसदी टूटा, जापान-कोरिया में भी बिकवाली, एआई निवेश पर चिंता से बढ़ा वैश्विक दबाव

मुंबई ।

अमेरिका के वॉल स्ट्रीट में आई तेज गिरावट ने भारतीय निवेशकों की नींद उड़ा दी है। दिवाली पर होने वाली मुहूर्त ट्रेडिंग से ठीक पहले इस वैश्विक उथल-पुथल ने घरेलू बाजारों पर संभावित असर को लेकर चिंता बढ़ा दी है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) कंपनियों के शेयरों में भारी बिकवाली और तकनीकी क्षेत्र में निवेश पर बढ़ती आशंकाओं ने दुनियाभर के बाजारों को हिला दिया है, जिससे भारतीय निवेशक सावधानी बरतने को मजबूर हैं। इस वैश्विक माहौल का असर भारतीय शेयर बाजार की धारणा पर भी पड़ सकता है। निवेशक अब घरेलू बाजार की चाल के साथ विदेशी बाजारों के संकेतों पर नजर रखेंगे। हालांकि, रविवार, 8 नवंबर को दिवाली के अवसर पर होने वाली मुहूर्त ट्रेडिंग का रुख हमेशा की तरह उत्साहजनक रहने की उम्मीद होती है, लेकिन इस बार निवेशक विदेशी बाजारों के संकेतों पर विशेष नजर रखेंगे। निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार इक्विटी बाजार में सामान्य कारोबार दोपहर 2:20 बजे से 3:30 बजे तक होगा। ऐसे में मौजूदा वैश्विक अनिश्चितता के बीच भारतीय निवेशक मुहूर्त ट्रेडिंग में सावधानी के साथ कदम रख सकते हैं। वहीं गुरुवार को अमेरिकी शेयर बाजारों में प्रमुख सूचकांकों में बड़ी गिरावट दर्ज की गई। नैस्डैक 5.52 प्रतिशत टूट गया, जबकि एसएंडपी 500 में 4.36 प्रतिशत और डाउ जोंस में 3.44 प्रतिशत की गिरावट आई। खासकर, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और सेमीकंडक्टर कंपनियों के शेयरों पर सबसे ज्यादा दबाव देखा गया। एनवीडिया के शेयर लगभग 9.26 प्रतिशत और एएमडी के शेयर 17 प्रतिशत से अधिक गिर गए, जिससे तकनीकी क्षेत्र में बिकवाली का माहौल बना।

अमेरिकी बाजारों की इस गिरावट का असर शुक्रवार को एशियाई बाजारों पर भी दिखा। जापान का निक्केई सूचकांक 6 प्रतिशत से अधिक लुढ़क गया, वहीं दक्षिण कोरिया के कोस्पी में शुरुआती कारोबार में 8 प्रतिशत से ज्यादा की गिरावट आई, जिसके चलते बाजार को 20 मिनट के लिए रोकना पड़ा।

घरेलू शेयर बाजार में शुरुआती कारोबार में तेजी

सेंसेक्स 33 अंक चढ़कर 79,300, निफ्टी 24,400 के स्तर पर

मुंबई ।



वैश्विक बाजारों से मिले कमजोर संकेतों की वजह से भारतीय शेयर बाजार शुक्रवार को उतार-चढ़ाव भरे शुरुआती कारोबार के बाद बढ़त के साथ कारोबार करने लगे। विदेशी पूंजी के निरंतर प्रवाह और कच्चे तेल की कीमतें अपेक्षाकृत सीमित रहने से शेयर बाजार में आशावाद बढ़ा। बीएसई सेंसेक्स शुरुआती कारोबार में 33 अंक चढ़कर 79,343.06 अंक पर और एनएसई निफ्टी 52.95 अंक फिसलकर 24,477.40 अंक पर रहा। बाद में दोनों प्रमुख सूचकांकों में तेजी लौटी। सेंसेक्स 443.87 अंक की बढ़त के साथ 79,760.10 अंक पर और निफ्टी 81 अंक चढ़कर 24,612.85 अंक पर कारोबार करने लगा। सेंसेक्स में शामिल 30 कंपनियों में से महिंद्रा एंड महिंद्रा के शेयर में चार प्रतिशत से अधिक की तेजी आई। कंपनी का जुलाई-सितंबर तिमाही में एकीकृत शुद्ध लाभ 25 प्रतिशत बढ़कर 4,587.88 करोड़ रुपये रहा जिससे उसके शेयर में तेजी आई है। टाइटन, एचसीएल टेक, टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज, इन्फोसिस और भारती एयरटेल के शेयर में भी तेजी रही। वहीं, एशियन पेंट्स, पावर ग्रिड, बजाज फाइनेंस और भारत इलेक्ट्रॉनिक्स के शेयर गिरावट में रहे।

एशियाई बाजारों में दक्षिण कोरिया का कॉस्पी, जापान का निक्की 225, चीन का एसएसई कम्पोजिट और हांगकांग का हैंगसेंग काफी गिरावट के साथ कारोबार कर रहे हैं। अमेरिकी शेयर बाजार बृहस्पतिवार को भारी गिरावट के साथ बंद हुए थे। नैस्डैक कम्पोजिट 5.52 प्रतिशत लुढ़क गया, एसएंडपी 500 में 4.36 प्रतिशत की गिरावट आई और डाउ जोंस इंडस्ट्रियल एवरेज 3.44 प्रतिशत नीचे रहा।

रुपया नौ पैसे टूटकर 94.50 प्रति डॉलर पर खुला

रुपया गुरुवार को अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 94.41 पर बंद हुआ था

मुंबई ।



रुपया शुक्रवार को शुरुआती कारोबार में नौ पैसे टूटकर 94.50 प्रति डॉलर पर आ गया। विदेशी बाजारों में अमेरिकी मुद्रा की व्यापक मजबूती से निवेशकों की धारणा प्रभावित हुई है। विदेशी मुद्रा कारोबारियों ने बताया कि कच्चे तेल की कीमतों में रातोंरात आई तेजी और अमेरिकी डॉलर में सुधार से घरेलू मुद्रा पर दबाव पड़ा।अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में रुपया 94.50 प्रति डॉलर पर खुला, जो पिछले बंद भाव से नौ पैसे की गिरावट दर्शाता है। हालांकि, शुरुआती कारोबार में इसमें मामूली सुधार हुआ और यह 94.36 प्रति डॉलर के उच्च स्तर तक पहुंच गया। रुपया गुरुवार को अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 94.41 पर बंद हुआ था। इस बीच, दुनिया की छह प्रमुख मुद्राओं के मुकाबले अमेरिकी डॉलर की स्थिति दर्शाने वाला डॉलर सूचकांक 0.17 प्रतिशत की बढ़त के साथ 101.71 पर आ गया।

रॉयल एनफील्ड हिमालयन 750 जल्द होगी लॉन्च

नई दिल्ली ।

शक्तिशाली और महंगी बाइक निर्माता कंपनी रॉयल एनफील्ड ने अपनी नई हिमालयन 750 से पर्दा उठा दिया है। इसे नवंबर 2026 के आखिरी सप्ताह में आयोजित होने वाले मोटोवर्स कार्यक्रम के दौरान भारतीय बाजार में लॉन्च किए जाने की उम्मीद है।

यह मोटरसाइकिल मौजूदा हिमालयन 450 से अधिक शक्तिशाली होगी, जिसमें नया 750 सीसी इंजन और लंबी दूरी की यात्रा के अनुकूल डिजाइन व खराब रास्तों पर बेहतर प्रदर्शन के लिए खास सुविधाएं दी गई हैं। रॉयल एनफील्ड हिमालयन 750 में कंपनी ने अपनी एडवेंचर मोटरसाइकिल श्रृंखला की मजबूत बनावट को बरकरार रखा है। इसमें बड़ा ईंधन टैंक, ऊंची सीट और चौड़ा ढांचा इसे पहले से अधिक दमदार रूप देता है। इसका अगला हिस्सा हिमालयन श्रृंखला की दूसरी मोटरसाइकिलों से मिलता-जुलता है, जबकि पिछले हिस्से में हिमालयन 450 जैसी डिजाइन देखने को मिलती है। इसे दोहरे रंगों के विकल्पों में पेश किया जा सकता है। इस मोटरसाइकिल की सबसे बड़ी खासियत इसका नया 750 सीसी पैरेलल-ट्विन इंजन है। कंपनी ने अभी इसकी अधिकतम शक्ति और टॉर्क के आधिकारिक आंकड़े जारी नहीं किए हैं, लेकिन जानकारों के अनुसार, यह इंजन 55 हॉर्सपावर से अधिक की शक्ति और 60 एनएम का अधिकतम टॉर्क पैदा कर सकता है। इसके साथ छह गियर वाला गियरबॉक्स मिलने की उम्मीद है, जो राजमार्गों पर लंबी दूरी तय करने और पहाड़ी रास्तों पर बेहतर प्रदर्शन करने में मदद करेगा।

धनतेरस पर शेयर बाजार तेजी के साथ बंद

सेंसेक्स 1718, निफ्टी 493 अंक उछला

मुम्बई ।



भारतीय शेयर बाजार शुक्रवार को धनतेरस पर भारी तेजी के साथ बंद हुआ। सप्ताह के अंतिम कारोबारी दिन बाजार में ये उछाल दुनिया भर के बाजारों से मिले अच्छे संकेतों के साथ ही खरीददारी हावी रहने से आया है। इस पूरे सप्ताह बाजार में तेजी रही। इसी कारण आज भी दिन भर कारोबार के बाद 30 शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स अंत में 1,718.01 अंक बढ़कर 81,028.02 और 50 शेयरों वाला एनएसई निफ्टी 493.75 अंक बढ़कर 25,030.35 पर बंद हुआ। यह लगातार सातवां सत्र था, जब बाजार बढ़कर बंद हुआ है। इस दौरान बीएसई पर सूचीबद्ध सभी कंपनियों का बाजार पूंजीकरण 30 लाख करोड़ रुपए बढ़कर 503 लाख करोड़ रुपए पहुंच गया है1 वहीं ये 28 अक्टूबर को 473 लाख करोड़ रुपए था। आज बाजार में सबसे अधिक तेजी निजी बैंकों के शेयरों में रही। वहीं निफ्टी प्राइवेट बैंक 3.22 के शेयर भी लाभ में रहे।

इसके अलावा निफ्टी फाइनेंशियल सर्विसेज, निफ्टी कंज्यूमर ड्यूरेबल्स , निफ्टी सर्विसेज , निफ्टी कंजप्शन, निफ्टी फार्मा , निफ्टी कमोडिटीज , के शेयरों में भी तेजी रही। निफ्टी मीडिया , निफ्टी इंडिया डिफेंसऔर निफ्टी एनर्जी के शेयरों में गिरावट रही। आज मिडकैप और स्मॉलकैप शेयरों में मिलाजुला कारोबार हुआ। निफ्टी स्मॉलकैप 100 इंडेक्स 157.40 अंक गिरकर 18,975.05 और निफ्टी मिडकैप 14.25 अंक की मामूली गिरावट के साथ 60,606.65 पर बंद हुआ। सेंसेक्स पैक में केवल एक शेयर में ही गिरावट रही।

एमएंडएम, आईसीआईआई बैंक, एचडीएफसी बैंक, टाइटन, एक्सिस बैंक, कोटक महिंद्रा बैंक, टाटा स्टील, एनटीपीसी, अदाणी पोर्ट्स, सन फार्मा, एलएंडटी, अल्ट्राटेक सीमेंट, भारती एयरटेल के शेयर सबसे अधिक लाभ में रहे केवल पावरग्रिड के शेयर ही नीचे आये।

बाजार में उछाल का एक मुख्य कारण विदेशी निवेशकों की वापसी रही। वहीं इससे पहले आज सुबह बीएसई सेंसेक्स शुरुआती कारोबार में 33 अंक चढ़कर 79,343.06 अंक पर और एनएसई निफ्टी 52.95 अंक फिसलकर 24,477.40 अंक पर रहा। एशियाई बाजारों में दक्षिण कोरिया का कॉस्पी, जापान का निक्की 225, चीन का एसएसई कम्पोजिट और हांगकांग का हैंगसेंग काफी गिरावट के साथ कारोबार कर रहे हैं। अमेरिकी शेयर बाजार गुरुवार को भारी गिरावट के साथ बंद हुए थे। नैस्डैक कम्पोजिट 5.52 फीसदी लुढ़क गया, एसएंडपी 500 में 4.36 फीसदी की गिरावट आई और डाउ जोंस इंडस्ट्रियल एवरेज 3.44 फीसदी नीचे रहा।

धनतेरस पर घर बैठे खरीदें सोना-चांदी, 78 फीसदी तक की बंपर छूट के साथ

स्विगी इंस्टामार्ट और ब्लिंकइट के धमाकेदार ऑफर्स, नामी ब्रांड्स के सिक्कों पर मिल रही बंपर बचत

नई दिल्ली ।

धनतेरस पर सोना-चांदी खरीदना बेहद शुभ माना जाता है। लेकिन इस बार आपको भीड़ भरे बाजारों में धक्के खाने की जरूरत नहीं पड़ेगी। स्विगी इंस्टामार्ट और ब्लिंकइट जैसे क्विक-कॉमर्स प्लेटफॉर्म्स ने ग्राहकों के लिए एक शानदार अवसर पेश किया है, जहां आप घर बैठे ही तनिष्क, कल्याण ज्वेलर्स, मालाबार जैसे नामी ब्रांड्स के सोने-चांदी के सिक्कों पर 78 फीसदी तक की बंपर छूट का लाभ उठा सकते हैं। यह त्योहारी सीजन में ग्राहकों को सस्ती और सुविधाजनक खरीदारी का अनुभव दे रहा है। स्विगी इंस्टामार्ट पर सोने-चांदी की आकर्षक डील्स स्विगी इंस्टामार्ट ने धनतेरस को खास बनाने के लिए सोने-चांदी के सिक्कों पर जबरदस्त डील्स पेश की हैं। यहां 1 ग्राम 24 कैरेट सोने का कल्याण ज्वेलर्स फ्लावर डिजाइन सिक्का, जिसकी एमआरपी 26,000 रुपए है, 43 रुपए छूट के बाद सिर्फ 14,599 रुपए में उपलब्ध है। यह एक ग्राम सोने के लिए सबसे कम कीमतों में से एक है। इसके अलावा, मिया बाय तनिष्क का एक ग्राम लोटस गोल्ड कॉइन 24 रुपए की छूट पर 16,639 रुपए में और मालाबार का एक ग्राम लक्ष्मी गोल्ड कॉइन 27 फीसदी डिस्काउंट के साथ 15,879 रुपए में मिल रहा है। चांदी के सिक्कों में, कल्याण ज्वेलर्स का 10 ग्राम लक्ष्मी सिल्वर कॉइन 78 फीसदी की बंपर छूट के बाद मात्र 2,169 रुपए में खरीदा जा सकता है, जबकि जीवा और मालाबार के चांदी के सिक्कों पर भी शानदार ऑफर्स हैं।

ब्लिंकइट पर भी भारी छूट का मौका इसी तरह, ब्लिंकइट पर भी जोयालुक्कास, मुथूट एक्जिम और एमएमटीसी-पीएमएमपीएस जैसे प्रतिष्ठित ब्रांड्स के 24 कैरेट सोने और 999 शुद्धता वाले चांदी के सिक्कों पर 77 रुपए तक की छूट मिल रही है।

बीते एक साल में सोने की कीमतों में 13 हजार से अधिक का उछाल

नई दिल्ली ।

धनतेरस के पावन अवसर पर सोने-चांदी की खरीदारी की परंपरा के बीच इस साल उन निवेशकों के चेहरे खिले हैं जिन्होंने पिछले वर्ष इस शुभ दिन पर सोना खरीदा था। बीते एक साल में सोने की कीमतों में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई है, जिससे निवेशकों को अच्छा-खासा मुनाफा हुआ है।

उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार दिल्ली में इस वर्ष धनतेरस के आसपास 24 कैरेट सोने का दाम लगभग 1,45,650 रुपये प्रति 10 ग्राम रहा, जो पिछले साल के 1,32,278 रुपये प्रति 10 ग्राम से करीब 13,372 रुपये अधिक है। यह बढ़ोतरी निवेशकों के लिए एक सकारात्मक संकेत है, हालांकि स्थानीय बाजारों में दरों में थोड़ा अंतर हो सकता है। हालांकि, वर्ष 2026 की शुरुआत में सोने ने 1,83,000 रुपये प्रति 10 ग्राम का ऐतिहासिक उच्च स्तर भी देखा था, जिसके बाद कीमतों में 18-20 फीसदी तक की गिरावट आई। इसके बावजूद, मौजूदा दरें पिछले साल की तुलना में काफी ऊपर बनी हुई हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि सोना दीर्घकालिक निवेश के लिए एक सुरक्षित विकल्प है, पर इसकी कीमतों में निरंतर वृद्धि की कोई निश्चित गारंटी नहीं होती।

मप्र में दिवाली पर 14,000 करोड़ तक के कारोबार का अनुमान-कैट

स्वदेशी उत्पादों की मांग और स्थानीय खरीदारी से मिलेगी अर्थव्यवस्था को गति

भोपाल ।

मध्य प्रदेश में इस साल दिवाली का त्योहार राज्य के व्यापार जगत के लिए खुशियां लेकर आने वाला है। कन्फेडेरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (सीएआईटी) ने अनुमान जताया है कि इस दिवाली पर प्रदेश में 12,000 करोड़ रुपये से 14,000 करोड़ रुपये तक का रिकॉर्ड कारोबार हो सकता है। सीएआईटी के अनुसार उपभोक्ताओं की बढ़ती क्रय शक्ति, स्वदेशी उत्पादों में रुचि और स्थानीय खरीदारी को प्रोत्साहन मिलने से दिवाली से 7-10 दिन पहले बाजारों में जबरदस्त तेजी आएगी। भोपाल, इंदौर जैसे बड़े शहरों से लेकर छोटे कस्बों और ग्रामीण बाजारों तक, हर जगह शानदार बिक्री की उम्मीद है। क्षेत्रवार आकलन में कपड़ा (2,200 करोड़ रुपये), सोना-चांदी (2,000 करोड़ रुपये) और वाहन (1,700 करोड़ रुपये) प्रमुख हैं। इलेक्ट्रॉनिक्स (1,300 करोड़ रुपये) और किराना (1,100 करोड़ रुपये) में भी अच्छा व्यवसाय अपेक्षित है। पटाखों का कारोबार हालांकि पर्यावरण जागरूकता के चलते अपेक्षाकृत कम (600 करोड़ रुपये) रह सकता है। उन्होंने जनता से देश में निर्मित उत्पादों को प्राथमिकता देने और स्थानीय कारोबारियों से खरीदारी की अपील की, जिससे छोटे-मध्यम उद्यमों को मजबूती मिलेगी, रोजगार बढ़ेंगे और राज्य की अर्थव्यवस्था को नई ऊर्जा मिलेगी।

धनतेरस पर गाड़ियों की बंपर बिक्री का अनुमान

नए और पुराने वाहनों की मांग जोरदार, लेकिन ई-वाहनों की आपूर्ति में आ सकती है बाधा

नई दिल्ली ।

धनतेरस पर देश का वाहन बाजार जोरदार बिक्री की उम्मीद कर रहा है। फेडरेशन ऑफ ऑटोमोबाइल डीलर्स एसोसिएशंस (फाडा) ने दोपहिया, चारपहिया और वाणिज्यिक वाहनों सहित सभी श्रेणियों में मजबूत मांग का अनुमान जताया है, जिससे उत्सव के इस माहौल में बिक्री में तेजी आने की संभावना है। फाडा के अनुसार, समग्र बाजार धारणा सकारात्मक बनी हुई है और ग्राहकों का रुझान काफी उत्साहजनक है। हालांकि, उन्होंने इलेक्ट्रिक वाहनों की आपूर्ति में संभावित बाधाओं का जिक्र किया, जिससे कुछ श्रेणियों में डिलीवरी प्रभावित हो सकती है। छह नवंबर को धनतेरस और आठ नवंबर को दिवाली होने के कारण, यह महीना खुदरा बिक्री के लिए एक बड़ा अवसर है। फाडा के एक सर्वेक्षण में 51 फीसदी से अधिक डीलरों ने इस महीने बिक्री बढ़ने की उम्मीद जताई है। पुरानी कारों का बाजार भी पीछे नहीं है, जहां मांग आपूर्ति से अधिक बनी हुई है। कार्स24 के एक अधिकारी ने बताया कि नवरात्र में उनकी बिक्री सालाना आधार पर 58 फीसदी बढ़ी और धनतेरस पर यह सामान्य दिनों की तुलना में तीन से चार गुना होने का अनुमान है। हालांकि, फाडा ने पिछले साल की धनतेरस बिक्री से तुलना करने के प्रति आगाह किया है, जब जीएसटी दरों में कटौती और दबी हुई मांग के कारण असाधारण वृद्धि देखी गई थी। इस बार, उद्योग स्वाभाविक मजबूत मांग और सकारात्मक उपभोक्ता भावना के दम पर बिक्री में उछाल की उम्मीद कर रहा है।

वाहन खुदरा बिक्री अक्टूबर में 23.8 फीसदी घटकर 31.72 लाख इकाई रही-फाडा

त्योहारों के कैलेंडर ने बिगाड़ी अक्टूबर की वाहन बिक्री, पर जमीनी मांग मजबूत

नई दिल्ली ।

देश में अक्टूबर महीने में वाहनों की खुदरा बिक्री में सालाना आधार पर 23.8 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई है। फेडरेशन ऑफ ऑटोमोबाइल डीलर्स एसोसिएशंस (फाडा) के आंकड़ों के अनुसार, कुल 31.72 लाख से अधिक इकाइयां बिकीं। हालांकि, फाडा ने इस गिरावट को त्योहारों के कैलेंडर का परिणाम बताया है, जहां पिछले साल की तुलना में इस साल धनतेरस और दिवाली नवंबर में पड़ने के कारण बिक्री प्रभावित हुई, जबकि असल में मांग मजबूत बनी हुई है। फाडा के एक अधिकारी ने स्पष्ट किया कि अक्टूबर भारत में साल का सबसे बड़ा खुदरा बिक्री वाला महीना होता है। उन्होंने बताया कि पिछले साल अक्टूबर में नवरात्र और दीपावली दोनों एक साथ पड़े थे, साथ ही जीएसटी दरों में कटौती के बाद दबी हुई मांग भी सामने आई थी, जिससे वह महीना असाधारण रहा। इस साल नवरात्र अक्टूबर में रहे, जबकि धनतेरस और दिवाली नवंबर में शिफ्ट हो गए, जिससे आंकड़ों में गिरावट दिख रही है। अक्टूबर में दोपहिया वाहनों की खुदरा बिक्री 28.35 प्रतिशत घटकर 23.21 लाख इकाई रह गई, जबकि यात्री वाहनों की बिक्री भी 4.23 प्रतिशत फिसलकर 5.08 लाख इकाई पर आ गई। ग्रामीण क्षेत्रों में दोपहिया वाहनों की बिक्री में 33.97 प्रतिशत और शहरी क्षेत्रों में 20.77 प्रतिशत की गिरावट देखी गई। इसके विपरीत, कई सेगमेंट में शानदार प्रदर्शन देखने को मिला। वाणिज्यिक वाहनों की बिक्री 2.29 प्रतिशत बढ़कर 1.15 लाख इकाई, तिपहिया वाहनों की बिक्री 3.97 प्रतिशत बढ़कर 1.41 लाख इकाई और ट्रैक्टरों की बिक्री 3.10 प्रतिशत बढ़कर 79,285 इकाई रही। फाडा के अनुसार, वाणिज्यिक वाहन, तिपहिया और ट्रैक्टर तीनों ही सेगमेंट ने अक्टूबर में अब तक की सर्वाधिक बिक्री दर्ज की है।

अमेरिकी शेयर बाजार में गिरावट से आम आदमी का रिटायरमेंट फंड भी संकट में

डोनाल्ड ट्रंप की हार का जश्न मनाने के तुरंत बाद नैस्डैक में आई इस ऐतिहासिक गिरावट

वाशिंगटन ।

अमेरिकी शेयर बाजार में हाल ही में भारी गिरावट दर्ज की गई, जिसने न केवल एलन मस्क जैसे अरबपतियों को अरबों डॉलर का नुकसान पहुंचाया, बल्कि लाखों आम अमेरिकियों की रिटायरमेंट सेविंग्स पर भी सीधा असर डाला। डोनाल्ड ट्रंप की हार का जश्न मनाने के तुरंत बाद नैस्डैक में आई इस ऐतिहासिक गिरावट ने 401(के) नामक अमेरिकी रिटायरमेंट फंड की सुरक्षा को लेकर चिंताएं बढ़ा दी हैं। पूर्व राष्ट्रपति ट्रंप ने इस क्रैश का ठीकरा डेमोक्रेट्स पर फोड़ते हुए 401(के) फंड पर इसके प्रभाव को उजागर किया, जिससे आम नौकरीपेशा अमेरिकियों के बुढ़ापे के सहारे पर सवाल खड़े हो गए हैं।

बाजार में भूचाल और ट्रंप का वार- अमेरिकी शेयर बाजार का तकनीकी सूचकांक नैस्डैक अपने ऊपरी स्तरों से 10 फीसदी से अधिक और एक ही दिन में 6 फीसदी लुढ़क गया, जो मार्च 2020 के बाद की सबसे बड़ी एकदिवसीय गिरावट है। इस झटके से अरबपतियों की संपत्ति स्वाहा हुई, लेकिन इसका असर अमेरिका के लाखों आम नौकरीपेशा लोगों की बुढ़ापे के लिए जोड़ी गई बचत पर भी पड़ा। डोनाल्ड ट्रंप ने इस गिरावट को डेमोक्रेट्स और चुनाव नतीजों से जोड़ते हुए खास तौर पर 401(के) का जिक्र किया, जिससे यह सवाल उठा कि आम आदमी की पेंशन कैसे प्रभावित हुई। क्या है 401(द्य) और क्यों जुड़ा है बाजार से? 401(के) अमेरिका में नौकरीपेशा लोगों के लिए एक रिटायरमेंट बचत योजना है, जिसे भारत के ईपीएफ या एनपीएस के समान समझा जा सकता है। इसमें कर्मचारी अपनी मासिक सैलरी का एक हिस्सा जमा करते हैं और कई कंपनियां भी इसमें योगदान करती हैं। इस फंड की खास बात यह है कि कर्मचारी को यह पैसा शेयर बाजार से जुड़े फंड्स, बॉन्ड्स या अन्य विकल्पों में निवेश करने का विकल्प मिलता है।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

क्रिस लिन पर लगा प्रतिबंध हटा, बिग बैश लीग से करेंगे खेल में वापसी

सिडनी । कोकीन के सेवन को लेकर ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेटर क्रिस लिन पर लगा प्रतिबंध समाप्त हो गया है और ऐसे में अब वह खेल के मैदान पर वापसी के लिए तैयार हैं। लिन टी20 के एक बेहतरीन क्रिकेट हैं और अब वह बिग बैश लीग (बीबीएल) में खेलते हुए दिखेंगे। लिन पर ये प्रतिबंध जुलाई में टी20 ब्लास्ट फाइनल्स डे के दौरान लगाया गया था। वहीं प्रतिबं समाप्त होने से अब उनके प्रशंसकों को भी राहत मिली है। इससे अब उन्हें एक बार फिर लिन की आक्रामक बल्लेबाजी देखने को मिलेगी। लिन की डोपिंग जांच 18 जुलाई को इंग्लैंड में टी20 ब्लास्ट फाइनल्स के दौरान की गयी थी। उस समय वह नॉर्थम्पटनशायर स्टीलबैक्स के लिए खेल रहे थे। इस जांच के दौरान उनका सैंपल पॉजिटिव पाया गया था। जिसके बाद लिन को एक महीने के लिए निलंबित कर दिया गया था। यह घटना क्रिकेट जगत में खिलाड़ियों की व्यक्तिगत जिम्मेदारियों पर एक बार फिर बहस का विषय बन गई थी। लिन के टेस्ट में कोकीन के मेटाबोलाइट बेंजॉयलेगोनिन का एक बहुत ही कम स्तर पाया गया था। उन्होंने तुरंत अपने ऊपर लगे आरोपों को स्वीकार कर लिया था, जिसके बाद मामले की जांच की गई। जांच में यह निष्कर्ष निकाला गया कि यह प्रतिस्पर्धा के बाहर उपयोग का मामला था और इसका खेल के प्रदर्शन को बढ़ाने से कोई संबंध नहीं था।

भारतीय टीम दूसरे एकदिवसीय में भी जीत का सिलसिला बनाये रखने उतरेगी

वेलिंगटन । (एजेंसी)

भारतीय क्रिकेट टीम यहां मेजबान न्यूजीलैंड के खिलाफ शनिवार को होने वाले दूसरे एकदिवसीय मुकाबले में भी जीत के साथ ही अपनी बढ़त बढ़ाने उतरेगी। भारतीय टीम ने पहला एकदिवसीय जीतकर पांच मैचों की इस सीरीज में 1-0 की बढ़त हासिल कर ली है। भारतीय टीम के अनुभवी बल्लेबाज रोहित शर्मा के ऊपर इस मैच में रन बनाने का दबाव होगा। रोहित पहले एकदिवसीय मैच में असफल रहे थे। अर्शदीप सहित भारतीय टीम के गेंदबाजों ने पहले मैच में अच्छा प्रदर्शन किया था जिसे वह बनाये रखने का प्रयास करेंगे।

वहीं दूसरी ओर इस मैच में मेजबान न्यूजीलैंड की टीम भी जीत के साथ वापसी करना चाहेगी हालांकि उसकी राह आसान नहीं है पहले मैच में उसकी बल्लेबाजी और गेंदबाजी उम्मीद के अनुसार नहीं रही थी। इसके अलावा भारतीय टीम सीरीज में बढ़त मिलने से बुलंद हौंसले के साथ उतरेगी। कीवी टीम के लिए सकारात्मक बात ये है कि उसे घरेलू मैदान का लाभ मिलेगा।

कीवी टीम की सबसे बड़ी मुश्किल विराट कोहली पर अंकुश लगाने की रहेगी। विराट ने पहले एकदिवसीय में 74 रनों की शानदार पारी खेली थी जिसे वह फिर से फिर से अंजाम देना चाहेंगे। इस मैच में रोहित और कप्तान शुभमन गिल टीम को तेज शुरुआत देना चाहेंगे। जिससे कि मध्यक्रम क बल्लेबाज तेजी से रन बना सकें। भारतीय टीम के तेज गेंदबाजों ने पहले ही मैच में अपनी क्षमता साबित की है जिससे व बरकरार रखना चाहेंगे। अर्शदीप सिंह के अलावा युवा गुरनूर बराड़ और अंशुल कंबोज ने भी सधी हुई गेंदबाजी कर मेजबान बल्लेबाजों को खुलकर खेलने का कोई अवसर नहीं दिया था।

दूसरी ओर कीवी टीम के लिए काफी परेशानी भरी राह है। उसके प्रमुख सलामी बल्लेबाज डेवोन कॉनवे सीरीज से ही बाहर हो गये हैं जिससे उसे नुकसान हुआ है। टीम को कॉनवे के इस मैच तक फिट होने की उम्मीदें थीं। ऐसे में डेरिल मिशेल, टॉम लैथम और ग्लेन फिलिप्स को अधिक से अधिक रन बनाने होंगे। कप्तान मिशेल सेंटनर को भी अपने गेंदबाजी संयोजन को बेहतर तरीके से इस्तेमाल करना होगा। मैट हेनरी और काइल जैमीसन जैसे गेंदबाजों को शुरुआती ओवरों में ही विकेट लेने होंगे। मैदान की बात करें तो वेलिंगटन की पिच आमतौर पर तेज गेंदबाजों के लिए सहायक मानी जाती है, जहां हवा और गेंद



की स्विंग शुरुआती ओवरों में बल्लेबाजों के लिए चुनौती पेश कर सकती है। ऐसे में भारतीय बल्लेबाजों को मेजबान गेंदबाजों से सतर्क रहना होगा।

दोनो ही टीमें इस प्रकार हैं :-

भारतीय टीम - शुभमन गिल (कप्तान), रोहित शर्मा, विराट कोहली, श्रेयस अय्यर, केएल राहुल (विकेटकीपर), अक्षर पटेल, नमन धीर, अंशुल कंबोज, गुरनूर बराड़, ऋतुराज गायकवाड़, अर्शदीप सिंह, ईशान किशन (विकेटकीपर), मोहम्मद सिराज, कुलदीप यादव, औकिब नबी, ,

न्यूजीलैंड टीम - मिचेल सैंटनर (कप्तान), माइकल ब्रेसवेल, डेवोन कॉनवे, जैकब डफी, मैट हेनरी, काइल जैमीसन, टॉम लैथम (विकेटकीपर), डेरिल मिचेल, ग्लेन फिलिप्स, रचिन रवींद्र, नाथन स्मिथ, ब्लेयर टिकनर, विल यंग।

भारतीय टीम अगले साल की शुरुआत में कर सकती है बांग्लादेश का दौरा

मुम्बई । (एजेंसी)



भारतीय क्रिकेट टीम अगले साल की शुरुआत में बांग्लादेश का दौरा कर सकती है। इससे दोनो ही देशों के क्रिकेट बोर्ड के बीच जारी तनाव घट सकता है। भारतीय क्रिकेट टीम जनवरी 2027 में बांग्लादेश दौर पर तीन एकदिवसीय और तीन टी-20 मैचों की सरीज खेल सकती है। दोनो ही देशों के प्रशंसक इनके बीच क्रिकेट मुकाबलों का इंतजार कर रहे हैं। दोनो ही देशों के क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) और बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड (बीसीबी) ने अभी तक इस दौरे की आधिकारिक पुष्टि नहीं की है पर रिपोर्टों के अनुसार, दोनों बोर्डों के बीच बातचीत अंतिम चरण में है।

गौरतलब है कि यह दौरा पहले कई बार टाला जा चुका है, जिसके कारण दोनों क्रिकेट बोर्डों के बीच संबंधों में भी तनाव आया था। पिछले साल जुलाई में यह दौरा होना था पर इसे टाल दिया गया। वहीं बांग्लादेश के भारत में हुए टी-20 विश्व कप का बहिष्कार करने के बाद संबंध और खराब हुए। हालांकि, अब दोनों देशों के क्रिकेट संबंधों में सुधार दिख रहा है, बांग्लादेश बोर्ड के नये अध्यक्ष तमीम इकबाल की इसमें अहम भूमिका रही है। तमीन ने भारत दौरे को लेकर सकारात्मकता जताई है। उनके नेतृत्व में बीसीबी ने भारत के साथ क्रिकेट संबंधों को मजबूत करने की दिशा में जरुरी कदम उठाए हैं, जिससे यह प्रस्तावित दौरा संभव नजर आता है।

इस दौरे को लेकर सबसे बड़ी चुनौती भारतीय टीम के व्यस्त कार्यक्रम को समायोजित करना है। तीन से नौ जनवरी 2027 के बीच जिम्बाब्वे की टीम भारत में तीन एकदिवसीय मैच खेलने वाली है। इसके तुरंत बाद, 21 जनवरी से ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ प्रतिष्ठित बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी शुरू होनी है, जो भारत के लिए एक महत्वपूर्ण टेस्ट सीरीज है। जानकारों के अनुसार, बांग्लादेश दौरे के लिए जगह बनाने के लिए जिम्बाब्वे के खिलाफ होने वाली तीन मैच की एकदिवसीय सीरीज के कार्यक्रम में बदलाव किया जा सकता है। इस नए शेड्यूल में ऑस्ट्रेलिया सीरीज की तैयारियों को भी ध्यान में रखा जाएगा, क्योंकि टीम को टेस्ट सीरीज से पहले तैयारी का समय चाहिए होगा। बीसीसीआई फिलहाल सरकार से इस दौरे के लिए आवश्यक मंजूरी मिलने का इंतजार कर रहा है।

डेवन कॉनवे भारत के खिलाफ वनडे सीरीज से बाहर, निक केली को न्यूजीलैंड टीम में मिली जगह



नई दिल्ली। (एजेंसी)

भारत के खिलाफ चल रही वनडे सीरीज में न्यूजीलैंड को बड़ा झटका लगा है। कनकशन की वजह से पहले वनडे से बाहर रहे बाएं हाथ के सलामी बल्लेबाज डेवन कॉनवे पूरी वनडे सीरीज से बाहर हो गए हैं।

कॉनवे की वनडे सीरीज की शुरुआत से पहले कैच लेने का अभ्यास करते हुए तेज गेंदबाज मैट हेनरी के साथ टक्कर हो गई थी। टक्कर में दोनों खिलाड़ियों को चोट (कनकशन) आई थी, और दोनों ही पहले वनडे का हिस्सा नहीं थे, लेकिन हेनरी को कनकशन से छुटकारा मिल गया है, और वह शनिवार को होने वाले दूसरे वनडे के लिए उपलब्ध हैं। कॉनवे की चोट गंभीर है, और उन्हें वनडे सीरीज से बाहर होना पड़ा है।

डेवन कॉनवे की जगह न्यूजीलैंड टीम में निक केली को शामिल किया गया है। केली फिलहाल न्यूजीलैंड ए टीम में थे और भारत के खिलाफ चौथे और पांचवें वनडे के लिए न्यूजीलैंड टीम में चुने गए थे, लेकिन अब वे दूसरे और तीसरे वनडे के लिए भी टीम में हैं। केली की जगह ए टीम में बल्लेबाज डेल फिलिप्स को शामिल किया गया है।

न्यूजीलैंड ए टीम में दो और बदलाव हुए हैं। तेज गेंदबाज साइमन कीन (हैमस्ट्रिंग), बेन लिस्टर (साइड) और फ्रेजर शेट (साइड) चोट के कारण बाहर हो गए हैं।

न्यूजीलैंड क्रिकेट द्वारा जारी एक रिलीज के मुताबिक, ÷कीन और शिएट को सीरीज के दौरान पहले ही चोटें लग गई थीं, और दोनों अगले तीन से चार सप्ताह में अपनी घरेलू टीमों के लिए खेलने के लिए वापस आएंगे। लिस्टर ऑकलैंड के साथ ट्रेनिंग के दौरान दाहिने साइड में खिंचाव के लिए खेलने के लिए वापसी प्रोग्राम पर काम कर रहे हैं। गिब्सन और ब्रेट रैंडेल अब तीसरे अनऑफिशियल टेस्ट के लिए न्यूजीलैंड ए टीम के साथ रहेंगे, और डैनरू फन्र्स उनके साथ टीम में शामिल होंगे।÷

पांच वनडे मैचों की सीरीज का पहला मुकाबला जीतकर भारतीय टीम सीरीज में 1-0 से आगे है।

एशियन चैंपियंस ट्रॉफी: भारत ने जापान को 4-1 से रौंदकर रिकॉर्ड छठी बार खिताब जीता



मोहाली। (एजेंसी)

भारत ने गुरुवार को ओलंपियन बलबीर सिंह सीनियर इंटरनेशनल हॉकी स्टेडियम में खेले गए मेंस एशियन चैंपियंस ट्रॉफी हॉकी टूर्नामेंट के फाइनल में जापान को 4-1 से मात देकर खिताबी हैट्रिक लगाई। भारत इस पूरे टूर्नामेंट में अजेय रहा। यह भारत का छठा खिताब रहा। भारतीय टीम ने इससे पहले साल 2011, 2016, 2018, 2023 और 2024 में भी यह टूर्नामेंट जीता था।

मुकाबले के तीसरे मिनट जापान के काजुमासा मात्सुमोतो ने फील्ड गोल दागा, जिसके बाद शिलानंद लाकड़ा (42वें मिनट), दिलप्रीत सिंह (48वें मिनट), जुगराज सिंह (53वें मिनट) और विवेक सागर प्रसाद (54वें मिनट) ने एक-एक गोल करते हुए भारत की जीत सुनिश्चित की।

खिताबी मैच में भारत ने अच्छी शुरुआत की थी, लेकिन तीसरे ही मिनट जापान ने मात्सुमोतो के गोल से बढ़त बना ली। उन्होंने %टोमाहॉक% शॉट से गोल करके दर्शकों को हैरान कर दिया। इसके बाद जापान को 20वें मिनट में लगातार दो पेनाल्टी कॉर्नर मिले, लेकिन भारतीय डिफेंस ने जापानी कप्तान राइकी फुजीशिमा को गोल दागने से रोक दिया।

दूसरी तरफ, भारत के रमनप्रीत सिंह डिफेंस में चट्टान की तरह डटे रहे। पहले हाफ में 0-1 से पिछड़ने के बाद, भारतीय टीम ने पाला बदलने के बाद पूरी तरह से दबदबा बना लिया।

भारत को 33वें मिनट में पहला पेनाल्टी कॉर्नर मिला, लेकिन कप्तान हरमनप्रीत सिंह के फ्लिक को जापानी गोलकीपर किशो कुरोदा ने रोक दिया। जापानी टीम ने 39वें मिनट में अपना दूसरा पेनाल्टी कॉर्नर हासिल किया, लेकिन शोता यामादा की कोशिश नाकाम रही।

भारत ने जापानी डिफेंस पर दबाव बनाए रखा और 42वें मिनट में लगातार दो पेनाल्टी कॉर्नर हासिल किए। आदित्य अर्जुन लालागे के पास पर, शिलानंद लाकड़ा ने रिबाउंड से गोल करते हुए भारत को 1-1 से बराबरी पर ला दिया। इसके बाद मुकाबले के 48वें मिनट में हार्दिक के शानदार पास पर दिलप्रीत सिंह ने रिवर्स हिट लगाकर भारत को 2-1 से आगे कर दिया।

बढ़त मिलने के बाद भारतीय टीम का खेल पूरी तरह बदल गया था। 53वें मिनट में जुगराज सिंह ने पेनाल्टी कॉर्नर को गोल में तब्दील करते हुए मेजबानों को 3-1 से बढ़त दिला दी।



मुकाबले के 54वें मिनट विवेक सागर ने सर्कल के ऊपर से एक जोरदार हिट लगाकर भारत के लिए अंतिम गोल दागा। मैच खत्म होने से चंद सेकंड पहले, जापान को अपना चौथा पेनाल्टी कॉर्नर मिला, लेकिन कप्तान फुजीशिमा का शॉट बाहर चला गया और भारत ने खिताब अपने नाम कर लिया।

संक्षिप्त समाचार



रिटेंशन के लिए शीर्ष खिलाड़ियों के 40 करोड़ रुपये मांगने से आईपीएल फ्रैंचाइजी परेशान

मुम्बई। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2028 की मेगा नीलामी से पहले ही खिलाड़ियों की एक मांग से सभी टीम मालिकों की परेशानी बढ़ गयी है। एक रिपोर्ट के अनुसार कुछ शीर्ष स्तर के खिलाड़ियों ने अपनी फ्रेंचाइजी से रिटेन करने के एवज में 40 करोड़ रुपये की मांग की है। इन खिलाड़ियों ने कहा है कि अगर उनकी मांग नहीं मानी जाती है तो वे आगामी मेगा ऑक्शन में उतरेंगे। आईपीएल इतिहास में अब तक किसी खिलाड़ी ने इतनी बड़ी रिटेंशन फीस की मांग नहीं की है। इस मांग से फ्रेंचाइजी टीमों के सामने आर्थिक संकेट आ सकता है क्योंकि अन्य खिलाड़ी भी ऐसी ही मांग कर सकते हैं। यह मांग कितनी बड़ी है। इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि अभी तक आईपीएल के सबसे महंगे खिलाड़ी ऋषभ पंत ही रहे हैं और उन्हें साल 2025 की नीलामी में लखनऊ सुपर जायंट्स ने 27 करोड़ रुपये में खरीदा था। यहां तक कि 2026 के आईपीएल में भी केवल पांच खिलाड़ी - ऋषभ पंत, श्रेयस अय्यर, कैमरून ग्रीन, हेनरिक क्लासेन और विराट कोहली ही ऐसे थे, जिन्हें 20 करोड़ रुपये से अधिक मिले थे। ऐसे में जानकारों का मानना है कि खिलाड़ी नीलामी में उतरकर रिटेंशन फीस से भी बेहतर रकम हासिल करने की उम्मीद कर रहे हैं, और इसी कारण वे इतनी अधिक रकम की मांग कर रहे हैं। आने वाले समय में और खिलाड़ी भी ऐसा कर सकते हैं। गौरतलब है कि आईपीएल 2028 की मेगा नीलामी के लिए टीमों का कुल पर्स 150 करोड़ रुपये तक है। ऐसे में, यदि एक ही खिलाड़ी पर 40 करोड़ रुपये खर्च करना संभव नहीं है। इससे टीम का संतुलन बिगड़ने का खतरा है, क्योंकि बाकी के खिलाड़ियों के लिए काफी कम राशि बचेगा, जिससे एक मजबूत और संतुलित टीम नहीं बन पायेगी। यह स्थिति 2025 की मेगा ऑक्शन से पहले की याद दिलाती है, जब टीमों को अधिकतम पांच खिलाड़ियों को रिटेन करने की अनुमति मिली थी और उन पर अधिकतम 75 करोड़ रुपये की सीमा तय की गई थी। उस समय भी फ्रेंचाइजी की लगभग दो-तिहाई राशि केवल पांच खिलाड़ियों पर ही खर्च गयी थी। वहीं अब तो बात केवल एक खिलाड़ी के लिए 40 करोड़ रुपये की हो रही है। यदि ऐसा होता है, तो फ्रेंचाइजी के लिए बाकी रकम में एक प्रतिस्पर्धी टीम तैयार करना असंभव सा हो जाएगा। एक सफल आईपीएल टीम में कम से कम 4-5 मुख्य खिलाड़ी होते हैं, जिन्हें आमतौर पर बड़ी रकम मिलती है, ऐसे में 40 करोड़ का एक रिटेंशन करना संभव नहीं रहेगा इससे टीम मालिकों के लिए की मुश्किलें बढ़ती जा रही है।

रहाणे ने 24.75 करोड़ के दो लग्जरी फ्लैट खरीदे

मुम्बई ।

पूर्व भारतीय क्रिकेटर अजिंक्य रहाणे की 24.75 करोड़ रुपये की कीमत वाले दो लग्जरी फ्लैट खरीदे हैं। रहाणे ने अंतरराष्ट्रीय और लीग क्रिकेट से हाल ही में संन्यास लिया था और ऐसे में अब वह भविष्य की योजनाओं के तहत निवेश में लगे हैं। रिपोर्टों के अनुसार रहाणे ने फ्लैट खरीदे हैं। वे दादर वेस्ट के केलुस्कर रोड साउथ स्थित निर्माणाधीन ओशियाना बिल्डिंग में स्थित हैं। इस इमारत का निर्माण कोहिनूर प्लैनेट कंस्ट्रक्शंस प्राइवेट लिमिटेड नामक कंपनी कर रही है। जानकारी के अनुसार, यह सौदा हाल ही में संपन्न हुआ और रहाणे परिवार को ये फ्लेट साल 2028 तक मिल जाएंगी। दोनों अपार्टमेंट का कुल क्षेत्रफल 3,391.75 स्क्वायर फुट है। इन लग्जरी फ्लैट्स के साथ 6 कार पार्किंग की सुविधा भी उपलब्ध है।इनमें से एक फ्लैट 1,913.41 वर्गफुट का है, जिसकी अनुमानित कीमत लगभग 14 करोड़ रुपये है। दूसरा फ्लैट 1,478.34 वर्गफुट का है और इसकी कीमत लगभग 13.97 करोड़ रुपये बताई जा रही है। इन दोनों सौदों के लिए लगभग 1.23 करोड़ रुपये की स्टांप ड्यूटी का भुगतान किया गया है। गौरतलब है कि रहाणे ने अपने करियर में भारतीय टीम की ओर से तीनों प्रारूपों में खेला है।

अंडर-19 एशिया कप: सहवाग और रायचंदानी ने जड़े नाबाद अर्धशतक, भारत ने नेपाल को 10 विकेट से रौंदा

मस्कट। (एजेंसी)

मेंस अंडर-19 एशिया कप 2026 में शुक्रवार को सलामी जोड़ी के रूप में आर्यवीर सहवाग और कप्तान लक्ष्य रायचंदानी ने नाबाद अर्धशतक जड़े, जिसके दम पर भारत ने नेपाल को 10 विकेट से करारी शिकस्त दी।

शुक्रवार को अल अमरात क्रिकेट ग्राउंड में 129 रनों के आसान लक्ष्य का पीछा करते हुए, आर्यवीर और रायचंदानी ने भारत को सिर्फ 19.1 ओवर में ही जीत दिला दी। इससे पहले, तेज गेंदबाज ईशान सूद ने तीन विकेट चटकाए, जिसकी बदौलत नेपाल की पूरी टीम 42.3 ओवर में 128 रनों पर सिमट गई।

पिच पर घास की हल्की परत थी, जिस पर पहले गेंदबाजी करने का फैसला लेते हुए सूद ने अपने शुरुआती 6 ओवरों के स्पेल में गेंद को दोनों तरफ स्विंग कराया और कई बार बल्लेबाजों को छकाया। सूद ने तीन विकेट लिए, जिससे नेपाल के बल्लेबाज रन बनाने के लिए संघर्ष करते नजर आए। सूद ने लगातार 10 ओवर गेंदबाजी की, जिसमें 4 मेडन ओवर शामिल रहे और उन्होंने 18 रन देकर 3 विकेट लिए।

शुरुआती झटकों के बाद दर्श सोनार (93 गेंदों में 43 रन) ने पारी को संभाला। उन्होंने नीरज यादव के साथ 24 और आशीष के साथ 43 रनों की साझेदारी करते हुए नेपाल को 100 रनों के पार पहुंचाया। आशीष और दर्श की साझेदारी टूटने के बाद नेपाल का निचला क्रम ताश के पत्तों की तरह ढह गया। बाएं हाथ के स्पिनर अर्जुन राजपूत ने 3 विकेट लिए, जबकि यशवीर गौड़ ने 2 विकेट चटकाए, जिससे नेपाल की टीम 128 रनों पर ऑल आउट हो गई।

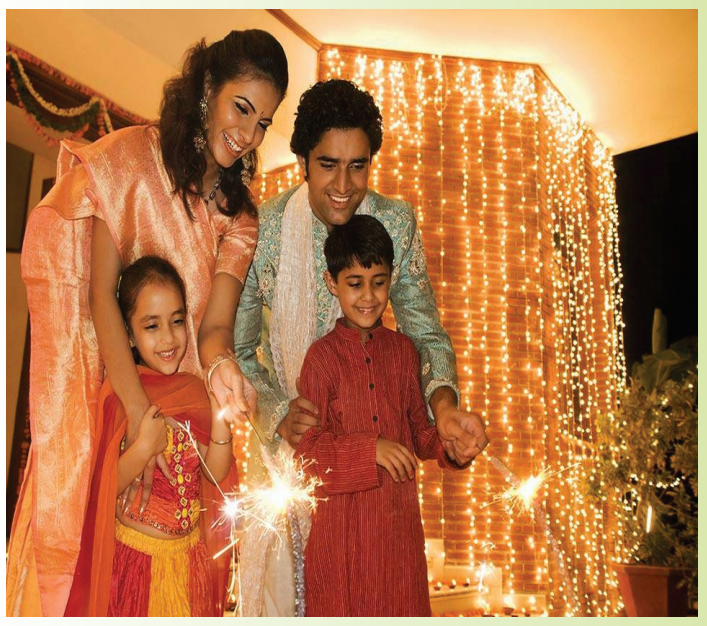
जब भारत ने लक्ष्य का पीछा करना शुरू किया, तब तक नई गेंद ज्यादा स्विंग नहीं हो रही थी। आर्यवीर और रायचंदानी ने शुरुआती कुछ ओवर संभलकर खेले और फिर नियमित अंतराल पर बाउंड्री लगाना शुरू कर दिया। पूर्व भारतीय ओपनर वीरेंद्र सहवाग के बेटे आर्यवीर ने नेपाल के स्पिनर्स को खास तौर पर निशाना बनाया।

उन्होंने कई बार क्रीज से बाहर निकलकर गेंद को हवा में खेला और सिर्फ 34 गेंदों में अपना अर्धशतक पूरा किया। रायचंदानी स्ट्राइक रोटेट करने में संतुष्ट थे, जबकि आर्यवीर ने आक्रामक रुख अपनाया और बाद में 59 गेंदों में अपना अर्धशतक पूरा किया।

185 गेंदें शेष रहते मिली इस शानदार जीत के साथ, भारत दो अंकों और 4.170 के नेट रन रेट के साथ ग्रुप ए में शीर्ष पर पहुंच गया है। रविवार को ग्रुप ए के अपने दूसरे मुकाबले में भारत का सामना अपने चिर-प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान से होगा।



Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1



आतिशबाजी के समय बच्चों का रखें ध्यान

बच्चों को आतिशबाजी और पटाखे के कारण दीपावली का साल भर से इंतजार रहता है। पटाखे जलाने के दौरान बच्चों को जो खुशी मिलती है उसका कहना ही क्या। इस दौरा उनके साथ बड़े भी शामिल हो जाते हैं। उमंग और उत्साह के इस पर्व के दौरान सावधानी रखनी भी जरुरी है क्योंकि थोड़ी सी लापरवाही भी भारी पड़ सकती है। इसलिए पटाखे जलाने के दौरान कुछ बातों का ध्यान रखें और और सुरक्षित दीपावली मनाएं। इन दिनों की जा रही रौशनी के पहले बल्ब और तार को ठीक से जांचे-परखे लें। इनसे बच्चों को करेंट लगने का खतरा रहता है।

पटाखे खरीदते समय हमेशा क्वॉलिटी का ध्यान रखें। सामान्य पटाखे की जगह ग्रीन पटाखों का इस्तेमाल कर सकते है। दिवाली से पहले केंद्र सरकार द्वारा इन्हें जारी किया गया है इसमें अनार, पेंसिल, चकरी, फुलझड़ी व सुतली बम शामिल है।

घर में पटाखे ऐसी जगह पर रखें, जो बच्चों की पहुंच से दूर हों।

ऊपर की मंजिल पर रहने वाले बच्चों को भूलकर भी बालकनी से नीचे पटाखे जलाकर नहीं फेंकने चाहिए। वाहनों पर जलते पटाखे फेंकने जैसा मजाक भी नहीं करना चाहिए। इससे हादसों का खतरा रहता है। आतिशबाजी चलाते वक्त बच्चों को पटाखों से निश्चित दूरी बनाए रखने के बारे में समझाएं। उन्हें बताएं कि वे पटाखों को झुककर न जलाएं। नवजात शिशु और छोटे बच्चों के आसपास तेज आवाज वाले पटाखे न जलाएं। बच्चों को पटाखे जेब में डालकर घूमने न दें, क्योंकि पटाखों का जहरीला मसाला हाथों में लग जाने से त्वचा को नुकसान हो सकता है। पटाखे चलाते समय सूती और चुस्त कपड़े पहनें। ढीले, झालरों वाले और जरुरत से ज्यादा लंबी आस्तीन के कपड़े नहीं पहनें।

इसके साथ ही पानी से भरी एक बाल्टी रखें जिसमें जली हुई फुलझड़ी व आदि डाल दें।

किसी भी प्रकार के प्राथमिक उपचार के लिए जलने पर लगायी जाने वाली दवा भी रखें। पटाखे जलाते समय पैरों में चप्पल आदि पहनी होनी चाहिये क्योंकि ऐसा नहीं होने पर किसी भी जले हुए पटाखें से पैर जल सकता है।

धूमधाम से मनाएं दिवाली, आतिशबाजी छुड़ाने पर ध्यान रखें ये बातें

देवी लक्ष्मी की पूजा करते हैं। रंगोली बनाते हैं और सभी दोस्तों और रिश्तेदारों को शुभकामनाएं देते हैं। मिठाइयां बांटते हैं और पटाखे जलाते हैं। पटाखे जलाते समय हमें अपनी और अपनों की सुरक्षा का ध्यान भी रखना चाहिए, क्योंकि जरा सी लापरवाही न सिर्फ आंखों में चोट का कारण बन सकती है, साथ ही पटाखों से निकलने वाले प्रदूषण के कारण भी आंखों को दीर्घकालिक क्षति का खतरा रहता है। विशेषकर बच्चों में इस तरह के जोखिम अधिक देखे जाते रहे हैं।

यद्यपि पटाखों को जलाना निषिद्ध है और विशेषज्ञों की दृष्टि से उचित नहीं है। पटाखे न केवल पर्यावरण को प्रदूषित करता है बल्कि ध्वनि प्रदूषण का कारण बनता है और हाथ और आंखों की चोटों के लिए जिम्मेदार है। अगर आप पटाखों या दीयों का उपयोग कर रहे हैं तो हाथ और आंखों की चोटों को रोकने के लिए अत्यधिक सावधानी बरतें।

खुले स्थानों पर ही जलाएं पटाखें : कोशिश करें कि पटाखों को दूर और खुले स्थानों पर ही जलाएं। पटाखों के एकदम नजदीक जाने से बचें। पटाखों को अपने चेहरे को तो बहुत ही दूर रखें। अगर कोई पटाखा न फूटे तो उसके पास जाकर उसे हाथ से न छूएं और न ही हाथ से उठाएं। हो सकता है कि वो पटाखा आप के हाथ में ही फट जाए। बच्चों को अकेले पटाखे जलाने के लिए ना भेजें।

आंखों को पहुंच सकता है नुकसान : आंखों में कट, सुपरफिशियल एब्रेशन, ग्लोब इंज्योरी, केमिकल एण्ड थर्मल बर्न हो सकता है। अगर आप को आंखों में दर्द, लाल होना, सूजन, जलन, आंख खोलने और बंद करने में परेशानी या फिर दिखाई न देना जैसी समस्याएं हो रही है तो तुरंत नेत्र चिकित्सक के पास जाना चाहिए।

पटाखों को कभी ना जलाएं टिन या शीशे की बोतल में : अतिशबाजी से सबसे ज्यादा क्षति तब होती है जब इन पटाखों को टिन या शीशे की बोतल में रखकर जलाया जाता है ताकि ज्यादा शोर हो, लेकिन कभी भी आसपास खड़े लोगों को नुकसान पहुंच सकता है इसलिए न ऐसा करे और न ही किसी को ऐसा करने दें। पटाखों के अंदर से निकला हुआ कार्बन और अन्य विषाक्त पदार्थ आंखों के उतकों, नसों और अन्य मुलायम लिगामेंट्स को क्षति पहुचा सकते हैं। बोतल में जलाए जाने वाले राकेट लोगों के चेहरों पर उड़कर लग जाते हैं जिसके कारण आंखों में चोट के सबसे ज्यादा मामले देखे जाते हैं। पटाखों के नजदीक से फटने से आंखों की रोशनी भी जा सकती है।

कान्टैक्ट लेंस पहनने वाले रखें ध्यान : कान्टैक्ट लेंस पहनते वाले लोगों को दिवाली में विशेष सावधानी बरतनी चाहिए। पटाखों को जलाने से पहले कान्टैक्ट लेंस निकाल लेना चाहिए। कान्टैक्ट लेंस की जगह चश्मा पहनकर रखें, नहीं तो पटाखों और दीया की गर्मी के कारण कान्टैक्ट लेंस आंखों में जलन पैदा कर सकते हैं।

आपात स्थिति में क्या करें : आपात स्थिति में अपने आप कोई उपचार ना करें। चोटिल भाग को न छेड़ें और न ही आंखों को मलें। अगर ये सुपरफिशियल इंज्युरी है तो आंखों को साफ पानी से धो लें। अगर आंखों से खून निकल रहा हो, दर्द हो या फिर साफ दिखाई न दे तो आंखों को ढंक लें और तुरंत किसी नेत्र विशेषज्ञ के पास ले जाएं। किसी भी आंख की चोट को मामूली न समझें क्योंकि छोटी सी चोट भी आंखों की दृष्टि छीन सकती है।





चीन से जुड़ा है पटाखों का इतिहास

दिवाली आते ही अब एक बार फिर से पटाखों की विस्फोटक चर्चा शुरू हो गई है। कुछ लोग पटाखें जलाने के पक्ष में रहते हैं तो कुछ इसे पर्यावरण और स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचाने वाला बताकर आतिशबाजी के खिलाफ हैं। किसी भी मुद्दे पर इस तरह की सहमति और सहमति चलती रहेगी, यह आम बात है, लेकिन इस बीच यह जानना दिलचस्प होगा कि आखिर पटाखों या आतिशबाजी का इतिहास क्या है। रिपोर्ट के मुताबिक पटाखों का इतिहास चीन से जुड़ा है, करीब 2200 साल पहले चीन के लुइयांग शहर में पटाखें जलाए गए थे। तब उनका आकार और तरीका ऐसा नहीं था, जैसा आज होता है। ये एक तरह की बांस की छड़ियां होती थीं, जिन्हें आग में जलाने से धमाका होता था। बाद में चीनी नागरिकों ने बांस की छड़ियों में बारुद भरकर पटाखें बनाए, जिन्हें हैंडमेड पटाखे कहा जाता है। इसके बाद बांस के बजाए कागज का इस्तेमाल किया जाने लगा।

यह भी कहा जाता है कि करीब 500 साल पहले एक शहजादी की शादी में आतिशबाजी की गई थी। इस दौरान कहा जाता है कि करीब 80 हजार के पटाखे जलाए गए थे। हालांकि इसमें कितने सच्चाई है यह किसी को नहीं पता, लेकिन अलग अलग रिपोर्ट से यही तथ्य उभरकर सामने आते हैं। चीन के बाद पटाखें यूरोप और अरब देशों में लोकप्रिय होने लगे। यहां कुछ खास मौकों पर या फिर अपनी जनता को खुश करने के लिए उस वक्त के राजा-महाराजा और शाषक आतिशबाजी करने लगे। वहीं बाद में अमेरिका की आजादी के मौके पर बड़े पैमाने पर आतिशबाजी की गई।

तमाम देशों की यात्रा करते हुए करीब 1400 या 1500 ईसवीं में इतिहास में पटाखों और आतिशबाजी का जिक्र मिलता है। जो अलग-अलग उत्सवों और शादियों आदि में किया जाता रहा है। मध्य युग में आतिशबाजी राजशाही परिवारों का अभिन्न हिस्सा था। बाद में धीरे-धीरे यह रौशनी के पर्व दिवाली का भी हिस्सा बन गया। और इतना प्रचलित हुआ कि आज तक हर छोटे बड़े उत्सव और आयोजन में आतिशबाजी की जाती है। हालांकि अब धीरे-धीरे ग्रीन पटाखों का चलन भी हो चला है। जानते हैं कितने फायदेमंद हैं ग्रीन पटाखें।

ग्रीन पटाखे

ग्रीन पटाखों को खास तरह से तैयार किया जाता है और माना जाता है कि इससे प्रदूषण काफी कम होता है। इन पटाखों से 30-40 फीसदी तक प्रदूषण को कम किया जाता है। इन पटाखों में वायु प्रदूषण को बढ़ावा देने वाले नुकसानदायक कैमिकल नहीं होते हैं। ग्रीन पटाखों के लिए कहा जाता है कि इसमें एल्युमिनियम, बैरियम, पौटेशियम नाइट्रेट और कार्बन का इस्तेमाल नहीं किया जाता या फिर बहुत कम मात्रा में किया जाता है। इससे वायु प्रदूषण को बढ़ने से रोका जा सकता है। ग्रीन पटाखे दिखने में सामान्य पटाखों की तरह ही होते हैं और ग्रीन पटाखों की कैटेगरी फुलझड़ी, फ्लॉवर पॉट, स्काईशॉट जैसे सभी तरह के पटाखे मिलते हैं। इन्हें भी माचिस की तरह जलाया जाता है, इसके अलावा इनमें खुशबू और वाटर पटाखे भी जाते हैं, जिन्हें अलग तरह से जलाया जाता है। इन पटाखों से रोशन भी होती है। ये सामान्य पटखों वाला फील देते हैं। बस ये पर्यावरण के अनुकूल होते हैं। इन पटाखों को जलाने पर धुआं निकलता है और इसकी मात्रा कम होती है। हालांकि ये पटाखे सामान्य पटाखों से थोड़े महंगे होते हैं। जहां सामान्य पटाखों के लिए 250 रुपए तक खर्च करना पड़ता है, वहीं ग्रीन पटाखों के लिए 400 रुपये से ज्यादा खर्च करना पड़ सकता है।

> पटाखों का इतिहास चीन से जुड़ा है, करीब 2200 साल पहले चीन के लुइयांग शहर में पटाखें जलाए गए थे। तब उनका आकार और तरीका ऐसा नहीं था, जैसा आज होता है। ये एक तरह की बांस की छड़ियां होती थीं, जिन्हें आग में जलाने से धमाका होता था। बाद में चीनी नागरिकों ने बांस की छड़ियों में बारुद भरकर पटाखें बनाए, जिन्हें हैंडमेड पटाखे कहा जाता है। इसके बाद बांस के बजाए कागज का इस्तेमाल किया जाने लगा।

ग्रीन पटाखे क्या होते हैं किस तरह केमिकलयुक्त पटाखों से है अलग

बढ़ते वायु प्रदूषण के कारण देश में कुछ जगहों पर पटाखे पूरी तरह से बैन कर दिए गए हैं तो कहीं पर सीमित मात्रा में जलाने की अनुमति दी जा रही है। पर्यावरण को बचाने के लिए ग्रीन पटाखे एक नया विकल्प सामने आया है। बताया जा रहा है कि इससे 30 से 40 फीसदी तक प्रदूषण कम होगा। साथ ही इनमें में नुकसानदायक केमिकल नहीं होते हैं। आइए जानते हैं ग्रीन पटाखे क्या होते है

ग्रीन पटाखे प्रदूषण को कम करता है। इन्हें बनाने में किसी प्रकार का एल्यूमिनियम, बेरियम, पोटेशियम-नाइट्रेट और कार्बन का इस्तेमाल नहीं किया जाता है। अगर होते भी है तो मात्रा बहुत कम होती है। इसका सबसे बड़ा फायदा है यह वायु प्रदूषण को कम करने में मदद करता है। यह दिखने में एकदम सामान्य पटाखों की तरह ही होते हैं केमिकल युक्त पटाखों की तरह ही और ग्रीन पटाखों में भी वह सभी वैरायटी उपलब्ध है। कैटेगरी फुलझड़ी, फ्लावर पॉट,स्काई शॉट जैसे पटाखे हैं। उन्हें भी अन्य पटाखों की तरह ही माचिस से जलाया जाता है। यह खुशबू वाले भी आते हैं। लेकिन देखा जाए तो यह पटाखे केमिकल युक्त पटाखों से थोड़े महंगे होंगे। इसमें में केमिकल पटाखे की तरह धुंआ भी निकलेगा लेकिन वह हानिकारक नहीं होगा। केमिकल युक्त पटाखे 250 रूपए तक के पड़ते हैं वहीं ग्रीन पटाखे 400 रूपए तक के पड़ सकते हैं।

पटाखे जलाने से होता ये नुकसान

पटाखे जलाने से ज्यादा आबादी वाले शहरों में वायु प्रदूषण बढ़ जाता है, जो सर्दी के मौसम में एयर क्वालिटी इंडेक्स पहले से ही खराब स्थिति में है.कोरोना वायरस महामारी के बीच पटाखे जलाना और ज्यादा खतरनाक है, क्योंकि प्रदूषण की वजह से इम्यूनिटी कमजोर होती है और लोगों को सांस लेने में दिक्कत का सामना करना पड़ता है.

क्या होते हैं ग्रीन पटाखे

खतरनाक और प्रदूषण फैलाने वाले पटाखों की जगह कई राज्यों ने ग्रीन पटाखे जलाने की अनुमति दी है और लोगों में इसका क्रेज दिखाई दे रहा है.लेकिन क्या आपको पता है कि ग्रीन पटाखे क्या होते हैं और पुराने परंपरागत पटाखों से कैसे अलग होते हैं

नॉर्मल पटाखे से कितने अलग होते हैं ग्रीन पटाखे

ग्रीन पटाखे राष्ट्रीय पर्यावरण अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान (गक्क्टक्र) की खोज हैं और ये आवाज से लेकर दिखने तक में पारंपरिक पटाखों जैसे ही होते हैं, लेकिन इनको जलाने पर प्रदूषण काफी कम होता है और ये सामान्य पटाखों की तुलना में 40 से 50 फीसदी तक कम हानिकारक गैस पैदा करते हैं.हालांकि ऐसा नहीं है कि ग्रीन पटाखों से प्रदूषण बिल्कुल भी नहीं होगा, हालांकि ये सामान्य पटाखों से कम हानिकारक हैं.

ग्रीन पटाखों में नहीं होते हैं हानिकारक रसायन

ग्रीन पटाखों में वायु प्रदूषण को बढ़ावा देने वाले हानिकारक रसायन नहीं होते हैं.इनमें एल्युमिनियम, बैरियम, पौटेशियम नाइट्रेट और कार्बन का प्रयोग नहीं किया जाता है या ग्रीन पटाखों में खतरनाक रसायनों की मात्रा काफी कम होती है.इस वजह से इन पटाखों से प्रदूषण कम होता है.

ग्रीन पटाखों से ध्वनि प्रदूषण भी होता है कम

ग्रीन पटाखों से वायु प्रदुषण के साथ-साथ ध्वनि प्रदूषण भी कम होता है, क्योंकि ये साइज में थोड़े छोटे होते हैं और कम आवाज करते हैं.ग्रीन पटाखों से अधिकतम 110 से 125 डेसिबल ध्वनि प्रदूषण होता है, जबकि नॉर्मल पटाखों से 160 डेसिबल तक होता है.

महंगे होते हैं ग्रीन पटाखे

ग्रीन पटाखों के कीमत की बात करें तो यह परंपरागत पटाखों की तुलना में थोड़े महंगे होते हैं.यदि आपके राज्य में सामान्य पटाखों पर रोक लगी है और ग्रीन पटाखों की इजाजत दी गई है तो आपको सरकार की ओर से रजिस्टर्ड दुकान पर ग्रीन पटाखे खरीद सकते हैं.इसके अलावा आप ग्रीन पटाखे ऑनलाइन भी खरीद सकते हैं.

तकनीक के साथ बदलते पटाखे

तकनीकी विकास पटाखे के निर्माण में भी अपना असर दिखाने लगा है और नई तकनीक के साथ पटाखों की किस्म से लेकर पैकेजिंग तक बहुत कुछ बदल नजर आ रहा है.सीटी बजाते पटाखे आसमान को रंगीन रौशनी से भरते पटाखे या फिर एक ही डिब्बे में कई तरह की आतिशबाजी समेटे पटाखे कुछ वर्ष पहले तक बाजार में नहीं थे.पर अब बाजार में सबसे ज्यादा माँग इन्हीं पटाखों की है.और तो और चीन से इस बार आई पटाखों की नई किस्म भी भारतीय बाजारों में त्योहारों के मद्देनजर हाथोंहाथ बिक रही है

बच्चों में सबसे ज्यादा माँग चीनी माउजर पिस्तौल की है.इस पटाखे छोड़नेवाली पिस्तौल में एक बार में दस गोलियाँ भरी और दागी जा सकती हैं.पटाखों की पैकेजिंग में भी खासा बदलाव आया है इस पिस्तौल की माँग का आलम यह है कि शुरुआत में 45-50 रूपए में मिल रही यह पिस्तौल अब 120 रूपए तक हो गई है.माना जा रहा है कि व्यापारी बढ़ी माँग को देखकर माल रोक रहे हैं और इसी वजह से इसके दामों में इजाफा हो गया है.पर व्यापारी इन पिस्तौलों की कम आपूर्ति के लिए आयातकों को दोष देने से नहीं चूक रहे.ऐसे ही एक व्यापारी किशन कुमार बताते हैं कि सारा मुनाफा तो आयातकों को हो रहा है.थोक या फुटकर विक्रेताओं को तो पूरा माल मिल ही नहीं रहा है और माँग काफी ज्यादा है.

रंगीन आतिशबाजी

पटाखों की किस्म में एक बड़ा बदलाव लोगों के बदलते मिजाज के चलते भी आया है.लोगों को अब आवाज करनेवाले पटाखों की जगह आसमान में ऊपर जाकर रंग बिखेरने वाले पटाखे ज्यादा पसंद आ रहे हैं.इसे देखते हुए तमाम पटाखा निर्माता कंपनियों ने इस बात का खासा ध्यान रखा है और बाजार ऐसे पटाखों से पटा हुआ है. पिछले कुछ वर्षों में काफी फर्क आया है.पहले लोग चकरी और लड़ियाँ ज्यादा पसंद करते थे पर अब ऐरियल यानी हवा में छोड़े जाने वाले पटाखों की ज्यादा माँग है.1875 से इसी कारोबार में लगे विष्णु बताते हैं, ''पिछले कुछ वर्षों में काफी फर्क आया है. पहले लोग चकरी और लड़ियाँ ज्यादा पसंद करते थे पर अब ऐरियल यानी हवा में छोड़े जाने वाले पटाखों की ज्यादा माँग है.'' वो



बताते हैं, ''तकनीकी का ज्यादा असर बनाने पर कम पैकिंग पर ज्यादा हुआ है.पहले पैकेजिंग पर इतना ध्यान नहीं दिया जाता था पर अब इसपर काफी ध्यान दिया जा रहा है. जो रंग भारत में उपलब्ध नहीं हैं, उन्हें हम चीन और बाकी देशों में आयात करते हैं.'' पहले तो कम किस्में थीं पर अब कई तरह के पटाखे मिल रहे हैं और इनमें आसमान में ऊपर जानेवाले पटाखे ज्यादा पसंद आते हैं. फिर विदेशों में जिन पटाखों का मजा लोग लेते थे, अब उन्हें भी हम यहाँ खरीद सकते हैं.''



Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

अयोध्या सील होने से हाईवे पर भीषण जाम, फंसे बृजभूषण शरण ने कहा... घोर अव्यवस्था

गोंडा , एजेंसी। राम नगरी अयोध्या को सील करने के बाद गोंडा-अयोध्या हाईवे पर यातायात व्यवस्था पूरी तरह चरमरा गई है। सड़क पर वाहनों की लंबी कतारें लगने से आम लोगों के साथ वीआईपी भी परेशान हैं। इसी जाम में पूर्व सांसद बृजभूषण शरण सिंह भी फंस गए। उन्होंने यातायात व्यवस्था पर नाराजगी जताकर घोर अव्यवस्था करार दिया और प्रशासन की तैयारियों पर सवाल उठाए। जाम में फंसे बृजभूषण का वीडियो सामने आया है। इसमें वे अपनी सफेद फॉर्च्यूनर गाड़ी में बैठे नजर आ रहे हैं। उन्होंने गाड़ी के अंदर से ही जाम की स्थिति पर प्रतिक्रिया देकर कहा, घोर अव्यवस्था है, किसको जिम्मेदारी दें। उन्होंने बताया कि अयोध्या को सील किए जाने के कारण वाहनों को दूसरे रास्तों से होकर गुजरना पड़ रहा है। इससे गोंडा-अयोध्या मार्ग पर यातायात का दबाव काफी बढ़ गया है। पूर्व सांसद ने कहा कि प्रशासन को अयोध्या में यातायात प्रतिबंध लागू करने से पहले बेहतर इंतजाम करने चाहिए थे। बिना उचित योजना के मार्ग बंद करने का असर आसपास के जिलों पर भी पड़ा है। गोंडा, बलरामपुर और बस्ती की ओर जाने वाले लोगों को घंटों जाम में फंसे रहना पड़ रहा है। इससे स्कूली बच्चों, मरीजों और जरूरी काम से यात्रा करने वाले लोगों को भी परेशानी हो रही है।

फेसबुक लाइव में आकर आदिवासी नेता निशा भगत ने दे दी जान

- प्रशासन और भू-माफिया पर लगाए थे आरोप

रांची, एजेंसी। झारखंड की आदिवासी नेता निशा भगत की आत्महत्या की खबर के बाद उनके आखिरी फेसबुक लाइव में लगाए गए आरोप चर्चा में हैं। बताया गया कि उन्होंने आत्महत्या से पहले फेसबुक पर लाइव आकर सरकार, प्रशासन और जमीन से जुड़े कुछ लोगों पर गंभीर आरोप लगाए थे। मीडिया रिपोर्ट के अनुसार अपने एफबी लाइव में निशा भगत ने दावा किया कि वह लंबे समय से आदिवासी समाज के अधिकारों के लिए संघर्ष कर रही थीं, लेकिन उन्हें अपेक्षित सहयोग नहीं मिला। उन्होंने हेमंत सरकार की कार्यप्रणाली पर भी सवाल उठाए। उनका आरोप था कि समाज के मुद्दों और सरकार की कथित कमियों को उठाने के कारण उन्हें परेशानियों का सामना करना पड़ा। निशा भगत ने जमीन से जुड़े कुछ लोगों पर भी आरोप लगाए और प्रशासन से मदद नहीं मिलने की बात कही। उन्होंने अजय तिर्की का नाम लेते हुए प्रशासन की भूमिका पर सवाल उठाए। लाइव के दौरान उन्होंने पिठोरिया थाना प्रभारी से फोन पर बातचीत भी की और पुलिस की कार्रवाई को लेकर नाराजगी जताई।

बागी विधायकों से मुलाकात कर बोले फारूक अब्दुल्ला- पार्टी कभी नहीं टूटेगी

श्रीनगर, एजेंसी। जम्मू-कश्मीर में नेशनल कॉन्फ्रेंस के भीतर नाराजगी और बगावत की चर्चाओं के बीच पार्टी अध्यक्ष फारूक अब्दुल्ला ने बागी विधायकों से मुलाकात की। बैठक के बाद फारूक अब्दुल्ला ने स्पष्ट किया कि नेशनल कॉन्फ्रेंस में किसी तरह का विभाजन नहीं होगा और पार्टी एकजुट है। फारूक अब्दुल्ला ने कहा कि उन्होंने नाराज विधायकों की शिकायतें सुनी हैं और उनकी समस्याओं पर जल्द काम किया जाएगा। उन्होंने पार्टी में किसी टूट की संभावना से इनकार करते हुए कहा कि सभी नेताओं और विधायकों को साथ लेकर आगे बढ़ा जाएगा। पार्टी के भीतर कुछ विधायकों की नाराजगी और उनके अलग रुख को लेकर पिछले कुछ समय से राजनीतिक चर्चाएं चल रही थीं। ऐसे में फारूक अब्दुल्ला की बैठक को संगठन के भीतर मतभेद दूर करने की कोशिश के तौर पर देखा जा रहा है। बैठक के बाद उनके बयान से पार्टी नेतृत्व ने एकजुटता का संदेश देने की कोशिश की है।

गिरिराज का विरोधी नेताओं पर तीखा हमला... अब राजमाता को वह बीमारी नहीं होती

बिना नाम लिए सोनिया, राहुल, अखिलेश और लालू परिवार पर कसा तंज



नई दिल्ली , एजेंसी। केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने इंडिया ब्लॉक के नेताओं पर तीखा हमला बोलकर बिना किसी का नाम लिए कई विपक्षी नेताओं और उनके परिवारों पर निशाना साधा है। उन्होंने एक्स पर एक पोस्ट के जरिए कांग्रेस, समाजवादी पार्टी और राष्ट्रीय जनता दल के नेताओं पर तीखा कटाक्ष किया। केंद्रीय मंत्री सिंह की यह टिप्पणी तब आई है, जब कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को सार्वजनिक बहस की चुनौती दी है और सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच राजनीतिक बयानबाजी तेज है।

केंद्रीय मंत्री सिंह ने लिखा कि भारतीय लोकतंत्र में अब पहले जैसा मजा नहीं रहा। उन्होंने तंज करते हुए कहा कि अब राजमाता को वह बीमारी नहीं होती, जिसके इलाज के लिए उन्हें मोटे-मोटे बैग लेकर बार-बार विदेश जाना पड़ता था। उन्होंने राजमाता की बेटी की पेंटिंग करोड़ों में नहीं बिकने और जीजाजी का हरियाणा में जमीन का कारोबार बंद होने की बात भी कही। इन टिप्पणियों को कांग्रेस की वरिष्ठ नेता सोनिया गांधी, प्रियंका गांधी वाड्रा और उनके परिवार पर निशाने के रूप में देखा जा रहा है। इतना ही नहीं केंद्रीय मंत्री सिंह ने दक्षिण भारत के एक नेता पर भी कटाक्ष किया। उन्होंने गमलों में करोड़ों की सब्जियां उगाने और उनकी पत्नी की करोड़ों रुपये की पेंटिंग सरकार की ओर से नहीं खरीदे जाने का जिक्र किया। हालांकि, उन्होंने इस नेता की पहचान उजागर नहीं की।

केंद्रीय मंत्री सिंह ने उत्तर प्रदेश की राजनीति का जिक्र कर सैफई महोत्सव पर भी तंज कसा, कि अब सैफई में बालीवुड का नाच गाना नहीं होता है। इस तंज को समाजवादी पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव के परिवार से जोड़कर देखा जा रहा है। इसके अलावा बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव के परिवार पर भी निशाना साधा। उन्होंने चारा घोटाले का संदर्भ देकर लिखा कि अब चारा स्कूटर पर ढोने की नौबत नहीं आती। मुंबई में अंडरवर्ल्ड के पुराने प्रभाव का जिक्र कर भी उन्होंने विपक्ष पर कटाक्ष किया।

अपनी पोस्ट के अंत में केंद्रीय मंत्री सिंह ने कहा कि पहले प्रधानमंत्री की कुर्सी पारिवारिक मुद्दा हुआ करती थी और परिवार में ही फैसला होता था, लेकिन अब इसके लिए काफी मशक्कत करनी पड़ती है। उनकी इस टिप्पणी को विपक्षी दलों के नेतृत्व और परिवारवाद पर भाजपा के राजनीतिक हमले के रूप में देखा जा रहा है।

1.27 करोड़ हिंदुओं के वोट कटने के दावे पर अखिलेश का सवाल, मुख्यमंत्री को कैसे पता चला?



लखनऊ, एजेंसी। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष और पूर्व सीएम अखिलेश यादव ने उत्तर प्रदेश में मतदाता सूची से नाम कटने के मामले पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और भाजपा पर निशाना साधा है। उन्होंने मुख्यमंत्री योगी के उस कथित बयान पर सवाल उठाया, जिसमें दावा हुआ था कि मतदाता सूची से 1 करोड़ 27 लाख हिंदुओं के नाम गायब हो गए हैं। अखिलेश ने पूछा कि मुख्यमंत्री को कैसे पता चला कि मतदाता सूची से हटाए नाम हिंदुओं के ही हैं?

अखिलेश ने कहा कि 30 तारीख को मुख्यमंत्री योगी ने 1.27 करोड़ हिंदुओं के नाम मतदाता सूची से गायब होने की बात कही थी। उनके इस बयान की रिकॉर्डिंग कई समाचार चैनलों के पास उपलब्ध होगी। उन्होंने सवाल किया कि जब मतदाता सूची से नाम हटाए गए हैं, तब उनकी धार्मिक पहचान की जानकारी मुख्यमंत्री को कैसे मिली?

सपा प्रमुख अखिलेश ने आरोप लगाया कि अवैध घुसपैठियों का मुद्दा उठाकर लोगों में डर पैदा किया और उनके मतदान के अधिकार पर सवाल खड़े किए। उन्होंने कहा कि इस शब्द का इस्तेमाल कुछ लोगों को समाज में बदनाम करने के लिए किया गया। अखिलेश के मुताबिक, असली मुद्दा हर नागरिक के मताधिकार की सुरक्षा का है।

उन्होंने विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) प्रक्रिया और मतदाता सूची से नाम हटाने के लिए इस्तेमाल होने वाले फॉर्म-7 को लेकर भाजपा पर गंभीर आरोप लगाए। अखिलेश ने दावा किया कि पीडीए प्रहरियों और समाजवादी पार्टी के कार्यकर्ताओं ने गलत तरीके से वोट कटवाने की कोशिशों को पकड़ा और उन्हें रोका है।

अस्पताल में शरद पवार से मिले प्रफुल्ल पटेल... 10 नवबंर के बाद सुलह की उम्मीद



मुंबई , एजेंसी। महाराष्ट्र की राजनीति में राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) के दोनों गुटों के बीच संभावित एकजुटता को लेकर चर्चाएं फिर तेज हुई हैं। अजित पवार गुट के वरिष्ठ नेता प्रफुल्ल पटेल ने अस्पताल पहुंचकर शरद पवार से मुलाकात की। इस मुलाकात का वीडियो सामने आने के बाद राजनीतिक गलियारों में नए समीकरणों को लेकर अटकलें लगाई जाने लगी हैं। दरअसल, शरद पवार की तबीयत खराब होने के कारण अस्पताल में उनका इलाज चल रहा है। तभी प्रफुल्ल पटेल उनसे मिलने पहुंचे। सामने आए वीडियो में दोनों नेताओं के बीच बातचीत होती दिखाई दे रही है। इस दौरान शरद पवार को प्रफुल्ल से यह कहते सुना गया कि 10 नवंबर के बाद मिलते हैं। उनके इस बयान को राजनीतिक नजरिए से महत्वपूर्ण माना जा रहा है। प्रफुल्ल की मुलाकात ने एनसीपी के दोनों गुटों के बीच दूरियां कम होने की संभावनाओं को लेकर नई चर्चा छेड़ दी है। गौरतलब है कि स्व.अजित पवार के नेतृत्व में पार्टी में विभाजन के बाद शरद और अजित पवार के गुट अलग-अलग राजनीतिक राह पर चल रहे हैं। दोनों खेमों के बीच राजनीतिक प्रतिस्पर्धा भी लगातार देखने को मिली है। इसके बाद अस्पताल में हुई इस मुलाकात और 10 नवंबर के बाद फिर मिलने की बात को संभावित सुलह के संकेत के तौर पर देखा जा रहा है। हालांकि, इस मुलाकात से किसी राजनीतिक समझौते, गठबंधन या पार्टी के विलय की पुष्टि नहीं होती है। दोनों गुटों की ओर से भी एकजुटता को लेकर कोई आधिकारिक बयान जारी नहीं किया गया है। अब राजनीतिक हलकों की नजरें 10 नवंबर के बाद होने वाले घटनाक्रम पर टिकी हैं।

खुली बहस की चुनौती पर राहुल गांधी को मिला शशि थरूर का साथ



लखनऊ , एजेंसी । नई दिल्ली,(ईएमएस)। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी द्वारा सरकार को खुली बहस की चुनौती दिए जाने के बाद अब कांग्रेस सांसद शशि थरूर भी उनके समर्थन में उतर आए हैं। थरूर ने कहा है कि संसद का सत्रावसान अभी नहीं हुआ है, इसलिए संसद की बैठक दोबारा बुलाई जानी चाहिए। यदि सदन की बैठक होती है तो राहुल गांधी की ओर से बहस का दिया गया प्रस्ताव अब भी कायम है। उनके इस बयान के बाद संसद में सरकार और विपक्ष के बीच राजनीतिक टकराव एक बार फिर तेज होने के संकेत मिल रहे हैं।

शशि थरूर ने राहुल गांधी के उस प्रस्ताव का समर्थन किया है, जिसमें उन्होंने सरकार पर लगाए गए आरोपों को लेकर संसद में खुली बहस करने की पेशकश की थी। थरूर का कहना है कि जब संसद का सत्रावसान नहीं हुआ है तो सदन को दोबारा बुलाने में कोई परेशानी नहीं होनी चाहिए। उन्होंने स्पष्ट किया कि राहुल गांधी बहस के लिए तैयार हैं और सरकार को भी इस चुनौती को स्वीकार करना चाहिए।

दरअसल, राहुल गांधी ने सरकार के सामने विभिन्न आरोपों पर खुली चर्चा करने की पेशकश की थी। इस पर केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने प्रतिक्रिया देते हुए कहा था कि संसद पहले से ही बहस और चर्चा के लिए उचित मंच है। उन्होंने राहुल गांधी को लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष के रूप में अपनी जिम्मेदारियों का भी स्मरण कराया था। सरकार का कहना है कि विपक्ष को अपने सवाल और आरोप संसद के भीतर उठाने चाहिए। वहीं, इस राजनीतिक गहमागहमी के बीच कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने कथित वोट चोरी के आरोपों को लेकर सरकार और निर्वाचन आयोग से जवाब मांगा है। कांग्रेस लगातार मतदाता सूचियों के विशेष गहन पुनरीक्षण यानी एसआईआर की प्रक्रिया पर सवाल उठा रही है। पार्टी का आरोप है कि मतदाता सूची में बदलाव और पुनरीक्षण की प्रक्रिया में पारदर्शिता का अभाव है। शशि थरूर ने भी निर्वाचन आयोग की कार्यप्रणाली पर सवाल उठाए हैं। उन्होंने एसआईआर को लेकर प्रक्रियागत अनियमितताओं का आरोप लगाया और कहा कि उच्चतम न्यायालय में हुई सुनवाई से विपक्ष की चिंताओं को समर्थन मिला है। निर्वाचन आयोग द्वारा एसआईआर की घोषणा को फॉर्म-6 से अलग करने के फैसले को उन्होंने आयोग की गंभीर गलतियों में से एक बताया। कांग्रेस का कहना है कि मतदाता सूची से जुड़े सवालों पर निर्वाचन आयोग को स्पष्ट जवाब देना चाहिए। दूसरी ओर, सरकार संसद में चर्चा को ही उचित माध्यम बता रही है। ऐसे में अब निगाहें इस बात पर हैं कि संसद की बैठक दोबारा बुलाने और राहुल गांधी की बहस की चुनौती पर सरकार क्या रुख अपनाती है।

दिल्ली-एनसीआर में गफ्फार मार्केट, मॉल और फैक्ट्री में लगी भीषण आग

नई दिल्ली,एजेंसी। दिल्ली और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) में बीते 24 घंटों के भीतर आग लगने की तीन बड़ी घटनाएं सामने आई हैं। गफ्फार मार्केट की एक दुकान, ग्रेटर नोएडा के एक मॉल का सिनेमा हॉल और नरेला की एक फैक्ट्री इन घटनाओं से प्रभावित हुई हैं। दमकल विभाग ने सभी जगहों पर तत्परता से कार्रवाई की और आग पर काबू पाने का प्रयास किया। दिल्ली के गफ्फार मार्केट की चैन वाली गली में गुरुवार-शुक्रवार की मध्यरात्रि एक दुकान में आग लग गई। दमकलकर्मी आग बुझाने में जुटे हैं। नुकसान और हताहतों की जानकारी अभी प्रतीक्षित है। वहीं ग्रेटर नोएडा के गैलेक्सी ब्लू सफायर मॉल में ऑडी-10 के प्रोजेक्टर रूम में शॉर्ट सर्किट से धुआं उठा। एहतियातन 10-15 लोगों को सुरक्षित बाहर निकाला गया। फायर एक्सटिंग्विशर से आग तुरंत बुझा दी गई, जिसमें कोई जनहानि नहीं हुई। स्थिति सामान्य है। एक अन्य घटना में गुरुवार सुबह बाहरी उत्तरी दिल्ली के नरेला औद्योगिक क्षेत्र की एक फैक्ट्री में भीषण आग लगी।

दिल्ली-एनसीआर में प्रदूषण की सबसे बड़ी वजह गाड़ियों का धुआं, एक्यूआई 400 के करीब



नई दिल्ली , एजेंसी। दिल्ली-एनसीआर में वायु प्रदूषण की बिगड़ती स्थिति पर सुप्रीम कोर्ट ने गंभीर चिंता जाहिर की है। शुक्रवार को मामले की सुनवाई के दौरान शीर्ष अदालत ने कहा कि वाहनों से निकलने वाला धुआं प्रदूषण का प्रमुख कारण है। दिल्ली को गाजियाबाद, गुरुग्राम, फरीदाबाद और ग्रेटर नोएडा से जोड़ने वाली सड़कों पर वाहनों की भारी भीड़ और बंपर-टू-बंपर ट्रैफिक से स्थिति लगातार खराब हो रही है। अदालत ने प्रदूषण पर नियंत्रण के लिए तत्काल, मध्यम और दीर्घकालिक उपाय अपनाने की जरूरत जाहिर की है।

मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत, न्यायमूर्ति जॉयमाल्य बागची और न्यायमूर्ति वी. मोहना की पीठ दिल्ली-एनसीआर में वायु प्रदूषण से जुड़े स्वतः संज्ञान मामले की सुनवाई कर रही थी। सीजेआई ने कहा कि प्रदूषण को लेकर लगातार चर्चा और सुझाव दिए जा रहे हैं, लेकिन इसके बावजूद वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) 400 के करीब पहुंच रहा है। शीर्ष अदालत ने कहा कि दिल्ली और आसपास के शहरों को जोड़ने वाली सड़कों पर वाहनों की संख्या और लगातार लगने वाला जाम बड़ी समस्या बन चुके हैं। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि प्रदूषण का सबसे अधिक असर गरीब और मजदूर वर्ग पर पड़ता है। सड़क किनारे काम करने और रोजी-रोटी कमाने वाले लोगों को जहरीली हवा का सामना करना पड़ता है। त्यौहारों के दौरान उनकी कमाई भी प्रभावित हो सकती है। इसलिए प्रदूषण नियंत्रण के उपाय करते समय उनकी आजीविका का ध्यान रखना जरूरी है। पराली जलाने के मामले में अदालत ने किसानों को जागरूक करने और खेतों में आग लगाने के बजाय कृषि मशीनों के इस्तेमाल के लिए प्रोत्साहित करने पर जोर दिया। सुनवाई में बच्चों को प्रदूषण से बचाने के लिए स्कूल बंद करने और सभी कक्षाओं को हाइब्रिड मोड में संचालित करने की मांग भी उठी। पीठ ने कहा कि इस विषय पर विशेषज्ञों की राय के आधार पर निर्णय लिया जाएगा।

केंद्र की ओर से अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल ऐश्वर्या भाटी ने बताया कि औद्योगिक उत्सर्जन, वाहन प्रदूषण, निर्माण कार्यों की धूल, सड़क की धूल और पराली जलाने सहित पांच प्रमुख क्षेत्रों में नियंत्रण के उपाय किए जा रहे हैं। वाहनों के प्रवेश पर प्रतिबंध, पीयूसी प्रमाणपत्र की जियो-टैगिंग और अधिक धुआं छोड़ने वाले वाहनों के खिलाफ कार्रवाई भी इनमें शामिल है। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अनुसार, शुक्रवार को दिल्ली का औसत एक्यूआई 391 रहा। रोहिणी में यह 475 और आईआईटी दिल्ली में 472 दर्ज किया गया। 59 निगरानी केंद्रों में से 30 पर हवा गंभीर श्रेणी में रही। सुप्रीम कोर्ट ने प्रदूषण नियंत्रण के लिए आदेश पारित करने की बात कही। मामले की अगली सुनवाई 16 नवंबर को होगी।

भारत में विदेशी नागरिकों को बड़ी राहत: पासपोर्ट और वीजा नियमों में ढील

नई दिल्ली, एजेंसी । केंद्र ने भारत में रह रहे विभिन्न श्रेणियों के विदेशी नागरिकों के लिए पासपोर्ट और वीजा संबंधी नियमों में बड़ी छूट दे दी है। इस महत्वपूर्ण फैसले से कुछ पाकिस्तानी नागरिकों, धार्मिक उत्पीड़न के शिकार अल्पसंख्यक शरणार्थियों, श्रीलंकाई तमिलों और तिब्बती नागरिकों को बड़ी राहत मिली है। केंद्रीय गृह मंत्रालय ने इमिग्रेशन एंड फॉरेनर्स (अमेंडमेंट) ऑर्डर, 2026 अधिसूचित कर इन नियमों में संशोधन किया है, इस गजट में प्रकाशित किया है। इसके साथ ही, नेपाली और भूटानी नागरिकों के लिए भी यात्रा और पहचान संबंधी आवश्यकताओं में बदलाव किए गए हैं।

नए नियमों के अनुसार, 31 दिसंबर 2009 या उससे पहले भारत आकर स्थायी रूप से बसने की इच्छा रखने वाले कुछ पाकिस्तानी नागरिकों को अब पासपोर्ट रिन्यू कराने की अनिवार्यता से छूट मिली है। यह विशेष राहत उन लोगों को प्रदान की गई है, जो पाकिस्तान द्वारा जारी कंप्यूटरीकृत राष्ट्रीय पहचान पत्र (सीएनआईसी) न होने के कारण अपना पासपोर्ट रिन्यू नहीं करा पा रहे थे। इसके अतिरिक्त, कुछ मुस्लिम पुरुषों को छूट के दायरे में रखा गया है। ये वे व्यक्ति हैं जो मूल रूप से भारतीय नागरिक थे और 15 अगस्त 1947 से 31 दिसंबर 1965 के बीच विभाजन के बाद पाकिस्तान चले गए थे, लेकिन बाद में 31 दिसंबर 2009 या उससे पहले भारत लौटकर केरल में बसे। हालांकि, इस श्रेणी में छूट पाने के लिए कुछ शर्तें हैं, जैसे संबंधित व्यक्ति ने पाकिस्तान में शादी न की हो, वहां अचल संपत्ति हासिल न की हो, और उसके परिवार के सदस्य भारत के नागरिक हों जबकि पाकिस्तान में कोई परिवार न हो।

केंद्र सरकार ने पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान से धार्मिक उत्पीड़न या उसके डर के कारण भारत आए छह धार्मिक समुदायों हिंदू, सिख, बौद्ध, जैन, पारसी और ईसाई के लोगों को भी बड़ी राहत दी है। ये वे लोग हैं जो 31 दिसंबर 2024 या उससे पहले भारत आए थे। नए आदेश के तहत, उन्हें पासपोर्ट या अन्य वैध यात्रा दस्तावेजों के बिना भारत आने अथवा दस्तावेजों की अवधि समाप्त होने की स्थिति में सामान्य पासपोर्ट और वीजा नियमों से छूट मिलेगी। हालांकि, भारत में आगे रहने के लिए उन्हें उपयुक्त श्रेणी का वीजा प्राप्त करना अनिवार्य होगा।

संशोधित आदेश में भारत में शरण लेने वाले पंजीकृत श्रीलंकाई तमिलों को शामिल किया है। इसतरह श्रीलंकाई तमिल नागरिक, जिन्होंने 9 जनवरी 2015 तक भारत में शरण ली थी और संबंधित अधिकारियों के पास पंजीकृत हैं, उन्हें सामान्य पासपोर्ट और वीजा आवश्यकताओं से छूट दी गई है। इसी प्रकार, काठमांडू स्थित भारतीय दूतावास द्वारा जारी निर्धारित एंट्री परमिट के आधार पर भारत आए और संबंधित अधिकारियों के पास पंजीकरण कराने वाले तिब्बती नागरिकों को भी इस छूट का लाभ मिलेगा।

केंद्रीय गृह मंत्रालय ने भारत, नेपाल और भूटान के नागरिकों के बीच यात्रा से जुड़े पहचान दस्तावेजों के नियमों में भी संशोधन किया है। अब भारतीय नागरिक नेपाल और भूटान की यात्रा के दौरान पासपोर्ट के बजाय सरकार की वीजा मैनुअल में निर्धारित पहचान दस्तावेजों में से कोई एक दिखा सकते है। यही सुविधा नेपाल और भूटान के नागरिकों को भारत में प्रवेश करने या यहां से बाहर जाने पर भी मिलेगी।

यौन उत्पीड़न मामले में पूर्व संपादक को झटका : 10 साल की सजा पर रोक से इंकार

नई दिल्ली , एजेंसी । 13 साल पुराने बहुचर्चित यौन उत्पीड़न मामले में दोषी ठहराए गए एक पूर्व पत्रकार तरुण तेजपाल को सर्वोच्च न्यायालय से बड़ा झटका लगा है। शीर्ष अदालत ने उन्हें सुनाई गई 10 साल के कठोर कारावास की सजा पर रोक लगाने और जमानत देने से जुड़ी याचिका को खारिज किया है। दो जजों की पीठ ने स्पष्ट किया कि वे इस स्तर पर सजा निलंबित करने के पक्ष में नहीं हैं। यह मामला वर्ष 2013 का है, जब गोवा के एक पांच सितारा होटल में आयोजित कार्यक्रम के दौरान एक युवा सहकर्मी ने पूर्व संपादक तरुण तेजपाल पर होटल की लिफ्ट के भीतर यौन हमला करने और पद का दुरुपयोग कर उत्पीड़न करने का आरोप लगाया था। मामले में पुलिस ने जांच के बाद करीब 3000 पन्नों का विस्तृत आरोपपत्र अदालत में दाखिल किया था, जिसमें गलत तरीके से बंधक बनाने, यौन उत्पीड़न और अधिकार के दुरुपयोग से जुड़ी कई गंभीर धाराएं शामिल थीं।

30 हजार करोड़ के स्वदेशी रक्षा सौदे को जल्द मिल सकती है मंजूरी

सुरक्षा मामलों की कैबिनेट समिति की स्वीकृति का इंतजार

नई दिल्ली, एजेंसी । भारत अपनी हवाई सीमाओं की सुरक्षा को और मजबूत बनाने की दिशा में बड़ा कदम उठाने वाला है। केंद्र सरकार करीब 30 हजार करोड़ रुपये की लागत वाली क्विक रिएक्शन सरफेस टू एयर मिसाइल (क्यूआरएसएएम) प्रणाली के सौदे को जल्द मंजूरी दे सकती है। इस महत्वाकांक्षी रक्षा परियोजना को सुरक्षा मामलों की कैबिनेट समिति (सीसीएस) की अंतिम स्वीकृति का इंतजार है। मंजूरी मिलने के बाद सार्वजनिक क्षेत्र की प्रमुख रक्षा कंपनी भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड (बीईएल) को इसका ठेका मिलने की संभावना है।

यह स्वदेशी रक्षा प्रणाली भारतीय सेना की हवाई सुरक्षा क्षमता में महत्वपूर्ण इजाफा करेगी। इसकी खासियत यह है कि यह केवल मिसाइलों की आपूर्ति तक सीमित नहीं होगी, बल्कि इसमें आधुनिक वायु रक्षा से जुड़ा पूरा तंत्र शामिल रहेगा। इसके जरिए सेना दुश्मन के लड़ाकू विमानों, ड्रोन और अन्य हवाई खतरों का तेजी से मुकाबला कर सकेगी। खास तौर पर सेना की गतिशील इकाइयों को चलते-फिरते हवाई हमलों से सुरक्षा प्रदान करने में यह प्रणाली अहम भूमिका निभाएगी।

बदलते वैश्विक सुरक्षा हालात और सीमाओं पर बढ़ती चुनौतियों के बीच परियोजना का महत्व और बढ़ गया है। हाल के अंतरराष्ट्रीय संघर्षों में ड्रोन, निर्देशित हथियारों और आधुनिक लड़ाकू विमानों का इस्तेमाल तेजी से बढ़ा है। ऐसे में भारत के लिए अत्याधुनिक और त्वरित प्रतिक्रिया देने वाली वायु रक्षा प्रणाली विकसित करना जरूरी हो गया है। क्यूआरएसएएम प्रणाली का डिजाइन और विकास देश की प्रमुख रक्षा अनुसंधान संस्था ने भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड के सहयोग से किया है। परियोजना के उत्पादन के लिए आवश्यक बुनियादी ढांचे और तकनीकी संसाधनों की तैयारी भी की जा चुकी है। इस सौदे को मंजूरी मिलने से स्वदेशी रक्षा उद्योग को बड़ा प्रोत्साहन मिलेगा। साथ ही रक्षा कंपनियों के उत्पादन और राजस्व में बढ़ोतरी की उम्मीद है। यह परियोजना आत्मनिर्भर भारत अभियान को मजबूती देने के साथ विदेशी रक्षा उपकरणों पर निर्भरता कम करने में भी मददगार साबित हो सकती है।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

संक्षिप्त समाचार

जर्मन विदेश मंत्री ने अमेरिका-इजरायल हमले को बताया सही, तेहरान बोला- शर्मनाक बयान

तेहरान , एजेंसी। तेहरान ने जर्मन विदेश मंत्री जोहान वाडेफुल के उस बयान पर सख्त ऐतराज जताया है जिसमें उन्होंने ईरान पर अमेरिका-इजरायल की संयुक्त कार्रवाई का बचाव किया था। गुरुवार को ईरानी विदेश मंत्रालय ने इसे 'शर्मनाक और निम्न स्तर का बयान' करार दिया। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पोस्ट के जरिए विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता इस्माइल बाघेई ने उनकी आलोचना की। जर्मन चांसलर फ्रेडरिक मर्ज की पुरानी टिप्पणी याद दिलाई। पोस्ट में लिखा, 'एक समय चांसलर मर्ज ने बड़े उत्साह से कहा था कि इजरायल, ईरान पर हमला करके 'गंदा काम' कर रहा है। लेकिन कुछ ही महीनों बाद, वही चांसलर अब इस बात पर अफसोस जता रहे हैं कि इस युद्ध की वजह से यूरोपीय अर्थव्यवस्था को 100 अरब यूरो का नुकसान हो रहा है! बाघेई ने आगे लिखा, 'अब उनके विदेश मंत्री भी ईरान पर हुए सैन्य हमले को सही ठहराने के लिए मजबूर महसूस कर रहे हैं। बाघेई ने आगे कहा कि वे इतनी उदासीनता और गहरे नैतिक पतन का शिकार हैं कि न तो उन्हें इंसानी जानों के नुकसान और युद्ध अपराधों का एहसास है, और न ही वे उस आर्थिक नुकसान को समझ पा रहे हैं जो यह युद्ध उनके अपने देश और पूरे यूरोप को पहुंचा रहा है।' बाघेई ने एक जर्मन कहावत के जरिए अपनी बात पर विराम लगाया। उन्होंने कहा, 'नुकसान उठाने से इंसान समझदार बनता है।' लेकिन ऐसा लगता है कि 'हंस गुक-इन-दी-लुफ्ट' (लापरवाह व्यक्ति) को कुछ भी सिखाया नहीं जा सकता।

अमेरिका के मियामी में हेलीकॉप्टर दुर्घटनाग्रस्त, एक की मौत और दो गंभीर रूप से घायल

मियामी , एजेंसी। अमेरिका के मियामी के पास बुधवार को एक हेलिकॉप्टर बिस्केन खाड़ी में दुर्घटनाग्रस्त हो गया। हादसे में एक व्यक्ति की मौत हो गई, जबकि दो अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। मियामी-डेड काउंटी शेरिफ कार्यालय के मुताबिक, हेलिकॉप्टर दोपहर से कुछ समय पहले की बिस्केन के पास बिल बैग्स स्टेट पार्क के नजदीक दुर्घटनाग्रस्त हुआ। अमेरिकी तटरक्षक बल ने पुष्टि की कि हेलिकॉप्टर में सवार तीन लोगों में से एक की मौत हो गई, जबकि अन्य दो को स्थानीय ट्रॉमा सेंटर में भर्ती कराया गया है। राष्ट्रीय परिवहन सुरक्षा बोर्डके अनुसार, शुरुआती जानकारी से पता चलता है कि रॉबिन्सन आर44 II हेलिकॉप्टर संभवतः फोटोग्राफी के लिए उड़ान पर था। हादसे के बाद तटरक्षक बल के अलावा कई स्थानीय एजेंसियों के दमकलकर्मियों ने भी बचाव अभियान चलाया। अधिकारियों ने हेलिकॉप्टर में सवार लोगों की पहचान तत्काल सार्वजनिक नहीं की।

अमेरिकी मध्यावधि चुनाव: नतीजों के बाद ईरान में जश्न, तेहरान में ट्रंप-नेतन्याहू के खिलाफ प्रदर्शन; पोस्टर जलाए

वाशिंगटन , एजेंसी। अमेरिका में मध्यावधि चुनाव (मिडटर्म इलेक्शन) में राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की रिपब्लिकन पार्टी को लगे बड़े झटके के बाद ईरान में भी इसका असर देखने को मिला। राजधानी तेहरान में लोगों ने ट्रंप, अमेरिकी उपराष्ट्रपति जेडी वेंस और इस्राइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू के पोस्टर जलाकर अपना विरोध जताया। ईरान में सरकार समर्थकों और कट्टरपंथी समूहों ने अमेरिकी और इस्राइली नेताओं की तस्वीरें जलाकर ट्रंप प्रशासन के खिलाफ नाराजगी जाहिर की। प्रदर्शनकारियों के बीच अमेरिकी चुनाव में रिपब्लिकन पार्टी के कमजोर प्रदर्शन को लेकर उत्साह नजर आया। ईरान युद्ध और महंगाई बनी ट्रंप की परेशानी? अमेरिकी चुनाव में रिपब्लिकन पार्टी को हुए नुकसान के पीछे ईरान से जुड़ा सैन्य तनाव और बढ़ती महंगाई भी अहम मुद्दे रहे। चुनाव के दौरान पेट्रोल और रोजमर्रा की जरूरी चीजों की बढ़ती कीमतों को लेकर मतदाताओं में नाराजगी थी। विपक्षी डेमोक्रेट्स ने इन मुद्दों को जोर-शोर से उठाया, जिसका उन्हें चुनाव में फायदा मिला। ईरान से जुड़े संघर्ष को लेकर अमेरिकी मतदाताओं की चिंता भी ट्रंप प्रशासन के लिए चुनौती बनी। चुनावी नतीजों ने साफ कर दिया कि विदेश नीति और घरेलू अर्थव्यवस्था के मुद्दे अमेरिकी राजनीति में किस तरह असर डाल सकते हैं। चुनाव में हार के बावजूद राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने ईरान के खिलाफ सैन्य कार्रवाई के अपने फैसले का बचाव किया है। उन्होंने माना कि ईरान युद्ध के कारण पेट्रोल की कीमतों में बढ़ोतरी हुई, जिससे अमेरिकी नागरिकों पर महंगाई का दबाव बढ़ा। डेमोक्रेट्स की ओर से महाभियोग लाए जाने की संभावना पर भी ट्रंप ने तीखी प्रतिक्रिया दी।

अमेरिका में इतिहास रचने को तैयार जेफ्रीज: पहले अश्वेत स्पीकर बनने की रेस में शामिल, ट्रंप टैरिफ पर किया बड़ा वादा

वाशिंगटन , एजेंसी। अमेरिकी प्रतिनिधि सभा (हाउस ऑफ रिप्रेजेंटेटिव्स) में डेमोक्रेटिक पार्टी के नेता हकीम जेफ्रीज ने औपचारिक रूप से अगले स्पीकर के लिए अपनी दावेदारी पेश कर दी है। डेमोक्रेट्स के कांग्रेस पर नियंत्रण हासिल करने के एक दिन बाद उन्होंने यह कदम उठाया है। इसके साथ ही उन्होंने राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के लगाए टैरिफ को खत्म करने और प्रशासन पर अंकुश रखने का वादा किया है। अगर चुने जाते हैं, तो न्यूयॉर्क के यह डेमोक्रेट अमेरिकी इतिहास में पहले अश्वेत स्पीकर होंगे। जेफ्रीज ने आने वाली 120वीं कांग्रेस के सदस्यों को एक 'डियर कलीग' (प्रिय सहयोगी) पत्र लिखा, जिसे बुधवार (स्थानीय समय) को उनके कार्यालय द्वारा जारी किया गया। इसमें उन्होंने 'हाउस ऑफ रिप्रेजेंटेटिव्स' (प्रतिनिधि सभा) के अगले स्पीकर के रूप में अपनी उम्मीदवारी के लिए विनम्रतापूर्वक समर्थन मांगा है।

उन्होंने पत्र के अंत में 'यूनाइटेड स्टेट्स हाउस ऑफ रिप्रेजेंटेटिव्स के 57वें स्पीकर के रूप में सेवा करने' के लिए उनका समर्थन मांगा। उन्होंने लिखा, 'हमें अब वह बड़ा बदलाव लाना होगा जिसकी अमेरिकी जनता भारी संख्या में मांग कर रही है। '

डेमोक्रेट नेता ने कहा कि वह अपनी पार्टी से तीन अहम मुद्दों पर



निर्णायक कदम उठाने का आह्वान करेंगे। पहला मुद्दा आम लोगों की रोजमर्रा की महंगाई और बढ़ते खर्च से राहत दिलाना, दूसरा- जवाबदेही, यानी सत्ता में बैठे लोगों से उनके फैसलों का हिसाब लेना और तीसरा अमेरिकी मूल्यों की रक्षा है। उनके मुताबिक ये सब देश की पहचान के लिए जरूरी मानते हैं। जेफ्रीज का कहना है कि डेमोक्रेट्स को इन्हीं तीन मोर्चों पर फोकस करके जनता का भरोसा जीतना होगा। व्यापार के मुद्दे पर, उन्होंने बढ़ती लागत के लिए 'ट्रंप के टैरिफ और ईरान में युद्ध जैसी जीओपी (रिपब्लिकन पार्टी) की हानिकारक नीतियों' को जिम्मेदार ठहराया। उन्होंने लिखा, 'पहले 100 दिनों के दौरान, हाउस डेमोक्रेट्स को मेडिकेड में की गई कटौती को पलटने, स्नैप फंडिंग को बहाल करने, 'अफोर्डेबल केयर एक्ट' के तहत टैक्स क्रेडिट बढ़ाने, ट्रंप के टैरिफ को खत्म करने और ईरान में बिना सोचे-समझे छेड़े गए युद्ध को रोकने के लिए कदम उठाने होंगे। निगरानी के मुद्दे पर उन्होंने कहा, 'अब वे दिन लद गए हैं जब 'हाउस' (प्रतिनिधि सभा) ट्रंप प्रशासन की एक पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक इकाई की तरह काम करता था। कांग्रेस अब नियंत्रण से बाहर हो चुकी कार्यकारी शाखा पर एक 'चेक एंड बैलेंस' (नियंत्रण और संतुलन) के रूप में अपनी भूमिका निभाएगी।

आप्रवासन के बारे में जेफ्रीज ने कहा कि हाउस डेमोक्रेट्स ने 'डोनाल्ड ट्रंप की लोगों को बड़े पैमाने पर और जबरन देश से बाहर निकालने की मशीन के लिए करदाताओं का पैसा देने से इनकार कर दिया है, क्योंकि हमारा मानना ??है कि आप्रवासन कानूनों का पालन निष्पक्ष, न्यायपूर्ण और मानवीय तरीके से होना चाहिए। उन्होंने पार्टी के मूल्यों में 'अप्रवासियों के देश के रूप में हमारी विरासत' को भी शामिल किया। बुधवार देर रात, जेफ्रीज ने एक्स पोस्ट में कहा, 'हाउस डेमोक्रेट्स कम से कम 255 सीटें जीतने की राह पर हैं।' इस पत्र में भारत, एच-1बी वीजा या कानूनी आप्रवासन का कहीं भी नाम नहीं लिया गया है। भारत के लिए, टैरिफ (शुल्क) से जुड़ा वादा सबसे सीधा और महत्वपूर्ण मुद्दा है। डेमोक्रेटिक हाउस के पास सदन की समितियों का नियंत्रण होगा और वह सुनवाई और कानून के माध्यम से प्रशासन के व्यापार उपायों की जांच कर सकता है, जिनमें भारतीय निर्यात को प्रभावित करने वाले उपाय भी शामिल हैं। हालांकि, टैरिफ कम करने वाले किसी भी विधेयक को सीनेट से पारित होना होगा और ट्रंप के वीटो का सामना करना पड़ेगा। इसके अलावा, डेमोक्रेटिक नियंत्रण से यह तय होगा कि आव्रजन संबंधी कौन से विधेयक सदन में पहुंचेंगे। भारतीय नागरिक एच-1बी कार्यक्रम के सबसे बड़े उपयोगकर्ता हैं और रोजगार आधारित ग्रीन कार्ड के लंबित मामलों में उनका बड़ा हिस्सा है, इसलिए उच्च-कुशल आव्रजन विधेयकों पर समिति अध्यक्षों के निर्णयों पर भारतीय अमेरिकी समुदाय की कड़ी नजर रहेगी। मंगलवार को छठी बार चुनाव जीतने वाले डेमोक्रेट रो खन्ना की सह-अध्यक्षता वाली 'इंडिया एंड इंडियन अमेरिकन कांग्रेसनल कॉकस 2022' के बाद पहली बार बहुमत वाले डेमोक्रेटिक सदन में काम करेगी।

जेफ्रीज की उम्मीदवारी ऐसे समय में आई है जब रिपब्लिकन एकजुट हो रहे हैं। स्पीकर माइक जॉनसन ने अपने कर्मचारियों को बताया कि वह नई कांग्रेस में अल्पसंख्यक नेता पद के लिए चुनाव नहीं लड़ेंगे। स्टीव स्केलिस और न्यायपालिका समिति के अध्यक्ष जिम जॉर्डन दोनों ने अपने सहयोगियों से कहा है कि वे यह पद चाहते हैं।

चुनावी हार के बाद ट्रंप कर सकते हैं बड़ा फेरबदल: रुबियो की जगह लेंगे सर्जियो गोर? अमेरिकी मीडिया में बड़ा दावा

वॉशिंगटन , एजेंसी। अमेरिका में मिडटर्म चुनाव में रिपब्लिकन पार्टी को मिली हार के बाद राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के प्रशासन में बड़े बदलावों की अटकलें तेज हो गई हैं। इस बीच भारत में अमेरिका के राजदूत सर्जियो गोर को बड़ी जिम्मेदारी मिलने की चर्चा है। द वॉशिंगटन सन की रिपोर्ट के मुताबिक, ट्रंप के करीबी गोर को सरकार में किसी वरिष्ठ पद पर नियुक्त किया जा सकता है। रिपोर्ट में 10 लोगों के हवाले से बताया गया है कि गोर मिडटर्म चुनाव के बाद अपनी भूमिका को और बड़ा करने की तैयारी कर रहे हैं। वह पहले व्हाइट हाउस में वरिष्ठ सहयोगी के तौर पर काम कर चुके हैं और राष्ट्रपति ट्रंप के करीबी माने जाते हैं।

चीफ ऑफ स्टाफ से लेकर विदेश मंत्री पद तक बदले जाने की चर्चा : रिपोर्ट के अनुसार, राष्ट्रपति के करीबी लोगों के बीच गोर का नाम दूसरे कार्यकाल के शेष समय में किसी वरिष्ठ प्रशासनिक पद के लिए चर्चा में है। विदेश विभाग के अधिकारियों के बीच भी यह खबरें चल रही हैं कि गोर अधिक महत्वपूर्ण जिम्मेदारी हासिल करना चाहते हैं। मामले से जुड़े एक अमेरिकी अधिकारी ने द वॉशिंगटन सन से कहा, 'वह ऐसी भूमिका चाहते हैं, जिसमें उनकी सार्वजनिक मौजूदगी ज्यादा हो। रिपोर्ट में कहा गया है कि गोर का नाम व्हाइट हाउस चीफ ऑफ स्टाफ और विदेश मंत्री मार्को रुबियो के उत्तराधिकारी के तौर पर भी सामने आया है। इसके अलावा, वह विदेश विभाग में उप विदेश मंत्री क्रिस लैंडौ की जगह लेने जैसे दूसरे वरिष्ठ पदों पर भी विचार कर सकते हैं।

गोर ने अटकलों को बताया बकवास : हालांकि, सर्जियो गोर और अमेरिकी प्रशासन के प्रतिनिधियों ने इन खबरों को खारिज किया है। गोर ने द वॉशिंगटन सन को दिए बयान में कहा, यह खबर पूरी तरह और बिल्कुल बकवास है।

उन्होंने विदेश मंत्री मार्को रुबियो की तारीफ करते हुए कहा, 'सेक्रेटरी मार्को रुबियो ने साबित किया है कि वह इतिहास के सबसे योग्य, उपलब्धियां हासिल करने वाले और महान विदेश मंत्री हैं। उनकी जगह कोई नहीं ले सकता। वह मेरे प्रिय मित्र हैं और भारत में अमेरिकी राजदूत के रूप में हर दिन उनके साथ काम करना मेरे लिए खुशी की बात है। यह जीवन का एक सच्चा सम्मान है। मुझे किसी दूसरी भूमिका में कोई दिलचस्पी नहीं है। वहीं, व्हाइट हाउस के एक अधिकारी ने भी इस रिपोर्ट को मनगढ़ंत बताते हुए कहा कि गोर की किसी दूसरे पद में रुचि नहीं है।

विदेश मंत्री जयशंकर ने गुयाना के राष्ट्रपति से मुलाकात की; 500 मिलियन डॉलर क्रेडिट लाइन विस्तार का ऐलान

सेंट जॉन्स (एंटीगुआ और बारबुडा) , एजेंसी। विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने 'कॉमनवेल्थ हेड्स ऑफ गवर्नमेंट मीटिंग' (सीएचओजीएम) 2026 के दौरान गुयाना के राष्ट्रपति इरफान अली से मुलाकात की। इस मौके पर दोनों देशों ने दक्षिण अमेरिकी देश के सार्वजनिक और रक्षा बुनियादी ढांचे के लिए 500 मिलियन डॉलर की 'लाइन ऑफ क्रेडिट' (ऋण सुविधा) को बढ़ाने की घोषणा की। विदेश मंत्री जयशंकर ने एक्स पर कहा, 'गुयाना के राष्ट्रपति डॉ. इरफान अली से मिलकर खुशी हुई।

2024 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की यात्रा के बाद हमने अपने द्विपक्षीय सहयोग में हुई निरंतर प्रगति की समीक्षा की। हमने सड़क, स्वास्थ्य और रक्षा परियोजनाओं के लिए 500 मिलियन अमेरिकी डॉलर की 'लाइन ऑफ क्रेडिट' (ऋण सुविधा) बढ़ाने की घोषणा की है।' उन्होंने आगे कहा, 'हमने एमएसई (सूक्ष्म और लघु उद्यम) विनिर्माण परियोजनाओं की आपूर्ति और स्थापना, 'क्विक इम्पैक्ट प्रोजेक्ट्स' (त्वरित प्रभाव वाली परियोजनाओं) को लागू करने के लिए अनुदान सहायता, और डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर तथा गुयाना में यूपीआई जैसी प्रणाली के संचालन में सहयोग के लिए समझौतों पर हस्ताक्षर किए हैं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नवंबर 2024 में गुयाना की एक ऐतिहासिक राजकीय यात्रा की थी - जो 56 वर्षों में किसी भारतीय प्रधानमंत्री की इस देश की पहली यात्रा थी। इस दौरान उन्हें गुयाना के सर्वोच्च राष्ट्रीय सम्मान 'ऑर्डर ऑफ एक्सीलेंस' से नवाजा गया था। मई 1966 में गुयाना की स्वतंत्रता के बाद से ही, भारत और गुयाना के बीच संबंध काफी करीबी और सौहार्दपूर्ण रहे हैं, जिनमें आपसी समझ का स्तर बहुत ऊंचा है। पिछले महीने, गुयाना में भारत के उच्चायुक्त चिन्मय नाइक ने जॉर्जटाउन में आयोजित एक आधिकारिक समारोह में राष्ट्रपति इरफान अली को अपना परिचय पत्र (क्रेडेंशियल्स) सौंपा। इस मुलाकात के दौरान, दोनों पक्षों ने भारत और गुयाना के बीच बहुआयामी संबंधों को और मजबूत करने पर जोर दिया।

ट्रंप का दावा, व्हाइट हाउस का नया बॉलरूम मिसाइल और ड्रोन हमलों से भी रहेगा सुरक्षित

वाशिंगटन , एजेंसी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने व्हाइट हाउस में बन रहे नए बॉलरूम को बेहद सुरक्षित और आधुनिक सुविधाओं से लैस बताया है। उन्होंने दावा किया कि यह ड्रोन, गोलियों और मिसाइलों के हमलों को भी झेलने में सक्षम होगा। ट्रंप के मुताबिक, निर्माण कार्य तय समय से आगे चल रहा है और निर्धारित बजट से कम खर्च में पूरा हो रहा है। बुधवार को निर्माण स्थल पर पहुंचे ट्रंप ने अंतिम स्टील बीम लगाए जाने के मौके पर कहा कि यह इमारत केवल समारोहों और रात्रिभोज के आयोजन तक सीमित नहीं होगी, बल्कि दुनिया के शीर्ष नेताओं की सुरक्षा को ध्यान में रखकर तैयार की जा रही है। ट्रंप ने कहा, 'यह ड्रोन प्रूफ, मिसाइल प्रूफ और बुलेटप्रूफ है।' उन्होंने दावा किया कि इसकी छत, दीवारें और खिड़कियां इस तरह बनाई जा



रही हैं कि किसी भी संभावित हमले का सामना कर सकें। अमेरिकी राष्ट्रपति के अनुसार, नए बॉलरूम में एक समय में 2,000 से 2,500 मेहमानों के लिए रात्रिभोज आयोजित किया जा सकेगा। यहां चीन और रूस समेत विभिन्न देशों के राष्ट्राध्यक्षों और दूसरे शीर्ष नेताओं की मेजबानी भी की जा सकेगी। उन्होंने इसे वाशिंगटन का सबसे सुरक्षित स्थान बताते हुए कहा, 'इसकी मजबूत छत इतनी मजबूत होगी कि उस पर हेलीकॉप्टर भी उतारे जा सकेंगे।' ट्रंप ने इमारत के भूमिगत हिस्से में किए जा रहे निर्माण कार्य का भी जिक्र किया। उन्होंने बताया कि परियोजना का विस्तार जमीन के पांच स्तर नीचे तक है। उनके मुताबिक, सेना ने इस निर्माण के दौरान उन सुविधाओं को भी शामिल करने का अवसर हासिल किया है, जिन्हें वह दशकों से चाहती थी।उन्होंने कहा, 'हमने वह सब कुछ किया, जो सेना चाहती थी।' हालांकि, उन्होंने भूमिगत सुविधाओं और सुरक्षा व्यवस्था से जुड़ी विस्तृत जानकारी साझा नहीं की। ट्रंप ने यह भी बताया कि बॉलरूम की छत को ड्रोन पोर्ट के रूप में विकसित किया जा रहा है, जहां 100 से अधिक ड्रोन रखे जा सकेंगे। उन्होंने इमारत के स्टील ढांचे को असाधारण रूप से मजबूत बताते हुए कहा कि इसकी छत का उद्देश्य केवल बारिश से बचाव करना नहीं है। उनके अनुसार, बॉलरूम की छत 50 फुट से अधिक ऊंची होगी, जो लगभग पांच मंजिला इमारत के बराबर है। इमारत के बाहरी हिस्से में ऊंचे कोरिंथियन शैली के चूना पत्थर के स्तंभ लगाए जा रहे हैं, जबकि अंदर संगमरमर का फर्श और बड़े आकार के शीशे लगाए जाएंगे।

ईरान संघर्ष और अमेरिकी सैन्य अभियानों पर पेंटागन की जवाबदेही तय करने की मांग

वाशिंगटन , एजेंसी। अमेरिका में डेमोक्रेटिक पार्टी के वरिष्ठ सांसद एडम स्मिथ ने ईरान संघर्ष, लैटिन अमेरिका में अमेरिकी सैन्य अभियानों और निजी कंपनियों को दिए जा रहे रक्षा ठेकों को लेकर पेंटागन की कड़ी निगरानी की मांग की है। अमेरिकी प्रतिनिधि सभा की सशस्त्र सेवा समिति में डेमोक्रेटिक पार्टी के शीर्ष सदस्य स्मिथ ने 120वीं कांग्रेस के लिए अपनी पार्टी की निगरानी संबंधी प्राथमिकताएं सामने रखीं। उन्होंने कहा, ' अगली कांग्रेस में रक्षा विभाग और राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप प्रशासन की जवाबदेही सुनिश्चित करना मेरी प्राथमिकता होगी।' स्मिथ ने पेंटागन के वरिष्ठ अधिकारियों की सार्वजनिक गवाही बढ़ाने और समिति में निगरानी एवं जांच के लिए समर्पित उपसमिति को फिर से बहाल करने का प्रस्ताव रखा है। ईरान के साथ जारी संघर्ष को



अपनी प्राथमिकताओं में शामिल करते हुए उन्होंने इसे 'अवैध युद्ध' करार दिया। हालांकि, यह उनकी राजनीतिक और कानूनी राय है। उन्होंने अपने बयान में इसके समर्थन में कोई विस्तृत कानूनी विश्लेषण पेश नहीं किया। स्मिथ ने कहा, ' सरकार की ओर से निजी कंपनियों को दिए जाने वाले ठेकों और वित्तीय सहायता की भी जांच होनी चाहिए, ताकि सरकारी धन के इस्तेमाल में संभावित अनियमितताओं, धोखाधड़ी और दुरुपयोग का पता लगाया जा सके।' उन्होंने कहा, 'कैरेबियाई क्षेत्र और लैटिन अमेरिका में कथित तौर पर अनधिकृत सैन्य हमलों, अमेरिकी शहरों में सैन्य तैनाती और सशस्त्र बलों के राजनीतिकरण जैसे मुद्दे भी निगरानी के दायरे में होने चाहिए। ' रक्षा बजट पर अपनी राय रखते हुए स्मिथ ने कहा, 'राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए एक ट्रिलियन डॉलर से अधिक के रक्षा बजट की जरूरत नहीं होनी चाहिए।' उन्होंने घरेलू कार्यक्रमों में भारी कटौती किए बिना रक्षा संसाधनों के बेहतर इस्तेमाल की वकालत की। उनका कहना था कि नए हथियारों और सैन्य प्रणालियों में निवेश करते समय हालिया संघर्षों से मिले सबक को ध्यान में रखना चाहिए। साथ ही ऐसी क्षमताओं के विकास पर जोर होना चाहिए, जो कम लागत में प्रभावी साबित हों। उन्होंने सैन्य खरीद प्रक्रिया में सुधार के लिए द्विदलीय प्रयास जारी रखने का भी समर्थन किया। स्मिथ ने अमेरिकी सैनिकों, रक्षा विभाग के नागरिक कर्मचारियों और उनके परिवारों के हितों का मुद्दा भी उठाया। उन्होंने कहा कि बेहतर सुविधाएं और जीवन स्तर सुनिश्चित करना जरूरी है, ताकि सेना में प्रतिभाशाली लोगों की भर्ती और उन्हें बनाए रखने में मदद मिले। उन्होंने आरोप लगाया कि ट्रंप प्रशासन में सैन्य और नागरिक पदों पर नियुक्तियों के दौरान योग्यता के बजाय राजनीतिक निष्ठा को महत्व दिया जा रहा है। हालांकि, स्मिथ ने अपनी घोषणा में किसी विशेष रक्षा ठेके, कंपनी या हथियार कार्यक्रम का नाम नहीं लिया। न ही उन्होंने किसी औपचारिक जांच की शुरुआत या सुनवाई का कार्यक्रम घोषित किया है।

बांग्लादेश: वेतन बढ़ाने की मांग पर कपड़ा मजदूरों का उग्र प्रदर्शन, पुलिस से झड़प के बाद 100+ फैक्ट्रियां बंद



ढाका , एजेंसी। बांग्लादेश में न्यूनतम वेतन बढ़ाने की मांग को लेकर कपड़ा उद्योग के मजदूरों का विरोध प्रदर्शन तेज हो गया है। बुधवार को राजधानी ढाका और आसपास के औद्योगिक इलाकों में प्रदर्शनकारियों और पुलिस के बीच झड़प हुई। हालात संभालने के लिए पुलिस ने आंसू गैस के गोले छोड़े और स्टन ग्रेनेड का इस्तेमाल किया। कई दिनों से जारी आंदोलन के कारण देश की सैकड़ों गारमेंट फैक्ट्रियों में कामकाज ठप हो गया है। मजदूरों की मांग है कि उनका न्यूनतम मासिक वेतन मौजूदा 12,500 टका से बढ़ाकर 30,000 टका किया जाए। उनका कहना है कि महंगाई और रोजमर्रा की जरूरतों की बढ़ती कीमतों ने उनकी आर्थिक स्थिति पर दबाव बढ़ा दिया है। लगातार विरोध के चलते बांग्लादेश के प्रमुख कपड़ा औद्योगिक क्षेत्रों में उत्पादन प्रभावित हो रहा है।

30 हजार टका न्यूनतम वेतन की मांग पर अड़े मजदूर : बांग्लादेश के गारमेंट उद्योग में करीब 40 लाख लोग काम करते हैं। इनमें ज्यादातर महिलाएं हैं, जो ग्रामीण इलाकों से आकर फैक्ट्रियों में रोजगार करती हैं। मजदूरों का कहना है कि मौजूदा 12,500 टका का न्यूनतम मासिक वेतन बढ़ती महंगाई के बीच पर्याप्त नहीं है। इसलिए वे इसे बढ़ाकर 30,000 टका करने की मांग कर रहे हैं। उनके मुताबिक, खाने-पीने की चीजों, आवास और अन्य जरूरी सामानों की कीमतें लगातार बढ़ रही हैं। ऐसे में मौजूदा वेतन से परिवार का खर्च चलाना मुश्किल हो रहा है। कई दिनों से राजधानी ढाका में प्रदर्शन कर रहे मजदूरों का आंदोलन बुधवार को आसपास के औद्योगिक क्षेत्रों तक फैल गया। नारायणगंज जिले के फतुल्लाह इलाके में प्रदर्शनकारियों और पुलिस के बीच झड़प हुई। मीडिया रिपोर्टों के मुताबिक, इस दौरान कई दर्जन लोग घायल हुए। पुलिस ने भीड़ को तितर-बितर करने के लिए आंसू गैस और स्टन ग्रेनेड का इस्तेमाल किया। बांग्लादेश के प्रमुख अखबार प्रोथोम आलो के अनुसार, पुलिस ने फतुल्लाह में कई प्रदर्शनकारियों को गिरफ्तार भी किया। वहीं, गाजीपुर जिले में मजदूरों ने एक प्रमुख राजमार्ग को जाम कर दिया। इससे यातायात पर भी असर पड़ा। मजदूर आंदोलन का असर बांग्लादेश के कपड़ा उद्योग पर साफ दिखाई दे रहा है। ढाका के पास सावर क्षेत्र के अशुलिया में करीब 100 फैक्ट्रियां बंद रहीं। अशुलिया इंडस्ट्रियल पुलिस के अधीक्षक मोमिनुल इस्लाम भुइयां ने बताया कि इलाके में लगभग 100 कारखानों का कामकाज बंद है।

मिडटर्म की हार 'करीब-करीब तबाही' जैसा, एच-1बी वीजा नहीं रोका तो जनता ने दिया सबक: फ्लोरिडा गवर्नर

वाशिंगटन , एजेंसी। फ्लोरिडा के गवर्नर रॉन डेसेंटिस ने एच-1बी वीजा कार्यक्रम पर लगाम लगाने में नाकाम रहने के लिए सीनेट रिपब्लिकन्स की आलोचना की। एच-1बी वीजा के जरिए ही भारतीय टेक्नोलॉजी पेशेवर अमेरिका में काम करते हैं। डेसेंटिस ने मध्यावधि चुनावों में हार का आंशिक कारण अपने मतदाताओं का वोट के लिए घर से न निकलने को भी बताया। फॉक्स न्यूज की होस्ट लॉरा इंग्राहम ने पूछा कि सीनेट 'फिलीबस्टर' (कानून पास होने में रुकावट डालने की प्रक्रिया) को खत्म न करना कितनी बड़ी गलती थी, तो डेसेंटिस ने कहा कि उन्हें 'ऐसा कोई संकेत नहीं दिखा कि रिपब्लिकन सीनेटरों का मौजूदा समूह इस तरह का कोई रूढ़िवादी बदलाव करने में दिलचस्पी रखता हो।' उन्होंने इंग्राहम से कहा, 'मेरा मतलब है, हमने आव्रजन (इमिग्रेशन) के मुद्दे पर काम क्यों नहीं किया, एच-1बी वीजा क्यों बंद नहीं किए? हमने ट्रंप के आव्रजन संबंधी कार्यकारी आदेशों को कानून के रूप में क्यों नहीं लागू किया?' उन्होंने यह भी पूछा कि रिपब्लिकनों ने 'निर्वासन (डिपोर्टेशन) के मामलों से संघीय अदालतों का अधिकार क्षेत्र क्यों नहीं छीना।

डेसेंटिस ने कहा, 'ऐसी बहुत सी चीजें थीं जो की जा सकती थीं, लेकिन उन्होंने कोशिश तक



नहीं की।' उन्होंने कहा कि मध्यावधि चुनाव (मिडटर्म) के नतीजे 'डेमोक्रेट्स, निर्दलीय लोगों और कुछ ऐसे रिपब्लिकनों की तरफ से राष्ट्रपति और कांग्रेस को एक कड़ा संदेश (फटकार) थे, जिन्होंने पाला बदल लिया था।' उन्होंने आगे कहा, 'हमारे बहुत से मतदाता जो घर पर ही रहे, वे इसलिए नहीं निकले क्योंकि वे हाउस और सीनेट में रिपब्लिकन्स के काम न कर पाने (प्रोडक्टिविटी की कमी) से निराश थे।

उन्होंने कहा, 'इसलिए, यह वास्तव में पेंसिल्वेनिया एवेन्यू (अमेरिकी सत्ता केंद्र) के दोनों पक्षों की समस्या है। यह सिर्फ एक पक्ष की बात नहीं है।' बुधवार को फ्लोरिडा में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में, डेसेंटिस ने मंगलवार के नतीजों को 'देश के कई हिस्सों में रिपब्लिकनों के लिए लगभग अस्तित्व खत्म होने जैसी घटना (करीब-करीब तबाही)' बताया, 'जैसा कि हमने शायद पिछले 100 सालों में नहीं देखा था।' उन्होंने कहा, 'यह डेमोक्रेट्स के प्रति कोई सकारात्मक नजरिया नहीं था। यह वाशिंगटन में रिपब्लिकनों को खारिज करना था, और डेमोक्रेट्स को बस इसका फायदा मिल गया।

उन्होंने कहा कि टेक्सास में - जो लंबे समय से 'रिपब्लिकन राजनीति का सबसे अहम गढ़' रहा है - रिपब्लिकन एक 'बहुत चर्चित अमेरिकी सीनेट चुनाव' हार गए, और साथ ही 'गवर्नर, अटॉर्नी जनरल और राज्य स्तर के अन्य सभी पदों' पर भी हार गए। उन्होंने कहा, 'अगर रिपब्लिकन पार्टी के पास टेक्सास जैसा मजबूत आधार नहीं है, तो भविष्य में राष्ट्रीय स्तर पर हमारा टिके रहना मुश्किल होगा।' फॉक्स न्यूज की रिपोर्ट के अनुसार, मंगलवार को रिपब्लिकन्स ने हाउस और सीनेट दोनों पर अपना नियंत्रण खो दिया, जबकि रिपब्लिकन बायरन डोनाल्ड्स ने डेसेंटिस की जगह लेने के लिए चुनाव जीत लिया। डेसेंटिस, जो जनवरी में अपना पद छोड़ रहे हैं और जिन्होंने 2028 में राष्ट्रपति चुनाव लड़ने की संभावना से इनकार नहीं किया है, ने एच-1बी वीजा को लगातार अपने निशाने पर रखा है। फॉक्स 49 की रिपोर्ट के अनुसार, 14 सितंबर को लेकलैंड के पास एक कार्यक्रम में उन्होंने कहा: 'सच कहूं तो, मुझे लगता है कि हमें अमेरिका में एच-1बी वीजा को खत्म कर देना चाहिए।

स्वामी,मुद्रक व् प्रकाशकः सुरेश मौर्या द्वारा अष्ठ विनायक ओफ़्सेट एफपी,149 प्लोट 26 खोडीयारनगर,सिद्धिविनायक मंदीर के पास ,भाटेना) हो.सो अंजना सुरत गुजरात से मुद्रित एवं 191 महादेव नगर उधना सुरत गुजरात से प्रकाशित संपादक : सुरेश मौया (M) 9879141480 RNI No.:GUJHIN/2018/75100 (Subject to Surat jurisdiction)

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1



पावली अथवा दिवाली भारत के प्रमुख त्योहारों में से एक है। त्योहारों का जो वातावरण धनतेरस से प्रारम्भ होता है, वह आज के दिन पूरे चरम पर आता है। दीपावली की रात्रि को घरों तथा दुकानों पर भारी संख्या में दीपक, मोमबत्तियां और बल्ब जलाए जाते हैं। दीपावली भारत के त्योहारों में अपना विशिष्ट स्थान रखती है। इस दिन लक्ष्मी के पूजन का विशेष विधान है। रात्रि के समय प्रत्येक घर में धनधान्य की अधिष्ठात्री देवी महालक्ष्मीजी, विघ्न-विनाशक गणेश जी और विद्या एवं कला की देवी मातेश्वरी सरस्वती देवी की पूजा-आराधना की जाती है। ब्रह्मपुराण के अनुसार कार्तिक अमावस्या की इस अंधेरी रात्रि अर्थात अर्धरात्रि में महालक्ष्मी स्वयं भूलोक में आती हैं और प्रत्येक सद्गृहस्थ के घर में विचरण करती हैं। जो घर हर प्रकार से स्वच्छ, शुद्ध और सुंदर तरीक़े से सुसज्जित और प्रकाशयुक्त होता है वहां अंश रूप में ठहर जाती हैं। इसलिए इस दिन घर-बाहर को खूब साफ-सुथरा करके सजाया-संवारा जाता है। दीपावली मनाने से लक्ष्मीजी प्रसन्न होकर स्थायी रूप से सद्गृहस्थों के घर निवास करती हैं।

अपने जीवन को आध्यात्मिक प्रकाश से प्रकाशित करने का पर्व है दीपावली!

दीपावली शब्द 'दीप' एवं 'आवली' की संधि से बना है। 'आवली' का शाब्दिक अर्थ है पंक्ति। इस प्रकार 'दीपावली' का शाब्दिक अर्थ है 'दीपों की पंक्ति'। भारत वर्ष में मनाए जाने वाले सभी त्यौहारों में दीपावली का सामाजिक और धार्मिक दोनों दृष्टि से अत्यधिक महत्त्व है। अंधकार पर प्रकाश की विजय का यह पर्व सभी धर्म के लोगों द्वारा मनाया जाता है। हिन्दू मान्यता के अनुसार दीपावली के दिन अयोध्या के राजा श्री रामचंद्र अपने चौदह वर्ष के वनवास के पश्चात लौटे थे। अपने परम प्रिय राजा के स्वागत में अयोध्यावासियों ने घी के दीए जलाए थे। तब से लेकर आज तक यह प्रकाश-पर्व भारत वर्ष में बड़े ही हर्ष व उल्लास के साथ मनाया जाता है। भारतीयों का विश्वास है कि सत्य की सदा जीत होती है। दीपावली यही चरितार्थ करती है- असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय। इस प्रकार दीपावली अंधेरे से प्रकाश की ओर जाने का पर्व है। इस प्रकार आज भी प्रत्येक वर्ष दीपावली के दिन एक दीपक से दूसरा जलाया जाता है और इन दीपों से निकलने वाली यह लौ (प्रकाश) सदियों से सारे संसार को शांति व भाइचारे का संदेश देती आ रही है।

बुराई पर अच्छाई की जीत का पर्व

कृष्ण भक्तिधारा के लोगों का मत है कि इस दिन भगवान श्री कृष्ण ने अत्याचारी राजा नरकासुर का वध किया था। इस नृशंस राक्षस के वध से जनता में अपार हर्ष फैल गया और प्रसन्नता से भरे लोगों ने घी के दीए जलाए। एक पौराणिक कथा के अनुसार विष्णु ने नरसिंह रुप धारण कर हिरण्यकश्यप का वध किया था तथा इसी दिन समुद्र मंथन के पश्चात लक्ष्मी व धन्वंतरि प्रकट हुए। जैन मतावलंबियों के अनुसार चौबीसवें तीर्थंकर महावीर स्वामी का निर्वाण दिवस भी दीपावली को ही है। सिक्खों के लिए भी दीवाली महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इसी दिन ही अमृतसर में 1577 में स्वर्ण मन्दिर का शिलान्यास हुआ था और इसके अलावा 1619 में दीवाली के दिन सिक्खों के छठे गुरु हरगोबिन्द सिंह जी को जेल से रिहा किया गया था।

ज्ञान, विवेक एवं मित्रता की लौ जलाने का पर्व है दीपावली

दक्षिण में दीवाली उत्सव के सम्बन्ध में एक और कथा प्रचलित है। हिंदू पुराणों के अनुसार राजा बली एक दयालु दैत्यराज था। वह इतना शक्तिशाली था कि वह स्वर्ग के देवताओं व उनके राज्य के लिए खतरा बन गया। बली की ताकत को खत्म करने के लिए ही भगवान विष्णु एक बौने भिक्षुक ब्राह्मण के रूप में चतुराई से राजा बली से तीन पग के बराबर भूमि मांगी। राजा बली ने खुशी के साथ यह दान दे दिया। राजा बली को कपट से फंसाने के बाद जब भगवान विष्णु ने स्वयं को प्रभु के स्वरूप में पूर्ण वैभव के साथ प्रकट करते हुए अपने पहले पग (पैर) से 'स्वर्ग' व दूसरे पग से 'पृथ्वी' को नाप लिया तब राजा बली को वास्तविकता का ज्ञान हुआ और उन्होंने आत्म समर्पण करते हुए अपना शीश अर्पित करते हुए भगवान विष्णु को अपना तीसरा पग उस पर रखने के लिए आमंत्रित किया। भगवान विष्णु ने अपने अगले पग से उसे अधोलोक में धकेल दिया लेकिन इसके बदले में भगवान विष्णु ने राजा बली को समाज से अंधकार को दूर करने के लिए उसे ज्ञान का दीपक प्रदान किया। उन्होंने उसे यह आशीर्वाद भी दिया कि वह वर्ष में एक बार अपनी जनता के पास अपने एक दीपक से लाखों दीपक जलाने के लिए आएगा ताकि दीपावली की अंधेरी रात से अज्ञान, लोभ, ईर्ष्या, कामना, क्रोध, अहंकार और आलस्य के अंधकार को दूर करते हुए सभी में ज्ञान, विवेक और मित्रता की लौ जलाई जा सके।

दीपदान का लोकपर्व दीवाली

दीवाली भारतीय संस्कृति का सबसे महत्वपूर्ण पावन पर्व हैं। हर गाँव नगर और प्रांतों में हर जाति एवं धर्म के लोग इस पर्व को मनाते हैं। दीवाली को त्योहार का रूप देने में भारतीय संस्कृति के लोक-व्यवहारों का प्रमुख योग रहा हैं। घरों की सफ़ाई दीवाली के कई दिन पूर्व से की जाती है। गाँवों और क़स्बों में आज भी लोग-बाग स्वयं अपने घरों की सफ़ाई दीवाली से हफ़्तों पहले प्रारंभ करते हैं। घरों की लिपाई और पुताई का प्रचलन आज भी दृष्टिगत होता है। गाँवों में जहाँ कच्चे मकान मिट्टी के बने होते हैं, वहाँ गोबर की लिपाई दीवारों, छतों और फ़र्श पर की जाती हैं। शहरों में जहाँ मकान पक्के बने होते हैं वहाँ मकानों पर कलई, सफ़ेदी की पुताई अथवा रंगों की सजावट की जाती हैं। चूना भी कीटनाशक पदार्थ हैं। दीवारों और छतों पर चूने की पुताई करके हम अपने घर के वातावरण को स्वच्छ और शुद्ध बनाते हैं। घरों की सफ़ाई में ही निहित हैं और अपने गाँव और शहर की सफ़ाई और नगर की स्वच्छता में ही छिपा हुआ हैं, वहाँ के निवासियों का स्वास्थ्य। इस प्रकार दीवाली के अवसर पर की जाने वाली घरों की सफ़ाई में हमारे नगर प्रांत और देश की स्वच्छता और हमारे स्वास्थ्य की भावना प्रवाहित होती है। इतना ही नहीं एक दूसरे के मकानों की सफ़ाई में हम लोग आपस में सहयोग करते हैं। समाज के कल्याण और दूसरों की भलाई करने के लिए यह सहयोग व्यापक रूप ग्रहण कर लेता हैं, जिसमें हमारी यह भावना अंतर्निहित रहती हैं कि हम दूसरों के स्वास्थ्य और साफ़ रहने की कामना करते हैं।

दीवाली के अवसर पर घरों में चौक पूरे जाते हैं। दरवाज़ों पर रंगोली रचाई जाती हैं और आँगन में अल्पना सजाई जाती हैं। घर के मुख्य द्वार पर शुभ लाभ लिखना अथवा गणेश और लक्ष्मी की मूर्ति बनाने की प्रथा आज भी दृष्टिगत होती है। कहीं-कहीं तो घर के मुख्य दरवाज़े पर दोनों ओर रंग-बिरंगे हाथी बनाए जाने की प्रथा भी हैं। हाथी लक्ष्मी का सहचर हैं और गणेश बुद्धि तथा सफलता के देव हैं। दीवाली से ही व्यापारी लोग अपना नया साल शुरू करते हैं। शुरू करने को ही श्री गणेश भी कहा जाता है। अत- लक्ष्मी गणेश और हाथी के चित्र हमारे पारिवारिक और सामाजिक जीवन में आने वाले वर्ष के लिए सुख, समृद्धि और सफलता की कामना के प्रतीक हैं। शुभ गणेश का प्रतीक हैं और लाभ लक्ष्मी का। इसलिए दीवाली के दिन लक्ष्मी के साथ-साथ गणेश की भी पूजा होती हैं। लक्ष्मी सामाजिक समृद्धि का आधार स्तंभ हैं, जिसकी कामना ग़रीब और अमीर सभी करते हैं। लेकिन केवल समृद्धि ही सब कुछ नहीं हैं। लक्ष्मी (धन) के सदुपयोग के लिए बुद्धि और विवेक की आवश्यकता होती हैं। बुद्धि और विवेक के अभाव में धन का दुरुपयोग होने से हमारा नैतिक पतन अवश्यंभावी हैं। अत- आज के इस पावन पर्व दीवाली के अवसर पर हम लक्ष्मी और गणेश दोनों की पूजा करके सदाचार, विवेकशील और समृद्धिशाली होने की अपनी मनोकामना व्यक्त करते हैं।

गोवर्धन पूजा का महत्व और कैसे करे पूजा

कार्तिक मास की शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को गोवर्धन उत्सव मनाया जाता है। इस दिन बलि पूजा, अन्न कूट, मार्गपाली आदि उत्सव भी सम्पन्न होते है। अन्नकूट या गोवर्धन पूजा भगवान कृष्ण के अवतार के बाद द्वापर युग से प्रारम्भ हुई।



दिवाली की अगली सुबह गोवर्धन पूजा की जाती है। लोग इसे अन्नकूट के नाम से भी जानते हैं। गोवर्धन पूजा में गोधन यानी गायों की पूजा की जाती है। गाय को देवी लक्ष्मी का स्वरूप भी कहा गया है। देवी लक्ष्मी जिस प्रकार सुख समृद्धि प्रदान करती हैं उसी प्रकार गौ माता भी अपने दूध से स्वास्थ्य रूपी धन प्रदान करती हैं। गौ के प्रति श्रद्धा प्रकट करने के लिए ही कार्तिक शुक्ल पक्ष प्रतिपदा के दिन गोर्वधन की पूजा की जाती है और इसके प्रतीक के रूप में गाय की पूजा की जाती है।

गोवर्धन पूजन विधि

दीपावली के बाद कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा पर उत्तर भारत में मनाया जाने वाला गोवर्धन पर्व मनाया जाता है। इसमें हिंदू धर्मावलंबी घर के आंगन में गाय के गोबर से गोवर्धननाथ जी की अल्पना (तस्वीर या प्रतिमूर्ति) बनाकर उनका पूजन करते है। इसके बाद ब्रज के साक्षात देवता माने जाने वाले गिरिराज भगवान को प्रसन्न करने के लिए उन्हें अन्नकूट का भोग लगाया जाता है। गाय बैल आदि पशुओं को स्नान कराकर फूल माला, धूप, चन्दन आदि से उनका पूजन किया जाता है। गायों को मिठाई खिलाकर उनकी आरती उतारी जाती है तथा प्रदक्षिणा की जाती है। गोबर से गोवर्धन पर्वत बनाकर जल, मौली, रोली, चावल, फूल दही तथा तेल का दीपक जलाकर पूजा करते है तथा परिक्रमा करते हैं। कार्तिक शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को भगवान के निमित्त भोग व नैवेद्य में नित्य के नियमित पदाथरें के अतिरिक्त यथा सामर्थ्य अन्न से बने कच्चे-पक्के भोग, फल, फूल; अनेक प्रकार के पदार्थ जिन्हें छप्पन भोग कहते हैं। छप्पन भोग बनाकर भगवान को अर्पण करने का विधान भागवत में बताया गया है और फिर सभी सामग्री अपने परिवार, मित्रों को वितरण कर के प्रसाद ग्रहण करें।

झ

गोवर्धन पूजा की परंपरा द्वापर युग से चली आ रही है। उससे पूर्व ब्रज में इंद्र की पूजा की जाती थी। मगर भगवान कृष्ण ने गोकुल वासियों को तर्क दिया कि इंद्र से हमें कोई लाभ नहीं प्राप्त होता। वर्षा करना उनका कार्य है और वह सिर्फ अपना कार्य करते हैं जबकि गोवर्धन पर्वत गौ-धन का संवर्धन एवं संरक्षण करता है, जिससे पर्यावरण भी शुद्ध होता है। इसलिए इंद्र की नहीं गोवर्धन की पूजा की जानी चाहिए। इसके बाद इंद्र ने ब्रजवासियों को भारी वर्षा से डराने का प्रयास किया, पर श्रीकृष्ण ने गोवर्धन पर्वत को अपनी अंगुली पर उठाकर सभी गोकुलवासियों को उनके कोप से बचा लिया। इसके बाद से ही इंद्र भगवान की जगह गोवर्धन पर्वत की पूजा करने का विधान शुरू हो गया है। यह परंपरा आज भी जारी है। सब ब्रजवासी सात दिन तक गोवर्धन पर्वत की शरण मे रहें।



सुदर्शन चक्र के प्रभाव से ब्रजवासियों पर एक जल की बूँद भी नही पड़ी। ब्रह्मा जी ने इन्द्र को बताया कि पृथ्वी पर श्री कृष्ण ने जन्म ले लिया है, उनसे तुम्हारा वैर लेना उचित नही है। श्रीकृष्ण अवतार की बात जानकर इन्द्रदेव अपनी मुर्खता पर बहुत लज्जित हुए तथा भगवान श्रीकृष्ण से क्षमा याचना की।

श्रीकृष्ण ने सातवें दिन गोवर्धन पर्वत को नीचे रखकर ब्रजवासियो से आज्ञा दी कि अब से प्रतिवर्ष गोवर्धन पूजा कर अन्नकूट का पर्व उल्लास के साथ मनाओ।

पूजा का महत्व

माना जाता है कि भगवान कृष्ण का इंद्र के मान-मर्दन के पीछे उद्देश्य था कि ब्रजवासी गौ-धन एवं पर्यावरण के महत्व को समझें और उनकी रक्षा करें। आज भी हमारे जीवन में गायों का विशेष महत्व है। आज भी गायों के द्वारा दिया जाने वाला दूध हमारे जीवन में बेहद अहम स्थान रखता है। यूं तो आज गोवर्धन ब्रज की छोटी पहाड़ी है, किन्तु इसे गिरिराज (अर्थात पर्वतों का राजा) कहा जाता है। इसे यह महत्व या ऐसी संज्ञा इस लिये प्राप्त है क्यूंकि यह भगवान कृष्ण के समय का एक मात्र स्थाई व स्थिर अवशेष है। उस समय की यमुना नदी जहाँ समय-समय पर अपनी धारा बदलती रही है, वहां गोवर्धन अपने मूल स्थान पर ही अविचलित रुप में विधमान है। इसे भगवान कृष्ण का स्वरुप और उनका प्रतिक भी माना जाता है और इसी रुप में इसकी पूजा भी की जाती है। बल्लभ सम्प्रदाय के उपास्य देव श्रीनाथ जी का प्राकट्य स्थल होने के कारण इसकी महत्ता और बढ़ जाती है। गर्ग संहिता में इसके महत्व का कथन करते हुए कहा गया है - गोवर्धन पर्वतों का राजा और हरि का प्यारा है। इसके समान पृथ्वी और स्वर्ग में कोई दूसरा तीर्थ नहीं है। यद्यपि वर्तमान काल में इसका आकार-प्रकार और प्राकृतिक सौंदर्य पूर्व की अपेक्षा क्षीण हो गया है, फिर भी इसका महत्व कदापि कम नहीं हुआ है।

खतरनाक पटाखों को जलाकर प्रदूषण फैलाने का पर्व नहीं है दीपावली

दीन-ए-इलाही के प्रवर्तक मुगल सम्राट अकबर के शासनकाल में दौलतखाने के सामने 40 गज ऊँचे बाँस पर एक बड़ा आकाशदीप दीपावली के दिन लटकाया जाता था। बादशाह जहाँगीर भी दीपावली धूमधाम से मनाते थे। मुगल वंश के अंतिम सम्राट बहादुर शाह जफर दीपावली को त्योहार के रूप में मनाते थे और इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रमों में वे भाग लेते थे। शाह आलम द्वितीय के समय में समूचे शाही महल को दीपों से सजाया जाता था एवं लालकिले में आयोजित कार्यक्रमों में हिन्दू-मुसलमान दोनों मिलकर भाग लेते थे। इस प्रकार दीपावली प्रकाश का यह पर्व समाज से अंधकार को समाप्त कर उल्लास, भाईचारे व प्रेम का संदेश फैलाने की प्रेरणा देता है न कि खतरनाक पटाखों को जलाकर प्रदूषण फैलाने का। दीवाली का त्योहार का मतलब पटाखा जलाना नहीं होता है। दीवाली वाले दिन पटाखों के कारण कितने दमें के मरीज खाँसते-खाँसते परेशान हो जाते हैं? कितने ही घरों में आग लग जाती है और कितने लोगों की मृत्यु पटाखों के कारण हो जाती है।



भाई-बहन के अटूट प्यार का प्रतीक भाईदूज



दीपावली के तीसरे दिन भारत में हिन्दुमतावलम्बियों द्वारा भाई दूज का त्यौहार मनाने की परम्परा प्रचलन में है7 मुझे याद है कि 1980 तक मेरे गॉवों में केवल उच्चजातीय परिवारों के अलावा भाई दूज के त्यौहार का अन्य छोटी जाति के लोग कोई विशेष मतलब नहीं समझते थे। जैसे ही टीवी का घरों में आगमन हुआ, टीवी ने आर्यन, ब्राह्मण, एवं शहरी संस्कृति और बाजारवादी अपसंस्कृति को हर जगह पर पहुँचा दिया।

राखी तो पहले से ही भाई के लम्बे जीवन की कामना के लिये भाई की कलाई पर बॉधी जाती रही है। राखी बॉधने वाली बहिन भाई के माथे पर टीका भी लगाती है और अपने भाई के लिये मंगल कामना भी करती है। भाई दूज को भी यही सब दौहराया जाता। इसमें किसी को कोई आपत्ति भी नहीं होनी चाहिये, क्योंकि मंगल कामनाएँ तो जितनी अधिक की जायें। आशीर्वाद जितना अधिक मिल सके, उतना ही सुखद है। यदि भाईयों को राखी तथा भाई दूज जेसे त्यौहारों के बहाने अपनी बहिनों की ओर से स्नेह, आशीर्वाद और मंगलकामनाएँ मिलती हैं तो यह एक खुशी और सौभाग्य की बात है, लेकिन सवाल यह है कि आखिर केवल भाईयों को ही ऐसी मंगल कामनाएँ क्यों? क्या भाई के रूप में पुरुष आज भी इतना असुरक्षित है कि उसके जीवन के लिये बहिनों को साल में दो-दो बार औपचारिक रूप से मंगल कामनाएँ ज्ञापित करनी पड़ रही है। जो पुरुष विवाहित हैं, उनके लम्बे जीवन के लिये प्रतिदिन उनकी जीवनसंगनी भगवान से कामना करती है। पत्नियों की ओर से रखे जाने वाले अनेक व्रत अपने पतियों की रक्षा एवं लम्बी आयु के लिये निर्धारित हैं। जिनमें से करवा चौथ का व्रत तो सर्वाधिक प्रचलित है। यह व्रत भी आज से 30-40 वर्ष पूर्व गॉवों में केवल उच्च जातीय लोगों तक ही सीमित था। आजादी के बाद और टीवी की कृपा से आज उच्च जातीय सभी संस्कार और दिखावे निचली समझी जाने वाली सभी जातियों के लिये स्वाभिमान के सूचक, लेकिन साथ ही साथ आर्थिक बोझ भी बनते जा रहे हैं। हॉ तो सवाल भाई दूज का? आखिर भाईयों पर ऐसी कौनसी मुसीबत आन पड़ी है, जिसके चलते बहिनों को साल में दो बार उनकी मंगल कामना करनी पड़ती है? जबकि बहनें रोजाना दहेज की बेदी पर चढाई जा रही हैं। पैदा होने से पूर्व ही उन्हें नवकत्लखाने अर्थात् नर्सिंगहोम कुचल रहे हैं। पशुवृत्ति का पुरुष सदैव की भांति आज भी नारी के मान-सम्मान और उसकी जिन्दगी को खिलौना मानकर खेलता रहता है। तकरीबन देश के सभी हिस्सों में स्त्री को अभी भी दोयम दर्जे की कमजोर और बुद्धिहीन नागरिक माना जाता है। इस सबके उपरान्त भी पति, पिता या भाई के रूप में पुरुष की रक्षा और उसकी श्रेष्ठता, उसकी लम्बी आयु आदि के लिये अनेकानेक प्रावधान हैं, लेकिन कन्या, पुत्री, पत्नी और माता के स्वाभिमान, जीवन और उसके स्वस्थ तथा लम्बे जीवन के लिये एक भी प्रावधान नहीं? आज जबकि कन्या भ्रूण हत्या जैसा कुकृत्य परोक्ष रूप से सामाजिक मान्यता प्राप्त कर चुका है, ऐसे में गर्भवति माताओं के गर्व में पल रही कन्याओं की रक्षा के लिये क्या कोई दिन भाई दूज की भॉति निर्धारित नहीं किया जा सकता? क्या मनुस्मृति और अन्य ब्राह्मणग्रंथों में लिखे या बाद में जोड़े गये धार्मिक अनुष्ठान, व्रत और अन्य प्रावधान ही श्रेष्ठ और सर्वस्वीकार्य होने चाहिये? समाज को वर्तमान की जरूरतों और आने वाले भविष्य की मुसीबतों के आसन्न संकट से बचाव के लिये नये प्रावधान रचने या बनाने पर विचार नहीं करना चाहिये? हमें अपनी बहिनों को अभी भी अबूझ ही बने रहने देना चाहिये, या उनके जीवन की रक्षा के लिये भी कुछ किया जाना चाहिये? यह यक्ष प्रश्न आज के दौर (21वीं सदी) के भाईयों के सामने खड़ा है!